संरक्षक एवं प्राचार्य

प्रो. सुशीलचंद्र तिवारी

व्यंजना

महाविद्यालयीन वार्षिक पत्रिका 2014-15

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी
महाविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) बैंगलोर द्वारा मूल्यांकित 'ए' ग्रेड की अधिमान्यता प्राप्त संस्था

संपादक मंडल

डॉ. श्रद्धा चंद्राकर
हिन्दी विभाग

डॉ. कमर तलत
अंग्रेजी विभाग

डॉ. सुचित्रा गुप्ता
अंग्रेजी विभाग

डॉ. जयप्रकाश
हिन्दी विभाग

डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव
भूगर्भशास्त्र विभाग

डॉ.वेदवती मंडावी
राजनीतिशास्त्र विभाग

डॉ. मर्सी जार्ज
अंग्रेजी विभाग

यू.जी.सी., नई दिल्ली की 'कॉलेज विथ पोटेंशियल फॉर एक्सीलेंस' योजना के तृतीय चरण के अन्तर्गत अनुदान प्राप्त करने हेतु चयनित छत्तीसगढ़ का प्रथम एवं एक मात्र महाविद्यालय, केन्द्र शासन के विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी विभाग की प्रतिष्ठित FIST योजना में शामिल महाविद्यालय का रसायन शास्त्र विभाग, छत्तीसगढ़ शासन द्वारा विज्ञान संकाय हेतु घोषित 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस'

Website: www.govtsciencecollegedurg.ac.in

Email- pprinci2010@gmail.com

अनुक्रम

स्वाधीनता-सेनानी श्री विश्वनाथ यादव तामस्कर 7
प्राचार्य की मेज़ से 8
सच्चादकीय : उच्च शिक्षा की नई दिशाएँ 9
जनरल थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी : डॉ. अंजली अवधिया.....11
Einstein's Theory of Relativity (Deepika Chandrakar)
भीष्म साहनी : नसीब रुद्दीन, राजिन्दर सिंह बेदी : हरिलाल साहू, इस्मत चुगताई : पूजा देशमुख, कवि प्रदीप : नसीब रूद्दीन 16-19
Author of the Century : Saul Bellow, Arthur Miller, Khushwant Singh, ...20-22
First world War Poetry : Tarlochan Kaur 23
साक्षात्कार : फिल्म सदगति की कलाकार ऋचा ठाकुर के साथ बातचीत 25
हमारा दुर्ग : एक नजर में : प्रीतम साहू.....28
विचार आलेख
भारतीयता पर हावी होता संप्रदायवाद : धर्मेन्द्र वर्मा.....30
वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गुरु-शिष्य संबंध : मनीराम कश्यप 31
उपासना और उपवास : अनिल कुमार गुप्ता 32
भाग्य कुंडली और मेडिकल कुंडली : भोजराज आदित्य 33
युवा और समस्याएँ : अभिषेक सिंह.....34
लक्ष्य : शिवम परगनिहा.....35
बुढ़ापे के प्याले : कु. रूखमणि वर्मा.....36
तब और अब : प्रतिभा श्रीवास्तव.....37
Story of Mobile Phone (Sujata).....38
Importace of English Language (Priyanka).....39
Power of Good Thinking (Premlata Sahu).....40
A Noble woman : Mother Teresa (ku. Anshdha).....41
तुम आशा विश्वास हमारे : डॉ. अनुपमा कश्यप 42
परिचर्चा : शिक्षण प्रक्रिया में भाषा की समस्या : डॉ. ज्योति धारकर 45-55
डॉ. सुशील चंद्र तिवारी, प्राचार्य, डॉ. अंजली अवधिया, डॉ. अनुपमा कश्यप, डॉ. श्रीनिवास देशमुख, डॉ. प्रज्ञा कुलकर्णी
डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय, डॉ. वेदवती मंडावी, डॉ. सुनीता मैथ्यू, डॉ. एम.ए. सिद्दीकी, डॉ. तरलोचन कौर, डॉ. शाहीन गनी
परिचर्चा : छत्तीसगढ़ के युवा वर्ग का पिछड़ापन : मिथक अथवा यथार्थ : संयोजक साजन परिहार 56-62
देवलाल आर्य, कु. आस्था वैष्णव, निर्मल ठाकुर, भागवत मंडावी, कु. इमला घावड़े, कु. खुमेश्वरी कुसरे
कविताएं 63
गँवार - ध्रुवदास, पेशावर के आर्मी स्कूल में 132 बच्चों की मौत - अंजली साहू, जज्बा - देवेन्द्र कुमार, माँ तेरे कर्ज का हक -नसीबरूद्दीन,
मेरी एक सहेली - बिंदेश्वरी सोनवानी, जय होय छत्तीसगढ़ - खुशबू पटेल, बेरोजगार - उदित नारायण सोनी,
राजनीति और भ्रष्टाचार - कु. सविता साहू, गुहार - सूर्यकांत साहू, हमारा बचपन - थानूराम पटेल, मौसम के रंग - भोज कुमार मानकर, चाँद को
छूने के लिए - ट्विंकल बंसोड़, बेटी की गाथा - कु. निशा, भैया, बहन मैं तुम्हारी - अक्षय कुमार, बेटियॉ - मनीष साहू,
माँ - कु. रेखा ध्रुव, बिखरी पड़ी जिन्दगी - कु. मनीषा पिस्दा, मैं एक चिंगारी हूँ, जो देती नयी सबक - विद्याचंद्रमणी पहीत,
बोलो वंदे मातरम - अंकिता पटेल, प्रकृति की पुकार - राहुल कुमावत, स्कूल की वो खिड़की - राहुल कुमावत,
छत्तीसगढ़ी कविताएं – 75
कलियुग अमागे - गजेन्द्र कुमार गरक, सुरता के मोटरा - हसीना देशमुख, छत्तीसगढ़ के किसान - घेवरचंद पारकर, चिन्हारी मोर गँवागे - हरिराम पारकर
उपलब्धियों के सोपान पार करता हमारा महाविद्यालय - डॉ. प्रशान्त श्रीवास्तव 78

आवरण चित्र : *डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय*

आवरण चित्र के बारे में : *विष्णु मस्तक (पुरातात्विक संग्रहालय भोपाल से प्राप्त, 11 वीं सदी का कल्चुरी कालीन प्रतिमा खण्ड) की प्रतिकृति । इस प्रतिकृति का निर्माण महाविद्यालय के इतिहास विभाग द्वारा फरवरी 2015 में आयोजित प्रतिकृति निर्माण कार्यशाला में प्रतिभागियों द्वारा किया गया ।*

आवरण अभिकल्पन *: डॉ. जय प्रकाश*

प्रकाशक *: प्राचार्य, शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)*

बलराम दास टंडन
राज्यपाल छत्तीसगढ़

सत्यमेव जयते

राजभवन
रायपुर - 492001
छत्तीसगढ़
भारत
फोन : +91-771-2331100
+91-771-2331105
फैक्स : +91-771-2331108

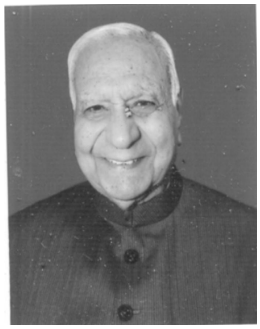

क्र./558/पीआरओ/रास/15
रायपुर, दिनांक 8 अप्रैल, 2015

संदेश

प्रसन्नता की बात है कि दुर्ग स्थित शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग द्वारा महाविद्यालयीन पत्रिका 'व्यंजना' का प्रकाशन किया जा रहा है ।

महाविद्यालयीन पत्रिकाएँ, विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतिभा को निखारने का एक उत्तम अवसर प्रदान करती हैं । मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करने की दिशा में सहायक सिद्ध होगी ।

हार्दिक शुभकामनाएं ।

(बलरामजी दास टंडन)

प्रेम प्रकाश पाण्डेय
मंत्री
राजस्व एवं आपदा प्रबंधन, पुनर्वास,
उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं
जनशक्ति नियोजन, विज्ञान एवं
प्रौद्योगिकी विभाग, छत्तीसगढ़ शासन,

फोन : 0771-2510321, 2221321
(मंत्रालय)
निवास : बी-1, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.)
फोन (नि) : 0771-2446440
निवास : सेक्टर -9, सड़क नं. -11,
बंगला नम्बर - 1, भिलाई
फोन : 0788-2242590

क्रमांक - मंत्री/रा.आ.प्र.उ.शि.त.शि.ज.नि.वि.प्रौ./2014-15

रायपुर, दिनांक 16.4.15

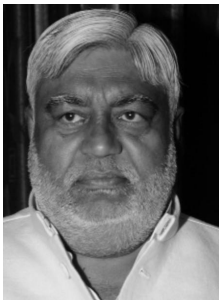

संदेश

यह प्रसन्नता की बात है कि शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग छ.ग. की वार्षिक पत्रिका 'व्यंजना' (सत्र 2014-15) का प्रकाशन किया जा रहा है । महाविद्यालयीन पत्रिका छात्र-छात्राओं की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती है ।

आशा है कि यह पत्रिका विद्यार्थियों की रचनात्मक गतिविधियों का मार्ग प्रशस्त करेगी। इसके माध्यम से विद्यार्थी सकारात्मक विचारों के साथ अपनी प्रतिभा को व्यक्त कर सकेंगे, तथा भविष्य में जिम्मेदार नागरिक के रूप में देश के उत्थान में सक्रिय एवं सार्थक योगदान देंगे ।

'व्यंजना' पत्रिका के प्रकाशन के लिए महाविद्यालय परिवार को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ ।

(प्रेमप्रकाश पाण्डेय)

डॉ. शिवकुमार पाण्डेय
कुलपति

Dr. S.K. Pandey
Vice-chancellor

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) भारत
Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur (C.G.) INDIA
Office :+91-771-2262857,
Fax :+91-771-2263439
E-mail :vc_raipur@prsu.org.in
Website : www.prsu.ac.in

स्वर्ण जयंती वर्ष
Golden Jubilee Year 2013-14

रायपुर, दिनांक 31 मार्च, 2015

शुभकामना

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग द्वारा महाविद्यालयीन पत्रिका 'व्यंजना' का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालयीन पत्रिकाएँ विद्यार्थियों के रचनात्मक अभिरूचि को अभिव्यक्त करने का मंच है, जहाँ उनकी अभिव्यक्ति-क्षमता का विकास होता है । व्यक्तित्व विकास में अभिव्यक्ति का स्थान सर्वोपरि होता है, क्योंकि मनुष्य को अपने पारिवारिक अथवा सामाजिक परिवेश में स्वयं को अभिव्यक्त करने की आवश्यकता हर क्षण हर जगह पड़ती ही है। महाविद्यालयीन पत्रिका 'व्यंजना' में शैक्षणिक कार्यकलाप एवं विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा, सृजन-क्षमता को पुरजोर महत्व मिले ।

असीम शुभकामनाओं के साथ ।

(डॉ. शिव कुमार पाण्डेय)

अध्यक्ष : जनभागीदारी समिति
शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर
स्वाशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

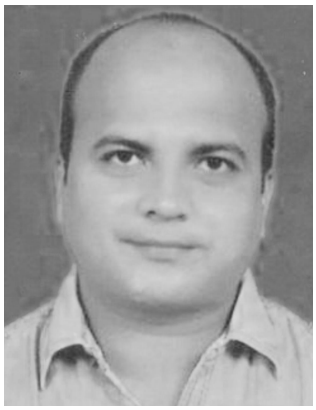

दिनांक -16.02.2015

शुभकामना संदेश

प्रसन्नता का विषय है, कि महाविद्यालय द्वारा नियमित रूप से वार्षिक पत्रिका 'व्यंजना' का प्रकाशन किया जा रहा है । यह छात्रों की साहित्यिक प्रतिभा के प्रस्तुतिकरण का यह उपयुक्त मंच है । इसके माध्यम से विद्यार्थियों को रचनात्मक संवाद का अवसर प्राप्त होता है । यह भी प्रसन्नता की बात है कि महाविद्यालय के अध्यापकों के मार्गदर्शन में छात्रों ने लगन और परिश्रम के साथ कार्य किया, जिसके चलते संस्था ने श्रेष्ठ उपलब्धियाँ प्राप्त की है । इसके लिए सम्पूर्ण महाविद्यालय परिवार बधाई का पात्र है ।

आशा है आगामी वर्षों में महाविद्यालय प्रगति के नये सोपानों की ओर अग्रसर होगा । महाविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों को हार्दिक शुभकामनायें ।

(आशुतोष सिंह)
अध्यक्ष : जनभागीदारी समिति

स्वाधीनता-सेनानी श्री विश्वनाथ यादव तामस्कर

स्व. श्री विश्वनाथ राव यादव तामस्कर दुर्ग जिले के ऐसे जुझारू नेता के रूप में जाने जाते हैं, जिन्होंने गुलाम भारत में विदेशी सरकार से लड़ते हुए दुर्ग अंचल में आजादी की अलख जगायी। स्वाधीनता संघर्ष से लेकर छत्तीसगढ़ राज्य-निर्माण के लिये जो योगदान उन्होंने दिया है, उसके लिए उन्हें सदैव स्मरण किया जायेगा। उनका व्यक्तित्व आज भी हमें प्रेरणा प्रदान करता है।

स्व. तामस्कर का जन्म दुर्ग जिले की बेमेतरा तहसील के अंतर्गत झाल नामक ग्राम में 7 जुलाई 1901 को हुआ था। आपके पिता श्री यादव वामन तामस्कर अदालत में अर्जीनवीस थे। उनकी माता का नाम पुतली बाई था। आपकी अधूरी शिक्षा दुर्ग और बिलासपुर में पूर्ण हुई। वे कानून की पढ़ाई करने इलाहाबाद गये। यहां पर श्री तामस्कर गांधीवादी नेताओं के सम्पर्क में आये और विभिन्न आंदोलनों में भाग लिया। इसी समय 1921 में असहयोग आंदोलन के बहिष्कार के कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये आप कानून की पढ़ाई छोड़कर अपने गृह ग्राम वापस आ गये। आंदोलन समाप्त होने के पश्चात् पुनः पढ़ाई प्रारंभ कर 1927 में नागपुर से कानून की डिग्री ली और वकालत का पेशा अपनाया। किन्तु आपका मन देशप्रेम में रम चुका था, इसलिये 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन में कूद पड़े। नमक कानून की तरह छत्तीसगढ़ में जंगल कानून तोड़ने का सत्याग्रह हुआ। इसका नेतृत्व करते हुये आप गिरफ्तार हुये। ब्रिटिश सरकार से अपने कृत्य पर क्षमा नही मांगने के कारण आप पर भारी जुर्माना लगाया था तथा एक वर्ष के कठोर कारावास की सजा मिली। जुर्माना नहीं पटाने पर आपकी बहुत-सी सम्पत्ति और निजी पुस्तकालय को नीलाम कर दिया गया। तामस्कर जी ब्रिटिश शासन के इस अत्याचार के आगे नहीं झुके, बल्कि जेल से छूटते ही दुबारा आंदोलन में कूद पड़े । शराबबंदी आंदोलन में भाग लेते हुये दुबारा 9 माह के लिये जेल गये।

इसके बाद सरकार ने उनसे वकालत करने का अधिकार छीन लिया। ब्रिटिश शासन की यह नीति देशभक्तों को कुचलने की थी, किन्तु जनता ने ऐसे देशभक्तों को अपने सर-आंखों में बैठाया था। तामस्कर जी 1930 से 1933 तक बेमेतरा बार कौंसिल के चेयरमेन चुन लिये गये। 1933 में दुर्ग डिस्ट्रिक्ट कौंसिल के सदस्य हुये तथा 1937 से 1940 तक उसके चेयरमेन के पद को सुशोभित किया। 1937 में प्रांतीय सरकार बनाने के लिये हुये चुनाव में आप बेमेतरा क्षेत्र से मध्यप्रान्त से धारासभा (विधानसभा) के प्रतिनिधि निर्वाचित हुये। 1939 में द्वितीय महायुद्ध के काल में विरोध-स्वरूप सभी कांग्रेसी सदस्यों की तरह विधानसभा की सदस्यता से त्याग पत्र दे दिया। उन्होंने गांधीजी द्वारा संचालित 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह और 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में सत्याग्रही के रूप में भाग लिया। स्वतंत्रता संग्राम के काल में आपने कुल मिलाकर लगभग पांच वर्षों की जेल यात्रा की थी। इसी बीच समाज-सुधार के कार्यक्रम में भी आपने सक्रिय भागीदारी निभायी और अछूतोद्धार कार्यक्रम से जुड़े रहे ।

1952 में हुये पहले आम चुनाव में वे स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में बेमेतरा विधानसभा क्षेत्र से विजयी हुये। 1957 में दुर्ग शहर से सोशलिस्ट पार्टी के टिकट पर विधान सभा के सदस्य बने। म.प्र. के पूर्व मुख्यमंत्री पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र के प्रयत्नों से आपने 1967 का चुनाव लड़ना स्वीकार कर लिया तथा विजयी होकर संसद में प्रवेश किया। आप छत्तीसगढ़ की जनता और किसानों की आवाज देश की संसद में पहुंचाते रहे। उन्होंने छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के लिए आवाज बुलंद की। नियति ने इस कर्मठ माटीपुत्र को 2 सितम्बर 1969 को हमारे बीच से उठा लिया। छत्तीसगढ़ की माटी सदा ऐसी जुझारू संतानों के प्रति ऋणी रहेगी। ऐसे जनप्रतिबद्ध और जमीन से जुड़े देशभक्त के नाम पर शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, दुर्ग का नामकरण छत्तीसगढ़ शासन द्वारा किये जाने पर समूचा महाविद्यालय परिवार गौरवान्वित महसूस करता है।

प्राचार्य की मेज़ से
नई दिशाओं का संधान

'व्यंजना' महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका है, जो छात्रों की साहित्यिक सृजनशीलता और बौद्धिक गतिविधियों को प्रतिबिम्बित करती है। इसमें छात्रों की प्रतिभा की झलक मिलती है। इसके माध्यम से छात्रों ने अपनी रचनात्मक भागीदारी प्रस्तुत की है। इस मायने में यह संस्था के कार्यकलाप का दर्पण है।

यह महाविद्यालय 57 वर्ष पूर्व अत्यंत अल्प संसाधनों के साथ प्रारंभ हुआ था। इन वर्षों में क्रमशः यह प्रगति के अनेक सोपानों को पार कर वर्तमान स्वरूप में आज प्रदेश में अपनी एक गौरवशाली पहचान प्राप्त कर सका है। यह छत्तीसगढ़ में उच्च शिक्षा के आरंभिक संस्थानों में से एक है। इस संस्था की स्थापना के साथ इस क्षेत्र में शैक्षणिक प्रगति की आधारशिला रखी गई थी। पिछले 57 वर्षों में न सिर्फ इस महाविद्यालय ने अनेक लक्ष्यों को प्राप्त किया है, बल्कि इस क्षेत्र में जनशक्ति के विकास, अनुशासित नागरिकों के निर्माण तथा सौहार्दपूर्ण सामाजिक वातावरण के निर्माण में इसका उल्लेखनीय योगदान रहा है। संस्था के विद्यार्थियों ने कला, साहित्य, संस्कृति, राजनीति, प्रशासन, उद्योग आदि विविध क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके रचनात्मक उद्यम से हमारा समाज निरन्तर गौरवान्वित हुआ है। महाविद्यालय के इतिहास के निर्माण में संस्था के विद्वान प्राध्यापकों का भी अमूल्य योगदान है, जिसे हम सदैव स्मरण करते हैं । उनके अथक परिश्रम के कारण आज यह संस्था प्रगति के मार्ग पर निरन्तर अग्रसर हो रही है।

महाविद्यालय ने अब तक अनेक गौरवशाली उपलब्धियां अर्जित की हैं। राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) बैंगलोर द्वारा इस महाविद्यालय को 2011 में 'ए' ग्रेड की अधिमान्यता प्रदान की गई है। साथ ही विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने कॉलेज विथ पोटेंशियल फॉर एक्सलेंस (सी.पी.ई.) के तहत तृतीय चरण की स्वीकृति प्रदान की है। ये दोनों उपलब्धियां इस दृष्टि से भी उल्लेखनीय हैं कि छत्तीसगढ़ राज्य में इन्हें एक साथ अर्जित करने का श्रेय केवल इस महाविद्यालय को है। यह भी महत्वपूर्ण है कि इस संस्था के विद्यार्थियों और अध्यापकों ने शिक्षण के अतिरिक्त शिक्षणेतर गतिविधियों और सांस्कृतिक आयोजनों में रूचि और निष्ठा के साथ कार्य किया है। इससे परिसर में एक रचनात्मक वातावरण निर्मित हुआ है।

हमारा प्रयास होगा कि हम छात्रों को रचनात्मक कार्यों के लिए निरन्तर प्रोत्साहित करें, तथा महाविद्यालय को नई उपलब्धियों और उंचाइयों की ओर अग्रसर करें। लेकिन यह भी सच है कि नई दिशाओं का संधान करने के लिए हमें अथक उद्यम करना होगा। शिक्षण, शोध तथा शिक्षणेतर गतिविधियों में सृजनात्मक ऊँचाइयाँ प्राप्त करने के लिए महाविद्यालय परिवार संकल्पबद्ध है। हमें विश्वास है, अपने लक्ष्य की ओर हम लगातार आगे बढ़ते रहेंगे। कदम-कदम आगे बढ़ने से ही आखिर लक्ष्य मिलता है। मैं संस्था के छात्रों के उज्ज्वल भविष्य कामना करता हूँ ।

S.T.

डॉ.सुशीलचन्द्र तिवारी
प्राचार्य

सम्पादकीय

उच्च शिक्षा की नई दिशाएँ

पिछले कुछ वर्षों से भारत में उच्च शिक्षा की दशा को लेकर शिक्षाविदों, बुद्धिजीवियों और शिक्षा-प्रशासकों के बीच विचार-विमर्श हो रहा है । उच्च शिक्षा के लक्ष्य, उसकी सार्थकता और सफलता पर पुनर्विचार किया जाना बेशक सुसंगत और समयोचित ही है, बल्कि सच कहा जाये तो स्वतंत्रता-प्राप्ति के छह दशक बीत जाने के बाद यह आवश्यक भी है । बदलते समय के अनुरूप उसे नए सिरे से प्रासंगिक बनाने के लिये व्यापक और मूलगामी स्तर पर उसकी पुनर्समीक्षा हो ।

कौन नहीं जानता कि हमारी आधुनिक शिक्षा का नाभिनाल-सम्बन्ध पश्चिम के ज्ञानोदय से है और हमारे देश में उसकी मूल अभिप्रेरणाएँ प्रायः औपनिवेशिक हैं । उसके चरित्र को बदलने और उसे भारतीय ढंग की आधुनिकता में ढालने का अवसर स्वतंत्रता - प्राप्ति के बाद संभव हुआ था, लेकिन तब तक हमारे सामाजिक मनोविज्ञान का इस कदर उपनिवेशीकरण हो चुका था कि पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान से इतर किसी वैकल्पिक ज्ञान-प्रणाली को अपनाये जा सकने की ज़रा भी गुंजाइश बाकी नहीं रह गई थी । तब तात्कालिक चुनौती यही थी कि तेज़ी से तरक्की के रास्ते पर दौड़ते पश्चिमी समाज के साथ चलने की ऊर्जा किस तरह से अर्जित की जाए तथा प्रगति और विकास के स्वप्न को यथार्थ में रूपांतरित किया जाए । सामाजिक प्रगति और विकास के भौतिक लक्ष्यों को उच्च शिक्षा के लक्ष्यों से जोड़ दिया गया । वह मनुष्य की नैतिक आकांक्षाओं और नागरिक जीवन के आदर्शों को चरितार्थ करने का माध्यम न रह कर राष्ट्र की आर्थिक प्रगति का उपकरण बन गई । भारतवासियों को सभ्य बनाने के 'पवित्र' उद्देश्य का उद्घोष करने के बावजूद अंग्रेजी शिक्षा प्रशासनिक मशीनरी के पुरज़े तैयार करने के उद्योग में तब्दील कर दी गई थी लेकिन स्वतंत्र भारत में भी उसके बुनियादी लक्ष्य को विवेकशील और न्यायप्रिय नागरिक निर्मित करने की दिशा में मोड़ने का प्रयत्न करने की बजाय राष्ट्र की भौतिक उत्पादकता से जोड़ दिया गया । नागरिक संवेदनशीलता का क्षरण और राष्ट्र-चेतना का ह्रास इसका स्वाभाविक परिणाम था ।

दरअसल 1947 के बाद देश में पश्चिमी ढंग से जिस आधुनिक लोकतंत्र की स्थापना हुई थी, न तब उसका कोई विकल्प हमारे पास था, न अब है । उसके लक्ष्य स्वाभाविक तौर पर 'प्रगति' और 'विकास' की पाश्चात्य अवधारणा से बद्धमूल हैं । भारत का आधुनिक लोकतंत्र भी अंततः इन्हीं लक्ष्यों से संचालित और गतिशील है । 'प्रगति' और 'विकास' के इस वृहद लक्ष्य से आधुनिक शिक्षा स्वतः जुड़ी हुई है । इसलिए सहज रूप से वह 'सामाजिक विकास' के औज़ार के तौर पर विकसित हुई है ।

इस सच्चाई को स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद उच्च शिक्षा के विकास के लिये गठित राधाकृष्णन आयोग और कोठारी आयोग ने समुचित रूप से पहचान कर ही देश में उच्च शिक्षा के मॉडल सुझाये थे । डॉ. राधाकृष्णन और डॉ. दौलत सिंह कोठारी उच्च कोटि के विद्वान-मनीषी थे । उनके सुझाये मॉडेल में स्वाभाविक तौर पर राष्ट्र के भौतिक विकास और नागरिक जीवन की गुणवत्ता के लक्ष्यों को संतुलित ढंग से संयोजित किया गया था। उच्चशिक्षा को सामाजिक प्रगति का पावर हाउस माना गया था, राधाकृष्णन और कोठारी के मॉडल में देश की विशाल आबादी को विकास की 'जनशक्ति' (मैन पावर) के रूप में ठीक ही पहचाना गया । लेकिन 1986 की नई शिक्षा नीति में इसे नये सिरे से परिभाषित किया गया। फलतः 'जनशक्ति' अब 'मानव संसाधन' बन गई । मनुष्य अन्य प्राकृतिक संसाधनों की तरह 'संसाधन' है -- यह विचार बड़ी पूंजी, विशाल वैश्विक बाज़ार और अत्यन्त उन्नत टेक्नोलॉजी के संयोग से निर्माणाधीन 'नई विश्व-व्यवस्था' (न्यू वर्ल्ड आर्डर) के अनुरूप था । अचरज नहीं कि 1986 के बाद भारत के शिक्षा मंत्रालय का नाम बदल कर 'मानव संसाधन मंत्रालय' कर दिया गया । पिछली सदी के अंतिम दशक में गठित राममूर्ति समिति की सिफारिशें भी बाज़ार केन्द्रित विकास की अवधारणा से शिक्षा या उन्मोचन न करा सकीं । अंततः उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण (एल.पी.जी) पर आधारित सामाजिक विकास के नये

परिदृश्य में शिक्षा भी खरीदी-बिक्री योग्य वस्तु (कमोडिटी) बन चुकी है।

दूसरी ओर वैश्वीकरण ने आर्थिक एकीकरण के साथ दुनिया को सांस्कृतिक एकीकरण की दिशा में उन्मुख कर दिया है। शिक्षा भी इस प्रवृत्ति के चलते वैश्विक स्तर पर समरूपीकरण की ओर बढ़ रही है । अकारण नहीं है कि दुनिया-भर के देश अपनी उच्च शिक्षा को एक-दूसरे से जोड़ने के लिये अपने अपने उच्चशिक्षा क्वालिफिकेशन फ्रेमवर्क तैयार करने में जुटे हैं ताकि शिक्षा प्राप्त करने के लिए छात्रों की मुक्त पारराष्ट्रीय आवाजाही सुगम और आसान हो सके । हमारे देश में भी राष्ट्रीय उच्च-शिक्षा क्वालिफिकेशन फ्रेमवर्क का निर्माण प्रक्रियाधीन है ।

अब चुनौती यह है कि देश की उच्च शिक्षा का ऐसा क्वालिफिकेशन फ्रेमवर्क और शैक्षिक मॉडेल बने जो 'वैश्विक' और 'स्थानीय' माँग और आवश्यकता की समान रूप से पूर्ति कर सके ।

इस बीच विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की भूमिका पर भी पुनर्विचार हो रहा है । पिछले पांच-छह वर्षों से चल रहे इस मंथन के चलते विश्वविद्यालय अनुदान आयोग सहित उच्चशिक्षा, तकनीकी एवं प्रबंध शिक्षा की सभी नियामक संस्थाओं को भंग कर उनके स्थान पर एकीकृत नियामक संस्था कायम करने पर विचार किया जा रहा है । 2011 में केन्द्र सरकार ने ऐसी संस्था के रूप में उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान आयोग के गठन हेतु विधेयक भी संसद में प्रस्तुत किया था जो पारित न हो सका । इधर विश्वविद्यालय शिक्षा पर पुनर्विचार हेतु गठित हरि गौतम समिति ने भी एकीकृत नियामक संस्था के गठन की सिफारिश करते हुए सभी नियामक संस्थाओं को एक प्राधिकरण की छतरी में समेट लेने का सुझाव दिया है ।

स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद राधाकृष्णन आयोग अथवा कोठारी आयोग का गठन एक खास सामाजिक परिस्थिति में, जाहिर है, नवस्वतंत्र राष्ट्र के निर्माण की आवश्यकता और उसकी प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए किया गया था । तब शिक्षा राष्ट्र-निर्माण अर्थात् समाज के भौतिक और नैतिक ढांचे की रचना का माध्यम थी । आज की बदली हुई परिस्थितियों में शिक्षा का उद्देश्य बदल गया है । वैश्वीकरण की प्रतिस्पर्धा में खड़ा होने में समर्थ राष्ट्र का निर्माण अब उसकी प्राथमिकता है । विश्व-बाज़ार के खुले मैदान में हो रही इस स्पर्धा में, प्रगति और विकास की इस दौड़ में वही राष्ट्र आगे हैं जिन्होंने अपनी शिक्षा प्राणाली को डोपिंग ड्रग में तब्दील करने में कामयाबी पाई है, जो राष्ट्र की माँस-पेशियों को सक्रिय, सशक्त और उत्तेजना से भरपूर बनाये रखता है । बाज़ार में शिक्षा एक प्रॉडक्ट है । इसलिए बौद्धिक-नैतिक-ज्ञानात्मक पक्ष की बजाय उसका व्यावहारिक एवं उपयोगितावादी (प्रैग्मेटिक) पहलू ज्यादा महत्वपूर्ण है ।

ऐसी परिस्थिति में स्वाभाविक तौर पर शिक्षातंत्र के मौजूदा पुनर्गठन की क़वायद के पीछे उसे मार्केट फ्रेण्डली बनाने की जद्दोजेहद और उसकी व्यावहारिकता का दर्शन काम कर रहा है । विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की भूमिका को विफल इसलिए माना जा रहा है कि आज के हालात में देश की उच्च शिक्षा को विश्व-उत्पादन तंत्र से जोड़ने में उसका सांस्थानिक ही नहीं, वैचारिक ढांचा भी अपर्याप्त मालूम पड़ने लगा है । इसलिए कहा जा सकता है कि आने वाले समय में न सिर्फ उच्च शिक्षा का स्वरूप बदलेगा, बल्कि उसकी सामाजिक पहुँच का भी विस्तार होगा । इसके साथ ही उच्चशिक्षा के प्रॉडक्ट के रूप में अंतरानुशासनिक ज्ञान-प्रणाली में दीक्षित एक वैश्विक नागरिक (ग्लोबल सिटीजन) की परिकल्पना सामने आएगी । फिलहाल यह समय कोई भविष्यवाणी करने का नहीं है, बल्कि समाज, राजनीति, बाज़ार और प्रौद्योगिकी के तीव्र परिवर्तनों के बीच शिक्षा के स्वरूप में होने वाले परिवर्तनों के सतर्क अवलोकन का है ।

दुनिया आज बहुत गहरे उथल-पुथल के दौर से गुज़र रही है । व्यवस्था के ढांचे बिखर रहे हैं । नई विश्व व्यवस्था के निर्माण की प्रक्रिया में आर्थिक शक्तियों को चालक ऊर्जा की तरह नियोजित किया जा चुका है । शिक्षा, संस्कृति, राजनीति, धर्म आदि तमाम शक्तियाँ अर्थतंत्र के इर्द-गिर्द घूम रही हैं । कभी धर्म को समाज की नियामक शक्ति का दर्ज़ा हासिल था। फिर विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने उसकी जगह ली । आज क्रमशः अर्थतंत्र उसे विस्थापित कर रहा है । ज्ञान का तीव्र गति से और विपुल परिमाण में उत्पादन हो रहा है लेकिन उसका उद्देश्य अंततः अर्थतंत्र को गतिशील रखना है । यह अर्थ के उत्पादन का युग है। उच्चशिक्षा की सफलता इस बात में देखी जा रही है कि वह आर्थिक वृद्धि और विकास में किस हद तक योग दे सकती है । उच्च शिक्षा पर पुनर्विचार के प्रयत्नों को इस पृष्ठभूमि में देखें तो उसकी सार्थकता और सफलता यानी उसके भविष्य की रूपरेखा को भी किसी हद तक समझा जा सकता है ।

शताब्दी – स्मरण

डॉ. जय प्रकाश

सौ वर्ष पूर्व के प्रसंग

बीसवीं शताब्दी को गढ़ने में मनुष्य की अपूर्व सर्जनात्मकता का विनियोग हुआ है। महान सर्जकों, विचारकों, वैज्ञानिकों, राजनेताओं, बुद्धिजीवियों के जीवन के अलावा विविध घटना प्रसंगों और अपने तमाम मानवीय कार्यकलाप में यह शताब्दी रूपायित हुई है। इनकी अमिट छाप इतिहास के पटल पर अंकित है।

वैश्विक स्तर पर तबाही की पहली जंग

आज से ठीक सौ वर्ष पहले 1915 में, और जाहिर है, उसके आगे-पीछे के वर्षों में भी बहुत कुछ ऐसा घटित हुआ था, जिससे न सिर्फ बीसवीं शताब्दी का रूपाकार निर्मित करने में बल्कि बाद के दौर में मानवता के भविष्य को गढ़ने में भी जिसकी निर्णायक भूमिका रही है। इस दृष्टि से आज से सौ बरस पहले 1914-15 में घटित घटनाओं और उन वर्षों में जन्मे महान व्यक्तियों का स्मरण किया जा सकता है। उन्हें याद किया जा सकता है कि इन वर्षों में प्रथम विश्वयुद्ध के रूप में यूरोप में राष्ट्रवाद के नाम पर पूँजी की नई ऐतिहासिक शक्तियों के अंतर्विरोध वैश्विक धरातल पर अत्यंत नृशंस तरीके से प्रकट हुए थे और लाखों नागरिकों की बलि ले ली थी। इस घटना ने पांच साल में अपने उपसंहार के बाद समूचे यूरोप को लगभग एक खंडहर में तब्दील कर दिया। अकारण नहीं है कि इसके बाद टी.एस. इलियट जैसे कवि को यूरोपीय सभ्यता सहसा 'बंजर भूमि' (वेस्टलैण्ड) नज़र आने लगी थी और स्पैंग्लर - जैसे विचारक को मानव इतिहास में उत्थान के बाद अवश्यम्भावी पतन का इतिहास-दर्शन सूझा था। कहने की ज़रूरत नहीं कि पहले विश्वयुद्ध ने इतिहास में बड़ा और दूरगामी हस्तक्षेप किया था। यहाँ 1929 की वैश्विक मंदी को भी याद किया जाना चाहिये जो निस्संदेह प्रथम विश्वयुद्ध का परिणाम थी।

एक सत्याग्रही की देश वापसी

भारत के इतिहास पर ग़ौर करें तो राष्ट्रीयता के उभार के उस दौर में महात्मा गांधी का स्वाधीनता आंदोलन में प्रवेश हुआ था, जब 1915 में दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा के अनूठे सामाजिक प्रयोग की सफलता का बल लेकर वे भारत आये। ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विरूद्ध गांधीजी के संघर्ष और राष्ट्र की मुक्ति में उनके योगदान के चलते किस तरह भारत का भविष्य सुनिश्चित हुआ, इसका वृत्तांत कौन नहीं जानता? गांधीजी के बिना भारत की बीसवीं शताब्दी की कल्पना नहीं की जा सकती।

चौथा यहूदी

1915 में ही अल्बर्ट आईंस्टीन ने सापेक्षता के सामान्य सिद्धांत का प्रतिपादन किया था। इस खोज के युगांतकारी महत्व से आज भौतिक विज्ञान के विद्यार्थी अनभिज्ञ नहीं हैं। सापेक्षतावाद ने दिक् और काल की न्यूटन के समय से चली आ रही अवधारणा को बदल दिया था और गति, संवेग, द्रव्यमान आदि की संकल्पना पर पुनर्विचार करते हुए क्लासिकल भौतिकी के सिद्धांतों में उलटफेर कर दिया था। उन्होंने इस तरह आधुनिक भौतिकी की नींव रखी।

सच कहा जाये तो आईंस्टीन ने मनुष्य की दुनिया बदल दी। ब्रह्माण्ड की एक नई समझ विकसित करने की दृष्टि से ही नहीं, उन्हें इसलिए भी युगों तक याद किया जाता रहेगा कि भौतिकी में उनकी खोजों ने इस शास्त्र के अधुनातन विकास के नये द्वार खोले, जिससे आज की दुनिया संभव हो पाई। आईंस्टीन यहूदी थे। इतिहास की उस सर्वाधिक पीड़ित और दुर्दमित जाति में वे पैदा हुए थे, जो अपनी ही धरती से निर्वासित थी। विडम्बना है कि यह पीड़ित जाति द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद इसरायल के रूप में अपना स्वायत्त राष्ट्र हासिल करने के बाद एक खास तरह की भू-राजनीति के चलते स्वयं उत्पीड़क राष्ट्र में तब्दील हो गई। महान आइन्सटीन को इज़रायल का राष्ट्रपति बनने के लिए निमंत्रित किया गया, लेकिन उन्होंने इंकार कर दिया। इस इंकार के पीछे एक शांतिकामी विचारक का नैतिक संकल्प भी था। वे यहूदीवाद (ज़ियनिज़्म) का नस्ली परचम लहराते राष्ट्र का नेतृत्त्व करने को तैयार नहीं हुए । कहा जाता है कि पिछले दो सौ वर्षों में दुनिया को गढ़ने में कुछ उद्भट यहूदी प्रतिभाओं का निर्णायक योगदान रहा है। उन्नीसवीं सदी में कार्ल मार्क्स और सिग्मंड फ्रायड। एक ने इतिहास के नियमों की खोज की, दूसरे ने मानव-मन के रहस्यों की। तीसरे यहूदी थे साहित्यकार फ्रैंज़ काफ्का। काफ्का ने बीसवीं सदी में भय और आतंक के माहौल में जीते आधुनिक मनुष्य के भीतरी अंधकार और उसके आत्मविस्थापन को साकार किया। आईंस्टीन चौथे

यहूदी थे। उन्होंने मनुष्य के ब्रह्माण्ड बोध का नया आधार रचा। द्रव्यमान और ऊर्जा के बीच संबंधों के बारे में उनकी खोजों ने परमाणु भौतिकी के क्षेत्र में भी आगे चलकर क्रांतिकारी शोध के दरवाजे खोले और परमाणु ऊर्जा के लिए नई तकनीकों का विकास हुआ। लेकिन जापान में परमाणु ऊर्जा के विध्वंसक प्रयोग के ज़रिये मनुष्य जाति से शर्मसार कर देने वाले अमरीका के विवेकहीन उन्माद के दौर में उसी अमरीका में रहते हुए आईंस्टीन मानवीय विवेक और संवेदना की आवाज़ बने रहे।

शताब्दी के अमूल्य रत्न

इतिहास के समंदर में हर हमेशा नये रत्न निकलते हैं। हर दौर में उपजी महान प्रतिभाओं ने सभ्यता को रचने में अमूल्य योगदान दिया है। हमारे यहाँ उन्नीसवीं शताब्दी में पुनर्जागरण के चलते अनेक महान व्यक्तित्व उत्पन्न हुए जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में अपने रचनात्मक योगदान के द्वारा एक आधुनिक राष्ट्र के रूप में भारत को सँवारा। इनमें राजनीति, साहित्य, कला, विज्ञान के क्षेत्र की तमाम प्रतिभाएँ सम्मिलित हैं।

बीसवीं शताब्दी ने भी अद्वितीय सर्जकों को जन्म दिया है। साहित्य में देखें तो 1915 में भीष्म साहनी, राजेंद्र सिंह बेदी, ख्वाजा अहमद अब्बास, इस्मत चुग़ताई जैसे कथाकार जन्मे, जिनकी कृतियों में बीसवीं सदी का भारत अपनी समूची आकांक्षाओं, उम्मीदों और साथ ही दुःस्वप्नों सहित स्पंदित होता है। इन सभी का साहित्य के अलावा फ़िल्मों में भी महत्वपूर्ण योगदान है। पचास के दशक में लोकप्रियता और सोद्देश्यता के बीच फाँक को मिटा देने वाली राजकूपर की फिल्मों के पटकथाकार ख़्वाजा अहमद अब्बास को या 'एक चादर मैली सी' जैसी फिल्मों में भारत के स्त्री-जीवन की त्रासद विडम्बना को उद्घाटित करने वाले राजेंद्र सिंह बेदी अथवा भारत विभाजन की विभीषिका को इतिहास के धरातल से मानवीय संवेदना के मर्म पटल पर उतार देने वाले भीष्म साहनी के 'तमस' को (जिस पर बनी फिल्म उतनी ही प्रभावशाली है, जितनी कि उनका उपन्यास) भला कैसे भुलाया जा सकता है। 1915 विख्यात कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जन्म वर्ष है जिन्होंने हिंदी कविता को एक नया तेवर और अंदाज़ दिया।

1915 में ही गीतकार 'प्रदीप' का भी जन्म हुआ था जिनकी रचना 'ए मेरे वतन के लोगो' भारत की जनता की साँसों में बस गई है। फिल्म अभिनेता जीवन और फिल्मकार चेतन आनंद भी इसी वर्ष जन्मे थे। अँग्रेजी साहित्य पर ग़ौर करें तो 1915 में ही अमरीकी नाटककार आर्थर मिलर और सॉल बेलो का जन्म हुआ था। इन दोनों लेखकों ने अमरीकी जीवन के साक्ष्य से आधुनिक मनुष्य की नियति और विडम्बना का साक्षात्कार किया था।

सौ बरस पहले 'उसने कहा था'

सौ बरस पहले विश्वयुद्ध की पहली चिंगारी फूटी थी। उसके ठीक बाद हिंदी में एक कहानी लिखी गई। कांगड़ा के विद्वान चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' की 1915 में लिखी गई कहानी 'उसने कहा था' का महत्व इस बात में है कि हिंदी में कहानी - विधा जब घुटनों के बल चल कर खड़ा होने की लड़खड़ाती कोशिश में लगी थी, तब यह कहानी लिखकर गुलेरी ने उसे सीधा खड़ा कर चलने के लिए तैयार किया था।

लेकिन इस कहानी को यहाँ इसलिए भी याद किया जाना चाहिये कि इसमें प्रथम विश्वयुद्ध पृष्ठभूमि की तरह मौजूद है। युद्ध की विभीषिका के बीच प्रेम की गहरी संवेदना को कर्त्तव्य बोध में अनूदित करते चरितनायक लहना सिंह के रूप में मूर्त होने वाली मानवीयता आज के हाहाकार भरे समय में कितनी प्रासंगिक और मूल्यवान है -- यह कहने की ज़रूरत नहीं है।

सौ बरस बाद आज हमें उन सभी घटना प्रसंगों, महान सर्जकों और उनके कृतित्व को याद करना चाहिये। यदि वह सब उस तरह से न होता तो हमारा आज का समय इस तरह न होता, जैसा कि वह सचमुच हो सका है। कहने की आवश्यकता नहीं कि अतीत की नींव पर ही हमारे वर्त्तमान की इमारत खड़ी है।

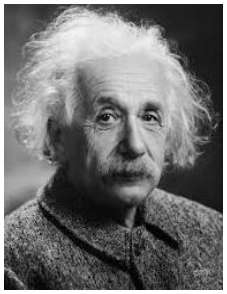

शताब्दी – स्मरण : 1

डॉ. अंजली अवधिया

जनरल थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी – एक चुनौती

लगभग दो सौ वर्षों तक प्रकृति के नियमों को सही तरीके से वर्णित करने के लिए न्यूटन के गति के समीकरणों को एक कसौटी माना जाता था । फिर 1905 आया और दुनिया बदल गई। आईंस्टीन ने न्यूटन के गति के नियमों में त्रुटि को उजागर किया । साथ ही उसका निराकरण भी किया जिसकी वजह से दुनिया को भौतिकी के महानतम सिद्धान्तों में से एक आपेक्षिकता का सिद्धान्त मिला ।

वास्तव में आईंस्टीन ने दो सिद्धान्त दिए थे । एक 1905 में स्पेशल थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी । स्पेशल थ्योरी ऑफ रिलेटिवटी में प्रकाश के वेग के तुल्य वेग से चलने वाले कणों के लिये भौतिकी की मूलभूत विमाओं द्रव्यमान की दूरी व समय को निरपेक्ष न मानकर उन्हें वेग पर निर्भर सिद्ध किया गया है जिसकी वजह से न्यूटन के गति के नियम में परिवर्तन की आवश्यकता पड़ी । जबकि जनरल थ्योरी ऑफ रिलेविटी (1915) में स्पेशल थ्योरी ऑफ रिलेटिवटी को गुरूत्व के नियमों पर लागू करके इसके प्रभाव का अध्ययन किया गया है ।

वास्तव में आपेक्षिकता का सिद्धान्त पहली बार न्यूटन द्वारा ही प्रतिपादित किया गया था । न्यूटन के गति के नियमों में गति को नापने की आवश्यकता होती है । गति यानी दूरी और समय का अनुपात । दूरी नापने के लिए हमें वस्तु की आंरभिक स्थिति और अंतिम स्थिति का पता होना चाहिए । और आरंभिक स्थिति का पता लगाने के लिए हमें एक स्थिर निर्देशक तंत्र, कोई एक बिन्दु जो स्थिर हो और जिससे हम कुछ काल्पनिक रेखाएँ खींच सकें, तीन परस्पर लम्बवत दिशाओं में ताकि हम त्रिविमीय स्पेस में मुक्त रूप से गति कर रही किसी भी वस्तु जैसे चिड़िया, हवाई जहाज आदि को मूल बिंदु से दूरी समय के साथ नाप सकें। यानी किसी भी प्रकार की गति को नापने के लिए हमें एक स्थिर निर्देश तंत्र (Frame of reference) चाहिए ठीक वैसे ही जैसे अपनी उम्र नापने के लिए हमें अपनी जन्म की तारीख और समय पता होना चाहिए और इस जन्म की तारीख का स्थिर होना अनिवार्य है। आश्चर्य की बात ये है कि विश्व भर में ऐसे एक निरपेक्ष या स्थिर फ्रेम ऑफ रिफरेंस की उपस्थिति को सिद्ध करने के लिए कई प्रयोग किए गए। माइकेलस मोरले का प्रयोग उसमें सबसे ज्यादा प्रसिद्ध है। लेकिन कोई भी यह सिद्ध नहीं कर पाया कि ऐसा निर्देश तंत्र संभव है। और अगर ऐसा कोई निर्देशतंत्र ही नहीं जिसके सापेक्ष स्थिति या गति को निरपेक्ष रूप से नापा जा सके तो न्यूटन का यह सिद्धांत है कि सभी जड़त्वीय निर्देश तंत्रों में भौतिकी के नियम

अपरिवर्तित रहते हैं, बेमतलब सिद्ध हो जाता है क्योंकि निरपेक्ष या जड़त्वीय निर्देश तंत्र प्रकृति में है ही नहीं। इसे एक सरल उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है। मान लीजिए कि एक कार में बैठे हुए हैं और कार के पीछे प्रकाश की किरणें हमें आती हुई दिखाई देती हैं। न्यूटन के गति के नियम के अनुसार 4 लेग से चलने वाली कार में बैठे व्यक्ति को उस प्रकाश की किरण की गति C की बजाय C-4 दिखाई देगी। इसी तरह अगर प्रकाश की किरणें कार के सामने से आती हुई दिखाई दें तो उसका वेग कार में बैठे व्यक्ति को C+4 लगेगा।

लॉरेंज नामक भौतिक शास्त्री ने यह सिद्ध किया कि प्रकाश का वेग स्रोत और प्रेक्षक के बीच की आपेक्षिक गति से नहीं बदलना चाहिए। प्रकाश हर दिशा में एक समान वेग C से चलता है। तब पाईकर नामक वैज्ञानिक ने यह हल सुझाया कि अगर C नियत है और हमें चल और अचल दोनो निर्देश तंत्रों में भौतिकी के नियमों को अपरिवर्तित रखना है तो ये तभी सम्भव है जब द्रव्यमान (m), लंबाई (L) तथा समय (T) जैसी मूल राशियों को स्थिर न मानकर वेग पर निर्भर माना जाए। पॉइकर ने एक मजेदार विचार सामने रखा कि ये प्रकृति का षड्यंत्र है कि वो मनुष्य द्वारा किए गए हर ऐसे प्रयत्न को विफल कर देती है जिससे वह वस्तु का निरपेक्ष वेग नाप सके। यह प्रकृति अपने रहस्यों को आसानी से उजागर नहीं करती।

जब द्रव्यमान की वेग की निर्भरता का सिद्धान्त आईंस्टीन ने दिया तो द्रव्यमान में परिवर्तन से ऊर्जा की उत्पत्ति या द्रव्यमान और ऊर्जा की तुल्यता अपने आप सिद्ध हो गई। यह कुछ इस प्रकार है -

$$m = \frac{m}{\sqrt{1-\left(\frac{v^2}{c^2}\right)}}$$

$$\Rightarrow m = m\left(1-\left(\frac{v^2}{c^2}\right)\right)^{-1/2}$$

अगर $v \ll c$

$$\Rightarrow m = m\left(1+\frac{1}{2}\frac{v^2}{c^2}\right)$$

$$\Rightarrow (m - m) = \frac{1}{2}\left(\frac{mv^2}{c^2}\right)$$

$$\Rightarrow E = \frac{1}{2}mv^2$$

$$\Delta m = m - m$$

रखने पर

$$\Rightarrow \Delta m = \frac{E}{c^2}$$

$$\Rightarrow E = \Delta m.c^2$$

यह छोटा सा समांकरण बाद में अणु व न्यूक्लियर बम बनाने के लिए उपयोग में लाया गया जिससे आईंस्टीन व्यथित थे और उन्होंने जीवन भर विश्व शांति के लिए भरसक प्रयास किया। अणु के 1 gm द्रव्यमान द्वारा 20 किलो टन TNT के बराबर सामर्थ्य का विस्फोट किया जा सकता है। हाँ एक और बात स्पष्ट होती है। मनुष्य की अपनी सीमाएँ है और प्रकृति के सामने वह कितना तुच्छ है यह इसी बात से सिद्ध होता है कि न्यूटन के सिद्धान्तों की त्रुटियों को समझने में हमें 200 वर्ष लगे । क्योंकि हमारे पास ऐसा कोई साधन नहीं था जिससे प्रकाश की गति से चलने वाली वस्तुओं के वेग को नापा जा सके। किसी भी सिद्धान्त को सिद्ध करने के लिए प्रयोगों की आवश्यकता होती है और उन्हीं प्रयोगों के परिणामों से हमें नवीन सिद्धान्तों की प्राप्ति होती है। अतः प्रकृति को पूरी तरह समझने के लिए हम पूर्णतः उन प्रयोगों पर निर्भर हैं जो हम स्वयं बनाते हैं, जो त्रुटिपूर्ण हो सकते हैं जिनमें प्रकृति की जटिल प्रक्रियाओं को समझाने की योग्यता नहीं होती।

ट्विन पैराडॉक्सः आपेक्षिकता के सिद्धान्त के फलस्वरूप कुछ अद्भुत विचार सामने आए जो समय व दूरी की वेग पर निर्भरता के कारण उत्पन्न हुए। जैसे यदि आप प्रकाश के वेग से गति कर रहे हों तो आपके लिए समय अन्तराल बढ़ जाएगा और दूरियाँ घट जाएँगी। आपेक्षिकता की वजह से एक मजेदार घटना घट सकती है जिसे ट्विन पैराडॉक्स का नाम दिया गया है। दो भाई थे पीटर और पॉल जो टिवन्स अर्थात् 1 जुड़वा थे। यानी एक ही समय में पैदा हुए थे। जब वो बड़े हुए तो पॉल स्पेस शिप में उड़ान भरने चला गया जबकि पीटर धरती पर ही रहा। स्पेस शिप प्रकाश के वेग से उड़ रहा था। जिसकी वजह से पॉल जो स्पेस शिप पर था उसकी घड़ी मंद गति से चल रही थी, उसके दिल की धड़कनें भी मंद गति से चल रही थीं, उसके विचारों की गति भी शिथिल हो गई थी। जब पॉल स्पेस शिप से घूम घामकर वापस आया तो पृथ्वी पर ठहरे उसके अपने जुड़वा भाई की तुलना में उसके लिए समय मंद गति से गुजरा था इसलिए वह अपने जुड़वा भाई से छोटी उम्र का हो गया था। यह मंदता या टाईम डिलेशन कहलाता है। इसी तरह प्रकाश के वेग से चलने वाली वस्तुओं का द्रव्यमान बढ़ जाता है और लम्बाई घट जाती है। इस बात पर आधारित कुछ क्विज भी बाद में रचे गए। जैसे एक सीढ़ी है जो 12 मीटर लंबी है, उसे एक 10 मीटर लम्बे कॉरीडोर में रखना है, तो क्या किया जाए। उत्तर है हम सीढ़ी को प्रकाश के वेग से चलायमान कर दें तो उसकी लम्बाई घट जाएगी और फिर उसे 10 मीटर के कमरे में रख सकते हैं।

सच तो ये है कि सामान्य वेग से चलने वाली वस्तुओं के लिए आज भी न्यूटन के नियम प्रभावी हैं। वहीं सच ये भी है कि जनरल थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी को गुरूत्वीय क्षेत्र व प्रकाश के आपसी सम्बन्ध को सिद्ध करने में अभी 200 या 400 या जाने कितने वर्ष लग सकते हैं। गुरुत्वीय क्षेत्र के द्वारा प्रकाश की किरणें सरल रेखा में न चलकर झुक जाती हैं। इसे समझाने के लिए क्वॉटम भौतिकी का सिद्धान्त सामने आया। स्ट्रिंग थ्योरी को थ्योरी ऑफ एवरी थिंग कहा जाता है। यह नाम स्टीफन हॉकिन्स द्वारा दिया गया है जिनका क़द आईंस्टीन के बराबर माना जाता है। न्यूटन ने एक त्रिविमीय स्पेस की कल्पना की थी। आईंस्टीन की जनरल थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी में चार विमीय स्पेस टाईम की परिकल्पना सामने आई। जबकि स्ट्रिंग थ्योरी में कण को बिंदु स्वरूप न मानकर एक स्ट्रिंग माना गया है जिसके फलस्वरूप स्पेस टाइम की कुल 11 या अधिक विमाएँ सम्भव हैं। विमा यानी dimension यह बतलाता है कि किन-किन दिशाओं में एक वस्तु स्वतंत्रता पूर्वक गति कर सकती है हमारी आंखे सिर्फ तीन विमाएं देख पाती हैं लम्बाई, चौड़ाई और गहराई । इसके आगे सिर्फ कल्पना से काम चलाना पड़ता है।

1915 से अब तक विज्ञान को चुनौती देने वाला 100 साल पुराना यह सिद्धान्त मनुष्य के रूप और प्रकृति के सामने हमारी सीमाओं को रेखांकित करता है और साथ ही हमें प्रेरित करता है कि थ्योरी ऑफ एवरीथिंग की तलाश में निकल पड़ें ताकि कम से कम अगले दो सौ वर्षों में हममे से कोई एक तो आईंस्टीन की तरह प्रकृति को समझ सके।

भौतिक शास्त्र विभाग

Deepika Chandrakar

Einstein's Theory of General Relativity

In 1915, Einstein completed his General Theory of Relativity. This new theory of gravity changed our understanding of space and time. According to the theory of relativity matter causes space to curve. It posited that gravitation is not a force as understood by Newtonian Physics, but a curved field (and area of space under the influence of a force) in the space time - continuum that is actually created by the presence of mass.

In the figure the curvature is highest near a large mass, but it leaves out space dimension and the crucial time dimension.

Postulate: Einstein in 1905 formulated the special theory of relativity on the basis of following postulates which developed the theory of general relativity:

1. **The Principle of Equivalence of Physical Laws:** the laws of physics are same in all inertial frames. This is the principle of relativity.
2. **Principle of Constancy of Velocity of Light :** The speed of light in Vacuum is constant and same as observed from all inertial frame.

Origin of Theory of General Relativity - After publishing the special theory of relativity in 1905, Einstein started thinking about how to incorporate gravity into his new relativistic framework. In 1907 beginning with a simple thought experiment involving an observer in free fall, he embarked on an eight-year search for a relativistic theory of gravity. His work culminated in the presentation to the Prussian Academy of Science in November 1915 what is now known as the Einstein field equations [$G_{\mu v} = (8\hat{}G / C^4)\ T\ \mu v$] which specify how the geometry of space and time is influenced by whatever matter and radiation present, and form the core of Einstein's general theory of relativity.

Importance of theory of general relativity

* Einstein sought to explain situations, in which Newtonian Physics might fail to deal successfully with phenomena, and in so doing proposes revolutionary change in human concepts of time, space and gravity.
* It gave the first reliable account of how some very rapidly moving things behave including most notabley light itself.
* It was created in order to better understand gravity.
* It has helped us to answer why gravity exists.
* This theory has many predictions most of which have been verified by experiment with amazing accuracy.

Application of theory of general relativity

* **Gravitational Lensing Effect** - The gravitational lensing effect occurs when light reaching an observer has passed by a very massive body which is heavily distorting space. The light can be seen to bend around the body.
* **Black Holes** - A black hole is a large body or matter that is so dense that nothing can escape its gravitational attraction at a given distance known as the Schwarzschild radius r_s=2GM/C^2
* **Gravitational Red-Shift -** It occurs when light leaving a massive body redshifts in order to conserve Energy. Light can also blueshift if falling into a gravity well.
* **Gravity Wave** - It is fluctuation of Space-time Curvature that is propagated as a wave.

Guest Faculty (Physics)

शताब्दी - स्मरण : 2

भीष्म साहनी

आपका जन्म 8 अगस्त 1915 का रावलपिंडी (पाकिस्तान) में हुआ। वे लाहौर से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. और पंजाब यूनिवर्सिटी से पी.एच.डी. की उपाधि से नवाजे गये । आप प्रसिद्ध फिल्मकार बलराज साहनी के छोटे भाई थे । भीष्म जी जीवन भर भारतीय जन नाट्य संघ (इप्टा) एवं प्रगतिशील आंदोलन से जुड़े रहे । आप अंबाला और अमृतसर में अध्यापक रहने के बाद दिल्ली यूनिवर्सिटी में साहित्य के प्रोफेसर बने । सन् 1965-67 के दौरान मास्को में 'फौरेन लैंग्वेजेस पब्लिकेशन हाउस' में अनुवादक के काम में कार्यरत रहे । आपने 'नई कहानियाँ' नामक पत्रिका का सम्पादन किया एवं लम्बे समय तक प्रगतिशील लेखक संघ से भी जुड़े रहे। साथ ही साथ वे साहित्य अकादमी की कार्यकरिणी समिति के सदस्य भी रहे ।

प्रकाशित साहित्य

उपन्यास :- झरोखे, तमस, बसंती, मायादास की माड़ी, कुन्तो, नीलू नीलिमा निलोफर ।

कहानी :- मेरी प्रिय कहानियाँ, भाग्य रेखा, वांग चू, निशाचर

नाटक :- हानुष, माधवी, कबीरा खड़ा बाजार में, मुआवजे

आत्मकथा :-(अँग्रेजी में) बलराज, माय ब्रदर, आज के अतीत ।

बाल कथाएँ :- गुलेल का खेल।

अन्य प्रकाशन :- पहला पथ, भटकती राख, पटरियाँ, शोभायात्रा, पाली, दया, कड़ियाँ ।

सम्मान :- साहित्य अकादमी, पुरस्कार, 1975,

शिरोमणि लेखक सम्मान (पंजाब सरकार) 1975, लोटस पुरस्कार (अफ्रो-एशियन राइटर्स एसोसिएशन की ओर से) - 1980,

सोवियत लैंड नेहरू अवार्ड - 1983 पद्मभूषण (भारत सरकार द्वारा) - 1998

नसीब रूद्दीन
एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर (हिंदी)

शताब्दी – स्मरण : 3

राजिन्दर सिंह बेदी

आपका जन्म 1 सितम्बर 1915 ई. को लाहौर में हुआ था । उनकी मातृभाषा पंजाबी थी लेकिन अपना समूचा लेखन कार्य प्रायः उर्दू में किया । आप प्रगतिशील उर्दू कथा साहित्य में एक बड़े कथाकार के रूप में मशहूर हुए । सन् 1947 में बँटवारे के पश्चात् भारत आए । राजिन्दर सिंह बेदी प्रगतिशील आंदोलन के शीर्षस्थ रचनाकारों में शामिल थे । आप प्रारम्भिक जीवन में डाकतार विभाग में क्लर्क रहे और फिर सन् 1958 में ऑल इंडिया रेडियो से जुड़े । फिर बाद में जम्मू में उसके डायरेक्टर बने । इसके बाद स्वतंत्र रूप से लेखन और फिल्म लेखन का कार्य किया।

आपको 'लाजवंती' और 'गर्म कोट' जैसी कहानियों से विशेष ख्याति प्राप्त हुई । साथ ही साथ 1949 में 'बड़ी बहन' फिल्म में आपको विशेष सम्मान प्राप्त हुआ । 'गर्म कोट' नामक कहानी पर आपने एक कला फिल्म का निर्माण किया और कुछ अन्य फिल्मों का निर्देशन भी किया जिसमें पहली फिल्म 'दस्तक' काफी चर्चित रही । आपने कई फिल्मों की स्क्रिप्ट एवं डॉयलॉग भी लिखे, जिनमें 'मधुमती', 'सत्यकाम', 'अनुपमा' और 'अभिमान' जैसी फिल्में है । सन् 1962 में आपका उपन्यास 'एक चादर मैली सी'का प्रकाशित हुआ और 1965 में इसी उपन्यास के लिए आपको साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया । इस उपन्यास पर भारत और पाकिस्तान दोनों देशों में फिल्में बनी ।

प्रमुख प्रकाशित कृतियाँ

उपन्यास : एक चादर मैली सी - 1962,

कहानी संग्रह :- दाना ओदाम - 1938, ग्रहण - 1941, अपने दुख मुझे दे दो - 1965, हाथ हमारे कलम हुए - 1974,

नाटक :- बेजान चीजें - 1943, सात लेक -1981,

सन्मान :- साहित्य अकादमी - 1965,

गालिब सन्मान - 1978,

पद्मश्री - 1972 ।

हरिलाल साहू
एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर (हिन्दी)

शताब्दी - स्मरण : 4

इस्मत चुगताई

इस्मत चुगताई का जन्म 15 अगस्त 1915 को उत्तरप्रदेश के बदायूँ में हुआ । प्रगतिशील आंदोलन से जुड़ी प्रमुख महिला कथाकार थीं । कहानी - ''लिहाफ'' के लिए लाहौर हाईकोर्ट में उन पर मुकदमा चला, जो बाद में खारिज हो गया । आप उर्दू साहित्य की सर्वाधिक विवादास्पद और प्रमुख लेखिका थीं । आपने महिलाओं के सवालों को नए सिरे से उठाया ।

आपकी पहली कहानी 'गेंदा' का प्रकाशन सन् 1949 में उस दौर की उर्दू साहित्यिक सर्वोत्कृष्ट साहित्यिक पत्रिका 'साक़ी' में हुआ और आपका पहला उपन्यास 'जिद्दी' 1941 में प्रकाशित हुआ । आपने अनेक फिल्में की पटकथा लिखी और जुगनू में अभिनय भी किया । आपकी पहली फिल्म 'छेड़छाड़' सन् 1943 में आई थी। आप कुल 13 फिल्मों से जुड़ी रहीं आपकी आखिरी फिल्म 'गर्म हवा'(1973) को कई पुरस्कार मिले । उर्दू साहित्य की दुनिया में इस्मत आपा के नाम से विख्यात इस लेखिका का निधन 24 अक्टूबर 1991 को हुआ । आपकी वसीयत के अनुसार मुबंई के चन्दनबाड़ी में उनका दाह संस्कार किया गया ।

प्रकाशित प्रमुख कृतियाँ - कहानी संग्रह : चोटें, छुईमुई, एक बात, कलियाँ, एक रात दो हाथ, दोजखी शैतान ।

उपन्यास : टेढ़ी लकीर, एक कतरा खून, दिल की दुनिया, मासूम, बहरूप नगर, सौदई, जंगली कबूतर, अजीब आदमी, बांदी।

आत्मकथा : कागजी हैं पैराहन ?

सन्मान : गालिब सम्मान - 1984
साहित्य अकादमी - टेढ़ी लकीर पर,
इकबाल सम्मान, मखदूम अवार्ड, नेहरू अवार्ड ।

पूजा देशमुख
एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर (हिन्दी)

शताब्दी – स्मरण : 5

कवि प्रदीप

कवि प्रदीप का जन्म 6 फरवरी 1915 को बड़नगर, उज्जैन (म.प्र.) में हुआ था । आपका मूल नाम रामचन्द्र नारायणी जी द्विवेदी था । प्रदीप जी की मृत्यु दिसम्बर 1998 को हुई । प्रदीप जी कवि एवं गीतकार थे जो देश भक्ति गीत 'ऐ मेरे वतन के लोगों' की रचना के लिये प्रसिद्ध हैं । आपने 1962 के भारत-चीन युद्ध के दौरान शहीद हुए सैनिकों की याद में ये गीत लिखे तथा लता मंगेशकर द्वारा इसी गीत को 26 जनवरी 1963 को दिल्ली के रामलीला मैदान में गाया जिसका सीधा प्रसारण किया गया था। ऐ मेरे वतन के लोगों गीत को सुनकर जवाहरलाल नेहरू की आँखें भर आयीं थीं । प्रदीप जी ने इस गीत से हुई आमदनी युद्ध में विधवा कोष में जमा करने की अपील की थी । मुंबई उच्च नायायालय ने 25 अगस्त 2005 को संगीत कंपनी एचएमवी को इस कोष में अग्रिम रूप से 10 लाख जमा करने का आदेश दिया । आपकी पहचान 1940 में रिलीज हुई फिल्म 'बंधन' से हुई, हालाँकि सन् 1943 की स्वर्ण जयन्ती हिट फिल्म'किस्मत' के गीत 'दूर हटो ऐ दुनिया वालों हिन्दुस्तान हमारा है' ने आपको देशभक्ति गीत के रचनाकारों में अमर कर दिया । गीत के अर्थ से क्रोधित होकर तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने उनकी गिरफ्तारी के आदेश दिए । इससे बचने के लिये कवि प्रदीप को भूमिगत होना पड़ा ।

पाँच दशक के अपने पेशे में कवि प्रदीप ने 71 फिल्मों के लिए लिखे गीतों में फिल्म बंधन (1940) में, चल चल रे नौजवान, फिल्म जागृति (1954) में 'आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं झाँकी हिन्दुस्तान की', 'दे दी हमें आजादी बिना खड्ग बिना ढाल' और फिल्म 'जय संतोषी माँ' (1975) में 'यहाँ वहाँ जहाँ तहाँ मत पूछो कहाँ-कहाँ' है । इसी गीत को आपने फिल्म के लिये स्वयं गाया भी था ।

भारत सरकार ने आपको सन् 1997 में दादा साहब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया ।

कु. खशबू साहू
एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर (हिन्दी)

Author of the Century : 1

Saul Bellow

Saul Bellow, widely regarded as one of the 20th century's greatest authors was born on 10th June 1915, in Lachine near Montreal, Quebec in Canada. His parents had migrated from St. Petersburg, Russia to Canada, and he changed his name from Solomon Bellous to Saul Bellow. He decided to be a writer when he first read "Uncle Tom's Cabin" by Harriet Beecher Stowe. Chicago formed the backdrop of his various novels when his family had chosen the place to move and take refuge. As a Jewish his mother wanted him to become a Rabbi or a concert Violinist. Saul Bellow rebelled against "suffocating orthodoxy".

He started writing at a very young age, attended the university of Chicago and taught at Minnesota University. He completed his first novel "Dangling Man" in 1944. In 1941 he became a naturalized US citizen. He taught at Yale University, New York University, Boston University & Universities of Puerto Rico, Princeton etc. Bellow's characters are mostly Jewish, His characters reflect his own yearning for transcendence, a battle "to overcome not just ghetto conditions but also ghetto psychosis. "Twentieth Century has its own insanities" and the characters have heroic potential to stand against the negative forces of society, they wrestle which he calls "unutterable dismal" (a phrase from "The Dangling man") transcend. Often the characters are Jewish and have a sense of alienation or otherness. In 1993 Saul Bellow moved from Chicago to Brookline, Massachusetts, where he died on April 5, 2005 at the age of 89. He was buried at the Jewish cemetery in Vermont.

Bellow's major works include Dangling Man. (1944), The Victims (1947), The Adventures of Augie March (1953) Seize the Day (1956), Henderson, The Rain King (1959) Herzog and Humbolt's Gift and Ravel Stein. He is popular for his "Yiddish" rhythms (Jewish language). Bellow was awarded the Pulitzer Prize (1976) and Nobel Prize for literature in 1976. He is the only writer to win the National Book Award for fiction three times and was a recipient of the Foundations Lifetime "Medal" for Distinguished Contribution to American letters in 1990.

Dr. Tarlochan Kaur

Author of the Century : 2

Arthur Miller

Arthur Asher Miller, one of the leading playwrights of the 20th century was born on October 17, 1915 in Harlem, in the New York city. He was the second of the three children to Austrian Jewish parents (Polish Immigrants) His father was a successful women's clothing manufacturer, who lost everything in the economic collapse of the 1930s. Living through young adulthood during the Great Depression, Miller was shaped by the poverty that surrounded him. He experienced during Depression as to how human existence is vulnerable and fragile in the modern era. He graduated from high school but had to work in a warehouse so that he could earn money to attend the University of Michigan. He began to write plays while at the University. His first play to make it to Broadway, "The Man who had all the Luck "(1944) was a dismal failure, closing after only four performances. He thought to give up writing but with one more try. His play " All my Sons" won the New York Drama Critics Circle Award as the best play of 1947. It was his "Death of a Salesman (1947) which became his most enduring success. He won Pulitzer Prize for this play. His other plays, “The Crucible”, The American Clock, “The Misfits”, A View from the Bridge" acclaimed him as one of the leading playwrights of this century. He was also awarded "Jerusalem Prize” as well as "The Prince of Asturias Award”. Miller is also known for marrying Marilyn Munroe, Mary Slattern and Inge Morath He died on feb10, 2005 aged 90 in US.

Dr. Tarlochan Kaur

Author of the Century : 3

Khushwant Singh

Khushwant Singh, an Indian novelist, lawyer, politician, journalist, a creature of paradox, with his brassy humors was born on Feb, 2nd, 1915 in Hadley, British India (now in Pakistan). He is also considered as a "bridge" writer for India and Pakistan, is best known for his trenchant secularism, his humors and an abrading love for poetry. His famous works include A History of the Sikhs (1953), “Train to Pakistan” (1956) “Delhi - A Novel” (1990), “Ranjit-Singh : Maharaja of the Punjab”, (1963), “I Shall not Hear the Nightingale” (1959), Truth, Love and a little Malice (2002) and number of Collections of Short Stories, Poems, etc. Alma mator of Cout college, Lahor, St. Stephen's college in Delhi and Kings College, London, Khushwant Singh began his. professional career as a practicing lawyer in 1938. Apart from being a leading politician for the newly free India he was also popular for his editorial services. He edited 'Yojna’, an Indian Government Journal, The Illustrated Weekly of India. ‘The National Herald’ and The ‘Hindustan Times’. He was a member of Rajya Sabha from 1980 to 1986. Singh is known for his 'acid wit' his comparisons of social and behavioral characteristics of Indians and Westerns. He was awarded 'Padma Bhushan' in 1974 for his service to his country. In 1984, he returned the award in protest against the siege of the Golden Temple by the Indian army. In 2007, he was awarded the 'Padma Vibhushan' by the Indian govt. He was conferred with Punjab Ratan (2006) Sahitya Academy (2010) Fellow of King's College (2014) and Lifetime Achievement Award by Tata Literature live The Mumbai Litfest in 2013. Singh proclaimed himself as an agnostic which he revealed in his book. "Agnostic Khushwant (2011): There is no God" He was against Organized religion, An atheist he said "One can be as saintly person without believing in God and a detestable Villain Believing in him. In my Personalized religion, there is no God." He died his natural death on 20 March 2014, at the age of 99 and was cremated at Lodhi Crematorium. His last book, The Good, The Bad and the Ridiculous was published in 2013.

Dr. Tarlochan Kaur

First World War poetry : A Remembrance.

Dr. Tarlochan Kaur

Our senses get a jolt and nerves get tortured when we look back to the poetry written during the first world war i.e, from 1914-1918. The traumatic experiences, the humbug of militants, outrage and injustice that were heaped upon the common man were witnessed by poets like Wilfred Owen, Siegfried Scorn, Julian Crenel, Rupert Brooke, Isaac Rosenberg, Gilbert, Frankie and Albert. Paul crania. These poets (also known as soldier poets) used realism to expose the naked reality of dehumanized violence. Agonized andpained they have depicted the harrows and havoc unleashed upon the youth of England. Thee young men were sucked form their homes, college's farms, factories and streets by the "callous" rulers and were forced into the dark and filthy trenches. Their senses crippled due to the utter devastation of humanity which the war had caused and the poets depicted the ugliness and gruesome reality that led to victory of none rather it heaped upon them utter annihilation Many of the fine going men were sent to the front who died, some were physically intact when they returned but were mentally shell shocked. The old contentions of nobility were shattered in the battle field. Humanity was disfigured and fractured.

Wilfred Owen (1893-1918)

A soldier poet commented, "These elegies are to this generation in no sense consolatory. They may be to the next. All a poet can do today is warn. That is why the true poets must be truthful." I have compiled some of the poems by these war poets as a tribute to those soldiers who lost their lives, for the sake of freedom. We salute them.

Dr. Tarlochan Kaur

"Here Dead we lie"
There dead we lie
Because we did not choose
To live and shame the land from which we sprung
Life, to be sure
Is nothing much to lose
But Young men think it is,
And we are young.

A.E. Houeseman (1859-1936)

2. Bombardment
Four days the earth was rent and torn
By bursting steel
The houses fell about us.
These nights we dared not sleep,
sweating, and listening for the imminent crash, which meant our death.
The fourth night every man.
Nerve-Torfured, racked to exhaustion,
Slept, muttering and turtching,
while the shells crashed overhead
The fifth day there came a bush
we left our holes.
And looked above the wrackage of the earch to where the white clouds mved in

silent lines across the untroubled blue.

Siegfried Sassoon (1896-1967)

Attack

At dawn the ridge emerges massed and dun in the wild purple of the glowering sun, smoldering through spots of drifting smoke that shroud.

The menacing scarred slope

and one by one Tank creep and topple forward to the wire.

The barrage roars and lifts.

Then clumsily bowed with bombs

and guns and shovels and battle gear.

Men jostle and climb to meet the bristle gear.

Men jostle and climb to meet the bristling fire,

Lines of grey, Muttering faces, masked with fear,

They leave their trenches, going over the top,

while time ticks blank and busy on their wrists.

And hope, with fearful eyes and grappling fists Flounders in meed, O jesus, make it stop!

Exposure - (Excerpts)

Our brains ache in the moralized iced - eat winds that knife us ---

Worried we keep awake because the night is silent...

Low drooping flares confuse our memory of the salient

Worried by silence, Sentries whisper, curieous nervous.

Best nothing happens.

Wathcing, we hear the mad gusts tugging on the wire.

Like twitching agonies of men among its brambles.

Northward incessantly, the flickering gunnery rumbles, far off.

Like a dull rumour of some other war what are we doing here ?

Wilfred owen (1893-1918)

The Deserter

I am sorry I done it mayor'

we bandaged the livid face,

And led him out, ere the sun rose.

To die his death of disgrace.

The bottle Heads locked to the cartridge

The rifles steadied to rest,

As cold stock nestled at colder check

And foresight lined on the breast

"Fire! called the seargent major

The muzzles flamed as he spoke:

And the shameless soul of a nameless man went up in the cordite smoke.

Gilbert Franku(1884-1952)

Deptt of English.

गंभीर शख्सियत के बावजूद सत्यजित राय अत्यंत सरल थे

(फिल्म 'सद्गति' की कलाकार ऋचा ठाकुर के साथ बातचीत)

विश्व सिनेमा की महान हस्ती सत्यजित राय ने बंग्ला भाषा में बनायी अपनी महान फिल्मों के अलावा हिन्दी में भी 'शतरंज के खिलाड़ी', 'सद्गति' जैसी फिल्में बनायी है । 'सद्गति' दूरदर्शन के लिए बनायी गई टेलीफिल्म है, जिसका छायांकन 1980 के दशक के प्रारम्भ में छत्तीसगढ़ में रायपुर, महासमुन्द के आसपास के ग्रामीण इलाकों में किया गया है । महान उपन्यासकार प्रेमचंद की कालजयी रचना 'सद्गति' पर आधारित यह फिल्म ओमपुरी, स्मिता पाटिल सहित अन्य कलाकारों के भावप्रवण अभिनय के लिए हमेशा स्मरण की जाती रहेगी । इन कलाकारों में ज्यादातर छत्तीसगढ़ के रंगकर्मी-कलाकार सम्मिलित थे । भैयालाल हेड़ाऊ, सलिल दीवान, ऋचा मिश्रा आदि ने इस फिल्म में संवेदनशील भूमिकायें की थीं । ऋचा मिश्रा बाल कलाकार थीं, जिन्होंने स्मिता पाटिल की बेटी का चरित्र निभाया । ऋचा मिश्रा (अब डॉ. ऋचा ठाकुर) शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दुर्ग में नृत्य विभाग में प्राध्यापक हैं ।

पिछले दिनों शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग की फिल्म सोसायटी 'छायापट' द्वारा फिल्म 'सद्गति' का प्रदर्शन किया गया । 18 फरवरी 2015 को हुए इस फिल्म प्रदर्शन के अवसर पर डॉ. ऋचा ठाकुर भी उपस्थित थीं। फिल्म प्रदर्शन के बाद 'छयापट' के संयोजक डॉ. जयप्रकाश साव ने 'सद्गति' के निर्माण से जुड़ी स्मृतियों और फिल्म प्रक्रिया के अनुभवों को लेकर उनसे बातचीत की । किसी पूर्व योजना के बगैर हुई इस बातचीत के कुछ महत्वपूर्ण अंश यहाँ प्रस्तुत हैं --

डॉ. जय प्रकाश – फ़िल्म सोसाएटी 'छायापट' के इस आयोजन में आपका स्वागत है। सबसे पहले हम यह जानना चाहेंगे कि 'सद्गति' की शूटिंग छत्तीसगढ़ में किन स्थानों पर हुई?

डॉ. ऋचा ठाकुर : छत्तीसगढ़ में तीन अलग-अलग लोकेशन में सद्गति की शूटिंग की गई। रायपुर महासमुंद एवं बलौदा बाज़ार । सद्गति की पूरी टीम लगभग एक माह तक रायपुर में जिस स्थान पर रूकी थी वहा स्थान आज 'पहुना' के नाम से चिरपरिचित है।

उन दिनों मैं बहुत छोटी थी लेकिन मैं इसे अपने जीवन का सबसे बड़ा सौभाग्य मानती हूँ कि मुझे 'भारत रत्न' सत्यजित राय की गोद में बैठने, उनके साथ इतना समय बिताने तथा उनसे बहुत कुछ सीखने का सौभाग्य मिला।

डॉ. जयप्रकाश - सत्यजित रे जब कास्टिग के लिए आए तो उन्होंने पात्रों का चयन कैसे किया ? उसके बारे में कुछ बतलाइये ।

डॉ ऋचा ठाकुर – उन दिनों सूचना प्रसारण विभाग में श्याम सुन्दर शर्मा जी कार्यरत थे जिन्होंने फ़िल्म में पंडितजी की भूमिका निभायी थी । शर्मा जी की ही पहल पर सत्यजित राय रायपुर आये थे। उन्हीं दिनों मेरे माता पिता एक नाट्य संस्था संचालित किया करते थे। प्रेमचंद जी की सुप्रसिद्ध कहानी 'ईदगाह' पर एक नाटक का मंचन हम सब बच्चों ने किया जिसके संवाद 'सद्गति' में गोंड की भूमिका अभिनीत करने वाले भैय्या लाल हेड़ाऊ जी ने लिखे। 'ईदगाह' में सलिल दीवान मुख्य भूमिका में थे । वस्तुतः इस नाटक को देखने के पश्चात ही मुख्य बाल कलाकार के रूप में मेरा सलिल दीवान (जो आपके महाविद्यालय में कार्यरत डॉ. सपना शर्मा मैडम के बहनोई है) तथा चार पांच अन्य बच्चों का चयन किया गया।

दरअसल फिल्म में स्मिता पाटिल की बेटी की भूमिका के लिए उन्हें 10-11 वर्ष की बालिका की आवश्यकता थी। बाल विवाह उन दिनों सम्पूर्ण देश के साथ-साथ अंचल की भी महत्वपूर्ण समस्या थी। चूंकि मैं उसी उम्र की थी इसलिए मेरा चयन किया गया । वर्तमान में दिल्ली के राज्यपाल नजीब जंग उस समय रायपुर के कलेक्टर थे। उन्होंने भी लोकेशन सिलेक्शन में तथा अन्य सुविधाओं को मुहैया करवाने में बहुत सहयोग दिया तथा अधिकतर समय हम सब के साथ रहे।

'सद्गति' फिल्म की शूटिंग सिर्फ एक माह तक ही चली। मैं स्वयं बहुत छोटी थी, लेकिन एक्टिंग का शौक था। इसलिए मैं सारी चीजों को बहुत बारीकी से देखा करती थी। अभिनय के लिए सभी कलाकारों का डेडिकेशन ग़ज़ब का था। मुझे आज भी याद है कि अभिनय में सजीवता लाने के लिए फिल्म में ओमपुरी जी के जलने का दृश्य वास्तविक है । इसी तरह उन्होंने घसीटते हुए ले जाने तथा पीठ के लहुलूहान होने का दृश्य भी ओमपुरी जी ने स्वयं ही किया था।

शूटिंग में भाग लेने वाले सभी कलाकार अत्यंत

सहयोगी सहृदय थे। स्मिता पाटिल जी तो नहीं रही लेकिन ओमपुरी जी से मेरे आज भी सम्पर्क हैं । वो आज भी वे मुझे बिटिया और गुनिया कहकर ही पुकारते हैं।

मुझे याद है ओमपुरी जी एकदम गोरे थे। फिल्म की पृष्ठभूमि के अनुरूप उन्हे गहरे रंग का दिखाने के लिये कई जतन किये जाते थे। गरीब दिखने के लिए मेरे और उनके कपड़ों को मिट्टी लगायी जाती थी।

डॉ. जयप्रकाश – आप बहुत छोटी थीं लेकिन हम सब ये जानना चाहते हैं कि सत्यजित राय जी से आपकी क्या बातचीत होती थी? वे कैसे बोलते थे?

डॉ. ऋचा ठाकुर – गंभीर शख्सियत के होने के बावजूद वे अंत्यत सरल थे। वे कम बातें करते थे । संभवतः हिंदी भाषी प्रांत का न होने के कारण भी ऐसा संभव है। वे हिन्दी में कही गयी बात का जवाब बांगला में देते।

डॉ. जय प्रकाश - फ़िल्म के अन्य कलाकारों को वे अपनी बात कैसे समझाते थे?

डॉ. ऋचा ठाकुर - वे अपनी बात बांग्ला और अँग्रेजी में करते और साथ में एक्टिंग करके लोगों को समझाते ।

डॉ. जयप्रकश - 'सद्गति' फिल्म की शूंटिग के दौरान सत्यजित राय जी की पत्नी भी उनके साथ थीं?

डॉ ऋचा ठाकुर – जी हाँ, न केवल वे पूरे समय साथ रहीं, बल्कि यहाँ के लोगों की खान-पान पहनावा तथा दूसरी आदतों के बारे में काफी जानकारी एकत्रित की । वो एक अच्छी ड्रेस डिजाईनर भी थीं। उन्होंने रायपुर के गोलबाजार क्षेत्र में पहने जाने वाली ड्रेस स्टाईल पर काफी मेहनत की।

डॉ. जयप्रकाश – भारत रत्न सत्यजित राय के विषय में कहा जाता है कि 'लिविंग लिजेण्ड' थे। भारत के उन महान व्यक्तित्वों में से एक थे जो एक साथ अनेक विधाओं और कलाओं में निष्णात थे। जैसे रवीन्द्रनाथ टैगौर जो महान कवि रवीन्द्र संगीत के प्रेरक उपन्यासकार, चित्रकार और दार्शनिक थे। इसी तरह सत्यजित राय भी वर्सेटाईल व्यक्ति थे। वे महान फिल्मकार, बाल कथाकार, लेखक चित्रकार और कलाकार थे। उन दिनों उनके बनाये हुये स्केचेज़ पत्रिकाओं में छपते थे। वे अपनी फिल्मों की स्क्रिप्ट के अगल बगल में डूडलिंग बनाया करते थे जिससे पता चलता है कि एक महान कलाकार किस तरह छोटी से छोटी बातों को ध्यान में रखकर कार्य करता है। इतनी सारी विविध प्रतिभाओं के कारण सत्यजीत राय वस्तुतः सत्यजित राय थे ।

आपने उन्हें बेहद नजदीक से देखा है, हमें ये जानने की उत्सुकता है कि उनकी शाख्सियत कैसी थी? उनका स्वभाव कैसा था?

डॉ. ऋचा ठाकुर – उनका व्यक्तित्व बहुत आकर्षक था उनका कद छह फुट का था ।

डॉ. जय प्रकाश – ऐसा कहा जाता है कि भगवान बुद्ध भी छह फुट के थे।

डॉ. ऋचा ठाकुर – जी हाँ सत्यजित राय जी का व्यक्तित्व बहुत भव्य था। किंतु व्यवहार उतना ही सादा और सरल मुझे स्मरण है कि जब वे हम बच्चों के चयन के लिये ईदगाह नाटक देखने आये थे तो सादी दरी पर सबके साथ बैठे थे। उनके कुरते की बाँह थोड़ी मुड़ी और फटी हुई थी पर इन सब बातों की उन्हें कोई परवाह नहीं थी। किंतु कार्य के प्रति समर्पण का भाव अद्भुत था। वे अपनी फिल्म की एक-एक दृश्य के स्केच बनाते। उनके पास हमेशा पूरी फिल्म के दृश्यों की स्केच बुक तैयार रहती थी। यदि स्मिता पाटिल दरवाज़े के पास खड़ी होकर रो रही है तो उसका भी स्केच उन्होंने बनाया था। एक दृश्य में मुझे और स्मिता पाटिल को रोते हुए दिखाया गया था। स्केच में जिस छोटी बच्ची को दिखाया गया था उसके बाल बहुत बड़े थे जबकि मेरे बाल बहुत छोटे थे। तब सत्यजित राय जी ने स्केच बदल दिया और मेरे भी बालों में मिट्टी वगैरह लगवाकर उन्हें पीछे किसी तरह बांधा गया। इस अवसर पर सत्यजित राय की कही बात को मैने जीवनभर के लिये गांठ बांध लिया। उन्होंने कहा था कि लड़कियों की सुन्दरता तो उनके लंबे बालों में ही होती है। इस बात का ऐसा असर हुआ कि मैने हमेशा के लिए बालों को कटवाना बंद कर दिया।

वे बहुत जौली इन्सान थे । साथी कलाकारों से हंसी-मज़ाक कर वे वातावरण को हमेशा स्वाभाविक रखने का प्रयास करते थे ।

मुझे याद है फिल्म में एक स्थान पर स्मिता पाटिल को देख-देखकर मुझे भी रोने का अभिनय करना था। चूंकि ओमपुरी जी सामने खड़े होकर मेरी नकल कर रहे थे। कुछ देर तक सब देखने के बाद सत्यजित रायजी ने बाँगला में कहा - अब तुम मेरे हाथों से मार खाओगी और वे खुद बताने लगे कि मुझे कैसे एक्टिंग करनी है पर वे भी रोने की जगह जोर-जोर से हँसने लगी। अब मेरी बारी थी मैंने कहा

अब ... तो वे बोले (अब यानि अब तुम मुझे मार लगाओगी।) उस महान व्यक्तित्व की यह सरलता मुझे हमेशा याद आती है।

डॉ. जयप्रकाश – सत्यजित राय जैसे महानतम निर्देशक, चूंकि आप बहुत छोटी थीं इसलिए उनके साथ काम करने में आपको कभी दिक्कत तो नहीं हुई?

डॉ. ऋचा ठाकुर – नहीं कभी नहीं। उनका काम करने का तरीका बड़ा सरल और स्वभाविक था। फिल्म में वास्तविकता लाने के लिए उन्होंने अंचल की पृष्ठभूमि को अपनाया। उन्होंने मुझसे ही पूछा कि यहाँ की लड़कियाँ कौन से खेल खेलती हैं। मैंने बताया - बिल्लस और फिर चौक बनाकर बिल्लस खेलकर भी बताया और इस तरह वह बिल्लस वाला दृश्य फिल्म में आया।

डॉ. जयप्रकाश – जैसे मैडम ने बताया कि प्रेमचंद जी के पुत्र अमृत राय साथ में थे। अमृतराय जी भी हिंदी के सुप्रसिद्ध रचनाकारों और बुद्धिजीवियों में से एक थे वे एक संपूर्ण लेखक थे। उनकी शख्सियत के बारे में बतलाइये।

डॉ. ऋचा ठाकुर– अमृतराय जी बेहद गंभीर व्यक्तित्व के थे और बहुत कम बातें करते थे। शायद एक या दो बार ही उनसे बातें हुई। हम सब काफी छोटे थे उनसे थोड़ा डर भी लगता था।

डॉ. जयप्रकाश – इतनी मेहनत के पश्चात जब फिल्म बनकर तैयार हुई तो रिलीज होने के बाद आपको कैसा लगा? लोगों की प्रतिक्रिया कैसी थी ?

डॉ. ऋचा ठाकुर– फिल्म 1985 में रिलीज़ हुई।

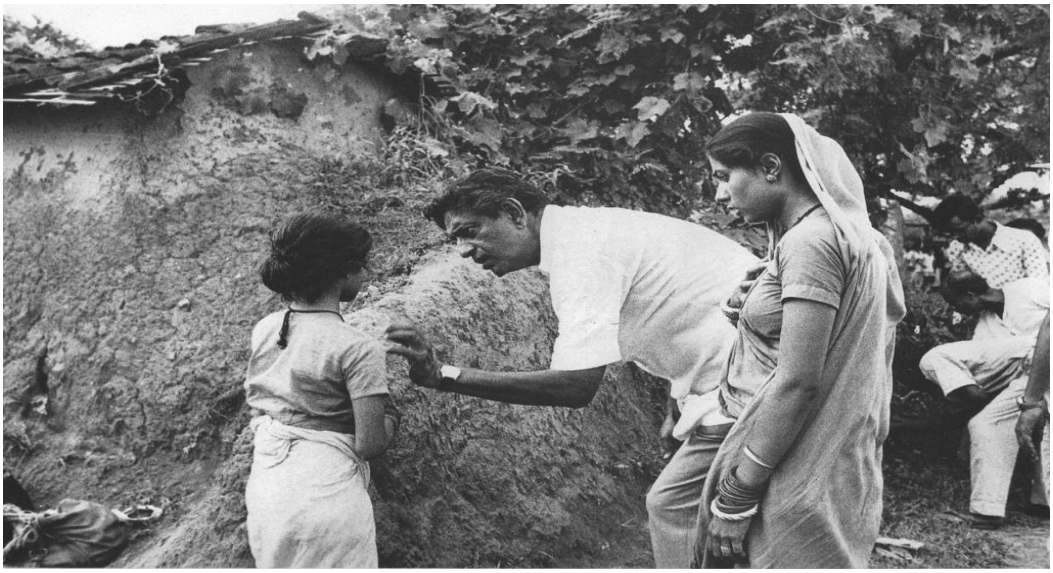

ऋचा ठाकुर को फिल्म का दृश्य समझाते हुए सत्यजीत राय

तब मैं 11 वीं कक्षा में थी। स्मिता पाटिल जैसी महान अभिनेत्री के बचपन की भूमिका निभाने के कारण सराहना मिली। पेपर और पत्रिकाओं में फोटो छपते तो अच्छा लगता था, परिचित अपरिचित सभी कहते कि भाग्यवान है जो इतने बड़े कलाकारों के साथ काम करने का अवसर मिला । मैं आज भी स्वयं को बहुत भाग्यवान मानती हूँ कि मुझे भारत रत्न सत्यजित राय एवं भारत के दूसरे श्रेष्ठ कलाकारों के साथ काम करने का अवसर मिला। यह अनुभव मेरे जीवन की सबसे श्रेष्ठ पूँजी है।

डॉ. जयप्रकाश – निश्चित तौर पर यह आपके लिये और हम सब के लिए गर्व की बात है । डॉ. ऋचा ठाकुर आप हम सब के बीच आयीं एवं फिल्म सद्गति एवं सत्यजित राय से जुड़ी स्मृतियों को ताज़ा किया। इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद ।

(लिप्यंतर : डॉ. ज्योति धारकर)

प्रीतम साहू

हमारा दुर्ग - एक नज़र में

दुग का पहल धारा नगर क नाम स जाना जाता था । उस समय दुर्ग के राजा महमदेव जी देव थे । महमदेव राजा के बाद दुर्ग के राजा हैहयवंशीय जगतपाल जी बने । जगतपाल गजपति भी कहलाते थे, जो बड़े प्रतापी राजा थे । गजपति कहने के पीछे एक बात यह थी कि वे आजानुबाहु थे अर्थात् राजा जगतपाल के हाथ उनके घुटने के नीचे तक आते थे । अपने जीवनकाल में ब्रह्म मुहूर्त में ही स्नान कर लिया करते थे । वे स्नान करने दुर्ग धारा नगर से छातागढ़ तथा दुर्ग से राजिम तक जाते थे । वहाँ तक भूमिगत सुरंग बनायी गयी थी । उसी पथ से धारा नगर दुर्ग का मुख्यालय निवास स्थल छातागढ़ रहा है । राजिम में भगवान राजीव लोचन का मंदिर भी राजा जगतपाल द्वारा बनाया गया था । इस संबंध में प्रमाण भी मिलते हैं । कहा जाता है कि राजिम में भगवान की एक भक्तिन राजिम बाई रहती थी, जो तेल बेचने का काम करती थी । तेल बेचने जाते समय एक दिन उसे रास्ते में एक गोल-मटोल सुंदर सा दुधिया पत्थर चमकता हुआ मिला जिसे उसने अपने तेल की कुंडी में डाल दिया । उस दिन उसका तेल खूब बिका। बिक्री का पैसा घर जाकर उसने अपनी सास को दिया । इसी तरह नित्य तेल की टोकनी में रख लेती थी । तेल खूब बिकता था, किन्तु तेल घटता ही नहीं था । घर आने पर रोज पैसा जाकर अपनी सास को दे देती थी । फिर भी तेल बचा ही रहता था इस पर उसकी सास को उसके आचरण पर संदेह होने से उसने अपने लड़के से शिकायत की । लड़के ने संदेह के आधार पर राजिम बाई को घर से निकाल दिया । राजिम बाई अलग होकर तेल घानी बनाकर तिल्ली पेरकर तेल निकाल कर तेल बेचने लगी । तेल पूर्व की तरह खूब बिकता रहा । एक दिन स्वप्न में भगवान विष्णु ने राजिम से कहा कि गोल मटोल पाषाण मेरा रूप है, चिंता मत करो । जब कभी राजा जगतपाल तुमसे इस शिला को मांगे तो दे देना । वे मेरा मंदिर बनवाएंगे । तब उस मंदिर में तुम्हारे (राजिम बाई) नाम का पहले उपयोग होगा, मेरा (भगवान विष्णु) बाद में । इधर राजा जगतपाल को भी स्वप्न में ही भगवान विष्णु ने कहा कि जाओ राजा तुम मेरी भक्तिन राजिम बाई से मेरा गोल मटोल प्रतिमा यह कहकर मांग लो कि राजिम बाई तुम्हारा नाम मंदिर में पहले रहेगा, बाद में भगवान विष्णु का । स्वप्न टूटने पर राजा ने इसा प्रकार युक्त का । फलतः भगवान विष्णु का गाल मटोल प्रतिमा को प्राप्त कर लिया एवं मंदिर निर्माण का संकल्प लेकर जहाँ आज भगवान विष्णु की मूर्ति है वहाँ प्रतिस्थापित कर मंदिर का निर्माण किया । भगवान द्वारा जैसे स्वप्न में कहा गया था वैसे ही मंदिर का नाम राजिम लोचन रखा । बाद में बोलचाल में यह नाम राजीव लोचन हो गया । बाद में भगवान विष्णु की सुंदर प्रतिमा स्थापित की गई । मंदिर परिसर में आज भी राजा जगतपाल की प्रतिमा प्रस्थापित है । मंदिर के पास जहाँ राजिम बाई तेल घानी चलाकर तेल निकालती थी उस परिसर में राजिम बाई की प्रतिमा प्रस्थापित करायी गई थी ।

राजा जगतपाल के संबंध में एक महत्वपूर्ण जानने योग्य बात यह है कि उन्होंने विषैले डंक वाले भंवरे पाल रखे थे जो दुश्मनों से बचाव के लिये सैनिक का काम करते थे । दुश्मनों को अपनी पैनी डंक से छेदकर भँवरे घायल कर देते थे । राजा जगतपाल का कचहरी धमधा में भी था । दुर्ग जिला बनने के पूर्व चेदिवंश के राजपूतों का राज्य था । बाद में भोंसले राजाओं का साम्राज्य आया । भोंसले सरकार में दुर्ग के मालगुजार शिवराज सिंह हुए । इन्हीं के शासन काल में भोसलें राज खत्म हुआ और अंग्रेजों का राज्य आया । पहला बंदोबस्त ही वेट साहब का हुआ।

सन् 1906 में दुर्ग जिला बना । उसके पहले जब दुर्ग खामगांव था तब भंडारा जिला में शामिल था । उस समय दुर्ग तहसील भी नहीं था । दुर्ग जब रायपुर में शामिल हुआ तब दुर्ग का तहसील एवं जिला रायपुर था ।

दुर्ग की पूरी राजस्व वसूली रायपुर खजाने में जमा होती थी । दुर्ग जिला कलेक्टर कार्यालय 1907 में बना । कलेक्टर कार्यालय में पत्थरों की जोड़ाई, सीमेंट से नहीं हुई थी । जोड़ाई, चूना, गोंद, बेल गुदा, सन, रेत को मिलाकर बनाए मसाले से हुई है । आज लगभग 108 वर्ष बाद भी कार्यालय अटल खड़ा है । इसी तरह विक्टोरिया ब्रिटिश शासन के कार्यकाल में सन् 1911 में इंडिया गेट बना था। वह आज हिन्दी भवन के नाम से जाता है । जिला बनते ही सरकारी अधिकारियों के लिये बंगला बनाने, भूमि अर्जित करने की कार्यवाही की गई । दुर्ग के कसारीडीह के ग्राम की भूमि 350 एकड़ अर्जन कर ली गई । इसी भूमि पर वर्तमान में पं. रविशंकर शुक्ल स्टेडियम, चौपाटी,

राजेन्द्र पार्क, कंपनी गार्डन, पॉलीटेकनिक कॉलेज, सेंट्रल जेल, मुर्गी फार्म, 1972 में पोस्ट मार्टम हाउस, चीरघर, मानस भवन, गिरजाघर, नया बस स्टैण्ड, पंचायत, पालीटेकनिक, कॉलेज भवन, आदर्श कन्या विद्यालय, साक्षरता भवन, दाऊ रघुप्रसाद नेशनल हाई स्कूल, विधि महाविद्यालय, छोटी सिविल लाईन निर्मित है । दुर्ग जब जिला बना उस समय दुर्ग के जिलाधीश एस.एम. चिटनबीस थे, जिनके नाम पर कचहरी से स्टेशन तक मार्ग का नाम, चिटनबीस सड़क रखा गया । दुर्ग जिला कचहरी में एक छोटा सा वकील कक्ष था, जहाँ 15-16 वकील ही वकालत करते रहे हैं । दुर्ग जिला पहले चार तहसीलों में विभक्त हुआ था । दुर्ग, बालोद, बेमेतरा, राजनांदगाँव । दुर्ग जिला में दुर्ग राजनांदगांव, खैरागढ़, छुईखदान, पानाबरस, कवर्धा, बेमेतरा, गंडई, डौंडीलोहारा, सहसपुर लोहारा में जमींदारी थी । विशेष जानकारी नहीं है पर गांधी चौक के सम्बन्ध में गांधी चौक नाम क्यों पड़ा? इसका सीधा उत्तर यह है कि इस चौक पर दुर्ग के कांग्रेसियों ने 31 दिसम्बर 1932 को ठीक रात 12 बजे राष्ट्रीय ध्वज फहरा दिया था । सुबह राष्ट्रीय ध्वज लहराते हुए देखकर खुशी से नाचने लगे । जनता ने इस चौक का नाम गांधी चौक रख दिया। यह पहले पाँच कंडील कहलाता था क्योंकि इस चौक पर नगर पालिका द्वारा रोशनी के लिए रोज शाम को पाँच लेम्प मिट्टी तेल से भरकर काँच के बने कंडिलों में रखकर जलाये जाते रहे । स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान इसी चौक पर जन नेताओं की आम सभाएँ होती थीं । महात्मा गांधी का आगमन 22 नवम्बर 1933 दिन बुधवार को दुर्ग नगर के मोती ग्राउंड में हुआ था । भारी भीड़ थी । पं. जवाहर लाल जी नेहरू एवं उनके साथ बर्मा के प्रधानमंत्री 16.12.1957 को भिलाई आए थे । भारत के राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का 4 फरवरी 1959 दुर्ग भिलाई में आगमन हुआ था । दुर्ग जिले में देव-देवियों के अनेक स्वंयभू प्रकट दर्शनीय मंदिर है, जिनमें चंडी देवी, शीतला देवी, किला मंदिर में भगवान बजरंग बली की मूर्ति। पूर्व दुर्ग जिला वर्तमान राजनांदगाँव के डोंगरगढ़ के माँ बम्लेश्वरी मंदिर, वर्तमान कवर्धा के भोरमदेव, धमधा क्षेत्र के दानी कोकड़ी के शिव मंदिर, भिलाई के पूर्व आमदी गांव, सेक्टर 9 के भगवान हनुमान जी, बेरला ब्लॉक के सोमनाथ मंदिर एवं वनाचंल क्षेत्रों के अनेक पहाड़ियों की रम्य गुफाओं एवं शिखरों पर कई मंदिर है । नदी में शिवनाथ नदी, ताल तलैया में दुर्ग के किला मंदिर के पीछे सिंदूरी ताल था । यह ताल पट चुका है । दुर्ग के हरनाबांधा ताल में अँग्रेजों के काल में हाथी को नहलाते थे । हाथी के पैर में जंजीर बांध कर हाथी को नहलाते थे जिससे जंजीर का स्पर्श पारस पत्थर से हो और लोहे की जंजीर सोने की हो जाती थी । क्योंकि कहा जाता है इस तालाब में पारस पत्थर था । एक मज़ार भी किला मंदिर के पीछे, आज भी जीर्ण-शीर्ण स्थिति में स्थित है।

एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर (इतिहास)

धर्मेन्द्र वर्मा

भारतीयता पर हावी होता संप्रदायवाद

हमारा भारत वष एक पंथ निरपेक्ष देश है यहाँ का मूल पंथ भारतीय होता है तथा सर्वोच्च ग्रंथ भारत का संविधान है, जो विभिन्न आक्रमणकारियों एवं देश के ही पुराने अनीति संगत, जबरन अधिरोपित नियमों से भारतीय जनमानस की रक्षा करते आ रहा है । हमारा संविधान विगत 60 से भी अधिक वर्षों से भारतीय समाज की अनेकता को एकता में पिरोये हुए है । यह संविधान हमारे राष्ट्र का विगत वर्षों से सफल संचालन करते आ रहा है ।

हमारे संविधान ने सभी भारतीयों को समता, स्वतंत्रता, न्याय जैसे मौलिक अधिकार प्रदान किये हैं । प्रत्येक भारतीय को अपनी इच्छा के अनुसार पूजा-पद्धति स्वीकारने एवं आवश्यकता पड़ने पर इच्छा अनुसार नकारने का पूरा हक प्रदान किया है । किसी भी व्यक्ति को जबरन किसी पंथ में दीक्षित नहीं किया जा सकता या किसी को किसी पंथ को मानने से रोका नहीं जा सकता । यह मनुष्य के मन की पवित्रता का विषय है ।

किसी व्यक्ति का मन मज़ार पर चादर चढ़ाने से संतुष्ट होता है, कोई मंदिर दर्शन से, कोई बुद्धविहार, चर्च, मस्जिद से । अतः यह उसका स्वयं का विवेक है । इसलिए कोई भी पंथाधिकारी किसी भी मनुष्य पर अपने पंथ विचार थोप नहीं सकता ।

आज 21 वीं सदी में आकर भी भारत के युवाओं को बहकाने की साजिश कुछ क्षेत्रीयतावादी एवं संकीर्ण भाषावादी लोग करते हैं, जो कि हमारे देश के समन्वयवादी चरित्र पर आघात है ।

भारत की यह विडम्बना है कि जाति की तरह अजन्मे बच्चे पर भी धर्म या पंथ (जैन, बौद्ध, हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, पारसी) शब्द चिपक जाता है जो मरने के बाद ही छूट पाता है ।

यह व्यवस्था स्वतन्त्रता के अधिकार का हनन है । इसके स्थान पर ही संविधान में किसी भी वयस्क व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार धर्म बदलने, पंथ बदलने, मान्यता बदलने एवं पूजा पद्धति बदलने का सबल अधिकार प्रदान किया है ।

मैं तो यह मानता हूँ कि अगर मेरे पिता ने मेरे पैदा होने पर मुझे किसी धर्म से बाँधा तो उन्होंने गलत किया । उनको चाहिए था कि वो मुझे जन्म से सभी धर्मों का समान ज्ञान प्रदान करते उसके बाद वयस्क होने पर मुझे स्वतंत्र रूप से अपना धर्म चुनने को कहते । तब मैं अपनी शारिरिक एवं मानसिक स्थिति के आधार पर अपने लिए उपयुक्त धर्म का चयन करता और उस धर्म के प्रति गौरव महसूस करता, न कि बाह्य तंत्र के प्रति।

धर्म शब्द ही स्वयं में पवित्रता धारण किये हुए है । धर्म प्रकृति के बंधे-बँधाये नियम हैं । धर्म मनुष्य के लिये हमेशा कल्याणकारी होता है । यह सभी मनुष्यों प्राणियों पर समान रूप से लागू होता है । धर्म की पवित्रता उसको सही और शुद्ध रूप में धारण करने में है, न कि उसको दिखावा करने या किसीको जबरन मनवाने में ।

वर्तमान समय में लोग जिस भी धर्म को मान रहे हैं, उसके प्रति उन सबका समान रुझान होता है । आस्था, श्रद्धा, ध्यान, ज्ञान, पाप, पुण्य को सभी धर्मों में समान आदर प्राप्त है केवल पूजा पद्धति का अंतर होता है ।

वस्तुतः धर्म के दो मौलिक स्वरूप है -

1. आध्यात्मिक या मानसिक
2. भौतिक या लोक व्यावहारिक

वैसे तो सभी पंथों, धर्मों में मानसिक या आध्यात्मिक विकास के लिखित प्रमाण समान रूप से मौजूद हैं, पर सभी जगह इनका व्यावहारिक पक्ष समान नहीं है । किसी भी धर्म का होने से पहले हरेक भारतीय किसी जाति का सदस्य होता है । हमारे देश में बहुत सारी ऐसी जातियाँ है जिन्हें आज तक उनकी जनसंख्या के अनुपात में उनके सामाजिक - राजनीतिक एवं आर्थिक अधिकार नहीं मिल पाये है । अधिकांश लोग अपनी आर्थिक उन्नति के लिए धर्मान्तरण करते है, कुछ अपने सामाजिक उन्नति के लिये कुछ लोग किसी धर्म के सामाजिक प्रतिबंध से तंग आकर ।

धर्मान्तरण का कारण चाहे जो भी हो यह एक मूलअधिकार है तथा स्वयं के विवेक और सोच का मामला है, दूसरों की इच्छाओं का नहीं ।

इस पर कोई संस्था केवल इतना कर सकती है कि अपनी-अपनी संस्था की कुरीतियों को त्याग कर अपने नियमों को सुधारकर वह लोगों के मध्य प्रचारित एवं प्रसारित कर सकती है परन्तु उस पर अंतिम फैसले का हकदार व्यक्ति स्वयं होगा ।

धर्म तथा सच्प्रदाय में अंतर

धर्म प्रकृति का नियम है जो सभी पर समान रूप

से लागू होता है चाहे वो जीवित हो या निर्जीव, मनुष्य हो या जन्तु । जैसे - आग का धर्म स्वयं जलना और जलाना है वह किसी व्यक्ति विशेष के लिये अपना व्यवहार नहीं बदलता ।

इसी तरह जल का धर्म खुद स्वच्छ रहना और दूसरे को भी स्वच्छ करना है । इसके लिये वह अमीर-गरीब या जाति-पाति नहीं देखता है ।

अतः मनुष्य का धर्म भी उसके मानव बने रहने में ही है, दानवों जैसे व्यवहार करने में नहीं ।

सम्प्रदाय में जो लोग होते हैं

वे किसी तरह की अपनी पुरानी मान्यताओं को मानने वाले लोगों का समूह होता है जिसमें धर्म की बातें हो भी सकती है और नहीं भी । ये समूह प्राकृतिक धर्म का पालन पूरी तरह से कर भी सकते हैं या नहीं भी ।

लोग आज भले ही सम्प्रदाय (हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, आदि) को धर्म समझने लगे है । लेकिन यह प्राकृतिक धर्म से बिल्कुल भिन्न है । इसलिए संप्रदाय है । अतः आज जरूरत है कि हम सच्चे धर्म और सम्प्रदाय के भेद को समझे और दोनों की ही अच्छी बातें जो लोगों और समाज (मनुष्य) के हित में हों उन्हें अपनाये । प्रचार-प्रसार समानता का हो, सुविचारों का हो न कि खराब तथा बिना तर्क के मान्यताओं का ।

धर्म और सम्प्रदाय वही अच्छा होगा जो लोगों का कल्याण करेगा, सबकी समान उन्नति करेगा ।

हमारी आस्था किसी और के लिये अस्त्र न बने,
श्रद्धा को श्रद्धा ही रहने दे वो किसी के लिए शस्त्र न बने ।
सम्प्रदायवादी होना अच्छी बात हो सकती है
पर किसी पर जबरन लादने जैसी बुरी बात न बने ।
धर्म तो हमेशा शुद्ध होता है, ये हमारे द्वारा अशुद्ध न बने ,
सदा खुश रहें और रहने दें,
खुद भी जिये और दूसरो को भी जीने दें ।

एम.एस.सी. चतुर्थ सेमेस्टर (भूगर्भ शास्त्र)

मनी राम कश्यप

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गुरु शिष्य संबंध

वर्तमान परिस्थिति में गुरु-शिष्य के रिश्तों में परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है, जिसके अनेक कारण हैं। छात्र-छात्राओं में बढ़ती अनुशासनहीनता और शिक्षकों में बढ़ती धनलोलुपता दोनों पक्षों में प्रमुख कारण हैं। गुरुकुल की परंपरा तो अब रही नहीं अतः इसके लिए गुरुओं के साथ-साथ परिवार और समाज का वातावरण भी प्रभावी कारक है।

आजकल अधिकांश व्यक्ति अतिशीघ्र थोड़े परिश्रम से बहुत कुछ पा लेना चाहते हैं क्योंकि समाज में श्रेष्ठता का मापदण्ड भौतिक सुख-सुविधायें और बाहरी चमक-दमक है। अतः सच्चाई और ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाता है और झूठ फरेब करने वाले फल-फूलकर समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं।

बालक सर्वप्रथम अपने घर में संस्कार प्राप्त करता है। कच्ची मिट्टी की तरह उसका कोमल मन वही आकृति प्राप्त कर लेता है जो वह अपने आस-पास देखता है और यहीं से उसके अनुशासन की पाठशाला प्रारम्भ होती है। घर का वातावरण प्रतिकूल होने पर उसका कोमल मन मित्रों की तलाश करता है और कुसंगति हो जाने पर वह उच्छृंखल हो जाता है। इसके विपरीत अनुकूल परिस्थितियों वाले बालक घर में ही अच्छे संस्कार प्राप्त कर अनुशासित बन जाते हैं। वे अपने से बड़ों का आदर करना सीखते हैं।

जब वे शाला में प्रवेश लेते हैं तो विरासत के रूप में उनके अच्छे या बुरे संस्कार ही उनके पास होते हैं। एक आदर्श शिक्षक अच्छा मार्गदर्शक भी होता है जो संस्कार विहीन बच्चों को भी अपने प्रेरणास्पद व्यवहार से आचरण की सभ्यता सिखा सकता है। कोरे उपदेश को विद्यार्थी ग्रहण नहीं करते। शिक्षक जो कहता है पहले उसे स्वयं उन आदर्शों को अपने आचरण में ढालना होता है तभी विद्यार्थी उसे सही ढंग से अपनाते हैं।

जब शिक्षक सिर्फ उपदेश देते है तो अपनी उम्र से अधिक समझदार आज के बच्चों के मन में यहीं से द्वन्द्व प्रारंभ होता है और वे अनुशासनहीनता की ओर अग्रसर होते हैं।

अभिप्राय यह है कि गुरु शिष्य दोनों के विवेकपूर्ण और शिष्ट व्यवहार से ही रिश्तों में मिठास संभव है और समयानुसार यही प्रासंगिक है।

एम.काम. द्वितीय सेमेस्टर

अनिल कुमार गुप्ता

उपासना और उपवास

मनुष्य अन्य प्राणियों से भिन्न है । इसका एक ही कारण है, वह है ज्ञान । अन्य प्राणियों की तुलना में ज्ञान की अधिकता ही मानव को अन्य जीव जंतुओं से पृथक करती है । ज्ञान का होना मनुष्य के लिये महत्वपूर्ण तथ्य है । परन्तु ज्ञान यथार्थ होना चाहिए । कहा जाता है - सत्य और असत्य को असत्य मानना या जानना, ज्ञान है । जीव जो माने वह है मानव । मानव शब्द से भी स्पष्ट होता है, मानना अर्थात मानने वाला । सत्य ज्ञान अभिलाषी मानव होता है ।

यदि हम उपासना और उपवास को समझने का प्रयत्न करतें तो हमें देखना होगा कि उपासना और उपवास में क्या सम्बन्ध है? इसकी सही परिभाषा क्या है? सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण बात तो यह है कि इसे हमें जानने की जरूरत क्यों है। हम यहाँ सभी सवालों के जवाब जानने का प्रयत्न करेंगे कि क्या उपासना और उपवास में सम्बन्ध होता भी है या नहीं । सर्वप्रथम हम शब्दों के गठन पर विचार करते हैं ।

उपासना शब्द से साधारणतः दो शब्द सामने आते हैं, पहला उप अर्थात समीप या पास और दूसरा आसन अर्थात बैठना । इसका अर्थ हुआ समीप बैठना । समीप बैठना से स्पष्ट होता है किसके समीप बैठना । ईश्वर के समीप हम जानते हैं जगत में ऐसा स्थान नहीं जहाँ ईश्वर व्याप्त न हो क्योंकि ईश्वर सर्वव्यापी होता है । अब हम ईश्वर की प्रकृति पर नहीं जायेंगे क्योंकि ईश्वरादि गुण अत्यधिक वृहद विचारणीय तथ्य है । तात्पर्य यह है उपासना वह क्रिया है, जिसमें हम यह मान के चलते हैं कि हमारे समीप ईश्वर है और हम उसके समीप। यहाँ प्रश्न उठता है कि ईश्वर क्या है, ईश्वर अर्थात सत्य जिसको हमें जानना है, यदि हम गणित के विद्यार्थी है तो मान लो कोई प्रमेय है जिसके बारे में सोचना है, विचार करना है । ऐसी सभी विषयों के बारे में सोचा जा सकता है । सभी समस्याओं के बारे में यह क्रिया संभव है । चाहे वह क्यों न शांति का क्षेत्र हो या राजनीति का क्षेत्र हो या विश्व कल्याण का क्षेत्र हो । हमने अपनी परिभाषा में स्पष्ट कर दिया है कि इश्वर के समीप बैठना उपासना है, तो हमें यह भी सिद्ध करना है, कि जो प्रमेय हमने लिया है वह ईश्वर है तभी हमारी परिभाषा पूर्णतः स्पष्ट और शुद्ध होगी । ईश्वर की परिकल्पना का कोई यहाँ नवीनतम विचार न करते हुए विचारकों व ऋषियों की कही हुई बातों से समझते हैं ।

पदार्थ जो ज्ञान से जाने जाते हैं उन सबका आदिमूल परमेश्वर (ईश्वर) होता है। (महर्षि दयानंद सरस्वती) वह प्रमेय जिसे हम ज्ञान से जानना चाहते हैं उसका आदि मूल ईश्वर है, यदि इसका मूल ईश्वर है तो निःसन्देह वह प्रमेय भी ईश्वर है, यदि हम अपनी खुद के विषयों का चिन्तन करते हैं तो वह क्रिया उपासना कहलाएगी । सत्य को जानने के प्रयास में ऋषियों के योगाभ्यास को भी उपासना कहा गया है ।

अब बात आती है उपवास की । जो परिकल्पना आज निहित है उपवास की उस पर टिप्पणी नहीं करते । उपवास दो शब्दों से मिलकर बना हुआ है या दो शब्दों का संक्षिप्त रूप है । वह है उपासना तथा आावास । यहाँ उपासना से उप शब्द तथा आवास से वास शब्द का मेल रूप उपवास है । इसका अर्थ साधारणतः यह हुआ उपासना हेतु निति आवास (शांतिमय) या निर्मित समय या वातावरण उपवास कहलाता है । सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में उद्यत रहना चाहिए । (स्वामी दयानंद सरस्वती)

अध्यात्म की दृष्टि से शांतिमय वातावरण में ईश्वर की कल्पना करते हुए अलौकिक आनन्द का अनुभव करना उपासना है । या किसी विषय वस्तु को स्वज्ञान से उसकी सत्यता को जानने हेतु विषय वस्तु (ईश्वर) को समीप जानकर बैठना तथा ऐसे तथ्यों पर विचार करना जो हमारे विषयों पर केन्द्रित हो, नयी सोच जो नयी अवधारणा को जन्म दे, नये सिद्धान्त आदि के बारे में शरीर रूप को भूलकर अपना सर्वस्व ज्ञान, ध्यान विषय वस्तु पर केन्द्रित करने की क्रिया उपासना है तथा उपासना हेतु निर्मित वातावरण या आवास उपवास है ।

बी.एस.सी. भाग - तीन (गणित)

भोजराज आदित्य

भाग्य - कुण्डली और मेडिकल कुण्डली

भारत एक अनूठा दश है । यहाँ का सस्कृति एव रीति-रिवाजों का अपना अलग महत्व है । कहते हैं भारत में विवाह दो व्यक्तियों का नहीं वरन दो परिवारों का मिलन होता है । भारत में विवाह-पूर्व वर-वधू की कुण्डली मिलान की परम्परा रही है । यहाँ के लोग भाग्य-कुण्डली को अधिक महत्व देते हैं परन्तु मेडिकल कुण्डली को नहीं, जो अति चिन्तनीय है ।

मेडिकल कुण्डली से तात्पर्य भावी वर-वधू की स्वास्थ्य सम्बन्धी उचित जानकारी अथवा अनुवांशिक परामर्श से है । एक सफल व सुखद वैवाहिक जीवन में मेडिकल कुण्डली का उतना ही महत्व है जितना कि भाग्य कुण्डली का । आजादी के बाद देश में शिक्षित लोगों की संख्या समाज में बढ़ी तो है, पर शिक्षित लोग भी मेडिकल कुण्डली के स्थान पर भाग्य-कुण्डली को ही तरजीह देते आ रहे हैं ।

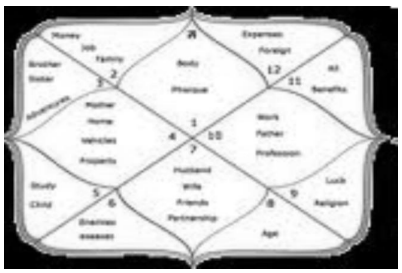

एक साधारण व्यक्ति आनुवंशिक तथा उससे सम्बन्धित कठिनाईयों के बारे में परिचित नहीं होता, लेकिन उसे जीवन को अच्छी तरह से चलाने के लिए कई आनुवंशिक जानकारियों का होना आवश्यक है । विशेष रूप से शादी के पूर्व स्त्री-पुरुष के प्रारम्भिक परीक्षणों के द्वारा कुछ ऐसी जानकारियाँ प्राप्त हो जाती है । अगर इन पर ध्यान दिया जाये तो शादी के बाद की कई समस्याओं से बचा जा सकता है । उदाहरण स्वरूप - हिमोफिलियां, सिकिल सेल एनीमिया, रंगवर्णन्धता, मधुमेह, आर.एच. कारक से संबंधित शिशु समस्याएँ आदि कुछ ऐसी कठिनाइयाँ है, जिनसे आनुवांशिकता के सम्बन्ध में थोड़ी-सी जाँच करके आसानी से बचा जा सकता है ।

जैसा कि हम जानते हैं हमारा रूधिर या रक्त, रक्त प्लाज्मा कणिकाओं, कोशिकाओं और कई प्रोटीनों का बना होता है । Rh- कारक भी एक प्रकार का प्रोटीन होता है । अधिकांश मनुष्यों में यह कारक पाया जाता है, जबकि कुछ लोगों में यह नहीं पाया जाता । जिन मनुष्यों के रक्त में यह पाया जाता है, उन्हें Rh धनात्मक ($Rh^+ve = Rh^+$) और जिनमें नहीं पाया जाता है उन्हें Rh ऋणात्मक ($Rh\text{-}ve = Rh^-$) कहते हैं । आनुवंशिक अध्ययनों से स्पष्ट है कि आर एच कारक का निर्माण एक प्रभावी जीन के द्वारा नियंत्रित होता है जिसे आर से व्यक्त करते हैं । यदि Rh (- ve ऋणात्मक) स्त्री का विवाह Rh (- ve धनात्मक) से हो जाये तथा पैदा होने वाली संतान Rh^+ हो जाये तो ऐसे में बहुत कठिनाई पैदा हो जाती है । यदि ऐसे बच्चे की कोई एक लाल रक्त कणिका रक्त प्रवाह के साथ गर्भनाल या प्लैसेण्टा के द्वारा कभी माँ के रूधिर या रक्त में पहुँच जाती है, तो रक्त कणिकाओं को बाहरी प्रोटीन (एण्टीजन) समझकर माता में इसके विरूद्ध प्रोटीन एण्टी बॉडी का निर्माण होने लगता है । यह एण्टिबॉडी विलेय होने के कारण माँ के रक्त में गर्भनाल या प्लैसेण्टा के द्वारा बच्चे के रक्त में पहुँच जाती है और यह एण्टी बॉडी या प्रतिरक्षी प्रोटीन बच्चे की लाल रक्त कणिकाओं को नष्ट करने लगती है । ऐसी स्थिति में कभी-कभी बच्चे की मृत्यु हो जाती है और गर्भपात हो जाता है । Rh^- माँ तथा Rh^+ पिता की स्थिति में गर्भ में पल रहा बच्चा अप्रभावित रहता है, लेकिन दूसरे होने वाले बच्चों को खतरा रहता है क्योंकि तब तक माता में एण्टी Rh बन गया होता है । यदि ऐसी माता को Rh^+ रक्त कभी दिया जाये तब भी माता का जीवन खतरे में पड़ सकता है ।

निश्चित तौर पर ज्योतिष विज्ञान भी विज्ञान की एक शाखा है, लेकिन भावी वर-वधू ही आगे चलकर स्वस्थ परिवारों का निर्माण करते हैं तथा स्वस्थ परिवार ही एक सेहतमंद और खुशहाल राष्ट्र का । अतः विवाह-पूर्व भाग्य कुण्डली के साथ-साथ मेडिकल का मिलान अति आवश्यक है ।

एम.एस.सी. चतुर्थ सेमेस्टर
(बॉयोटेक्नोलॉजी)

अभिषेक सिंह

युवा और समस्याएं

युवा जो वायु की तरह शक्तिशाली है, जो किसी भी राष्ट्र या समाज के लिए सबसे महत्वपूर्ण वर्ग है, जिस पर पूरे देश का दारोमदार है, ऐसे युवा से देश की काफी उम्मीदें जुड़ी हुई हैं।

हाल ही में भारत में वैश्विक बदलाव का कारण युवा शक्ति है। इससे यह प्रमाणित होता है, कि युवाओं का राष्ट्र की उन्नति में क्या महत्व और योगदान है। यह बात इसलिए भी महत्वपूर्ण है । कि जब हम युवाओं के कार्य का आकलन करते है कि समय-समय पर किस तरह से युवाओं ने समाज की विध्वंसकारी शक्तियों को घुटने टेकने पर मजबूर किया है, तब निश्चित तौर पर यह गर्व की बात है। लेकिन बात यहीं खत्म नहीं होती क्योंकि राष्ट्र की इनसे बहुत सारी अपेक्षाएँ हैं और इनकी भी बहुत सारी अपेक्षाएँ हैं कि युवा निरंतर राष्ट्र को, उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रखेंगे स्वतंत्रन्ता संग्राम के दौरान युवाओं का बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेना रहा हो, या देश में बढ़ते भ्रष्टाचार, कुशासन के खिलाफ आवाज उठाना हो, युवाओं ने हर बार अपनी शक्ति का एहसास शासकों को कराया है। वैश्विक स्तर की बात करें तो लीबिया, मिस्त्र ऐसे कई उदाहरण हमारे सामने हैं जो युवा शक्ति की महत्ता को प्रदर्शित करते हैं। भारतवर्ष के सन्दर्भ में यदि कहें तो ये सकारात्मक संकेत हैं।

हमने अक्सर युवकों को राजनीति से किनारा करते हुए देखा है। शायद इसकी वजह यह भी है, कि राजनीति ने हमेशा से ही भारत के लोगों को छला है । झूठे वादे, अपराध, भ्रष्टाचार- यह भारतीय राजनीति की परम्परा सी बन गई है । केवल शासन करने वाली पार्टी का नाम बदल जाता हैं, हमारे प्रतिनिधि नहीं क्योंकि ये काफी होशियार लोग हैं जो सत्ता पाने के लिए अनवरत प्रयास करते रहते है और सत्ता में आने के बाद अपनी सम्पत्ति में इजाफा करते हैं। भारत के विकास से इनका कोई लेना देना होता नहीं है। एक शब्द में कहें तो कोई भी राजनेता निःस्वार्थ भावना से राजनीति में प्रवेश नहीं करता है। कुछ नेता अपवाद हो सकते हैं। जिस देश की आजादी को 66 वर्ष पूरे हो चुके हों वहाँ आज भी बुनियादी सुविधाओं का पूर्णतया अभाव है । जो देश 66 वर्षो में अपने हर एक नागरिक को रोटी, कपड़ा और मकान न द पाया हो उससे और क्या उम्मीद की जा सकती है? शायद यही वजह है, जो युवाओं को राजनीति से दूरी रखने के लिए बाध्य करती है। सवाल बहुत है, पर जवाब का पता नहीं ।

शिक्षा जो अनिवार्य घोषित की जा चुकी है, इसे भी प्राप्त करने के लिए भोले-भाले बच्चों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ रहा है। मिड-डे मिल गरीब बच्चों के लिए वरदान की तरह है लेकिन इसमें भी राजनीति ने अपना कड़वा जहर घोल दिया और विषाक्त भोजन खाकर बच्चे अपनी जान से हाथ धो बैठे। दरअसल यह दर्द हमारे नेता महसूस नहीं कर सकते, दिल काँप उठता है, ऐसी घटनाओं को होते हुए देखकर जो अपने ठाठ-बाठ भरी जिंदगी में मस्त हैं, उन्हें अपने देश के इन मासूम बच्चों की परवाह नहीं है, अगर रहती तो ऐसे कांड बार-बार नहीं होते। नक्सलवाद, आंतकवाद जैसी कई समस्याएं जो हमारी लापरवाही का नतीजा है हमें इनमें जरा भी रूचि नहीं हैं। इसका बाजार हमारे युवाओं के भविष्य को खोखला करता जा रहा है। लेकिन लाइसेंस बाँटकर शराब धड़ल्ले से बेची जा रही है। और हर दिन सैकड़ों परिवार तबाह हो रहे हैं। समस्याएँ बहुत हैं पर उन्हें दूर करने के नाम पर दो दिन का दिखावा कर फिर पुरानी राह अपना ली जाती हैं।

सरकारी योजनाओं के बारे में बहुत से विचार मन में आते हैं। और यह सवाल करते हैं कि क्या सरकार योजनाओं को बनाते वक्त उनके सही क्रियान्वयन को ले कर कोई कठोर नियम या निर्देशिका तैयार नहीं कर सकती? क्या सरकार सम्बन्धित मंत्रालयों की वार्षिक समीक्षा नहीं कर सकती है कि जिन क्षेत्रो में योजनाएँ लागू हुईं उनमें क्या सकारात्मक परिणाम आए क्या गलतियां हुईं, किन क्षेत्रों में सुधार किया जाना चाहिए ताकि हमारी योजनाएँ और बेहतर हो सकें । मंत्रियों की इस रिपोर्ट को साझा करना चाहिए, तथा आम लोगों से सुझाव माँगे जाने चाहिए। क्योंकि यह लोकतंत्र है, यदि ऐसा नहीं हैं, तो लोकतंत्र पर प्रश्न चिन्ह होगा।

एम.ए द्वितीय सेमेस्टर
(समाजसास्त्र)

शिवम परगनिहा

लक्ष्य

मनुष्य अपने जीवन में अनेक आकांक्षाएँ संजोता है, कल्पना की उड़ान भरता है। कल्पना को यथार्थ में उतारने के प्रयत्न में उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कभी मार्ग की कठिनाइयों से व्यक्ति विचलित हो जाता है। तो कभी जिद वश लक्ष्य तक पहुंचने की चेष्टा में लीन हो जाता है। मैं भी अपने लक्ष्यहीन जीवन में कुछ प्राप्ति की आकांक्षा संजोए, कुछ कर गुजरने की मंशा लिए आगे बढ़ता गया। विचार आते रहे, मैं कशमकश में पड़ा सोचता रहा कि क्या करूँ, क्या न करूँ? यह सब सोचता अपनी शिक्षा की दिशा में निरंतर आगे बढ़ता गया। मेरा बचपन ग्रामीण परिवेश में बीता। मैंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गांव के स्कूल से पूरी की तत्पपश्चात हाई स्कूल परीक्षा शहर में उत्तीर्ण की। महाविद्यालयीन शिक्षा हेतु मैंने शास. वि. या. ता. स्नात. स्व. महाविद्यालय दुर्ग में दाखिला लिया। जहाँ मुझे पढ़ाई के साथ-साथ व्यक्तित्व विकास का भी अवसर मिला और यहीं से मैंने जीवन का लक्ष्य निर्धारित किया।

मेरे मन में प्रश्न पैसे की जरूरतों पर था तब मेरे दिमाग में कई तरह के पैसे कमाने के स्रोत दिखने लगे। लेकिन इन सबको करने के लिये मैने अपने लिये कुछ नियम व शर्तें तय की -- क्या करना है? कैसे करना है? किस तरह करना है? किसके साथ करना है? आदि, आदि।

इन सभी बातों पर विचार कर इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि प्रबन्ध ही किसी कार्य को करने की प्रारम्भिक प्रक्रिया है। मुझे प्रबन्ध के सिद्धान्त याद आए -- योजना बनाना, संगठन तैयार करना, कर्मचारी नियुक्त करना, व्यवस्था प्रबंधन, निर्देश, संवाद और संचार, उत्प्रेरण और नियंत्रण आदि ।

प्रबन्धन करना सीखना, जीवन में कैसे रहना, कैसे चलना, कैसी बातों को संगठन के सामने रखना, कैसे किसी सामान को व्यवस्थित रखना आदि अन्य कई बातों का सिखाता है, यह कहूँगा कि प्रबन्ध जीवन जीने की कला सिखाता है। प्रबंधन सीखने के बाद से मैं जीवन में अनेक परिवर्तन महसूस कर रहा हूँ। पैसे की जरूरत को पूरा करने के लिए मैंने एक उपाय किया। मैंने सागौन लकड़ी से जहाज बनाने का काम देखा और कई तरह के सामान बनाने एवं फर्नीचर बनाने में इसके उपयोग को देखकर मैने सागौन के पेड़ लगाने का सोचा।

सब बातों का अध्ययन कर मैंने बाहर से 2000 पौधे माँगाये, पूरे खेतों में व्यवस्थित लगाया। इन पौधों को पूरी तरह अपने आयु पूरा होने में 15 साल लगते हैं।

इन सभी पौधों को तैयार करने के लिये मैंने बैंक से लोन लेकर कार्य आरम्भ किया । आज 4 साल पूरे हो चुके हैं। आने वाले सालों में बैंक से लिये गये लोन को चुका कर बैंक से अनुबन्ध को पूरा करूँगा। और जो मेरे मन में पैसों की जरूरतों को लेकर था उसे करूँगा। साथ-साथ अपने जीवन को आगे आने वाले समय में व्यवस्थित कर आगे बढ़ूँगा ।

इस तरह से अपनी पढ़ाई के दौरान जो मैंने सीखा है, उसे व्यावहारिक जीवन में उतारने के संकल्प के साथ मैंने अपने भविष्य को गढ़ने की एक रूपरेखा बनायी है। यह मेरा स्वप्न है, मेरा लक्ष्य है, जिसे मैं अवश्य प्राप्त करूँगा।

- एम.काम., द्वितीय सेमेस्टर

कु. रूखमणी वर्मा

बुढ़ापे के प्याले

पैंसठ वर्ष की उम्र में सेवानिवृत्ति के पश्चात जब उनकी पत्नी चल बसीं तो बेटे के साथ रहने के लिये शहर में अपने पुराने घर आ गये । घर में बेटा राजीव और बहू मधु रहते थे । उनके आते ही दोनों ने पिता की बहुत खातिरदारी की एवं उनके रहने के लिए अच्छा प्रबन्ध कर दिया । बहु मधु ने कहा - पिता जी आप हमारे परिवार के बड़े सदस्य हैं बड़े-बुजुर्गों के घर में रहने से घर में खुशहाली बनी रहती है । आप हमें छोड़कर कभी मत जाना । यह सुनकर अत्यन्त खुश हो गये कि बेटा एवं बहू उनसे कितना प्यार करते हैं, कि उन्होंने मेरे सम्मान में कोई कमी नहीं रखी ।

समय बीतने के उपरान्त मधु ने एक सुन्दर बच्चे को जन्म दिया । घर में खुशियों की लहर उमड़ आई । राजीव अपने बेटे को पाकर फूला नहीं समाया । राजीव ही नहीं वे भी पोते को पाकर बहुत खुश हुए । अपने दादा बनने की खुशी में आस-पड़ोस में उन्होंने खूब मिठाई बँटवायी और अपने पोते का नाम यश रख दिया ।

धीरे-धीरे समय गुजरने के पश्चात यश बड़ा हो गया । यश पाँच वर्ष की उम्र में भी तेजस्वी एवं बुद्धिमान था । घर में कुछ न कुछ रोचक कार्य करता रहता था । सभी उससे अत्यधिक प्रसन्न थे । सभी का जीवन खुशी से चल रहा था कि अचानक उनकी तबियत खराब हो गयी, वे लकवा की बीमारी के कारण चलने में असमर्थ हो गये । वे अब लाठी के सहारे चलते । अपना कोई भी काम सही ढंग से नहीं कर पाते, जिसके चलते बहू मधु अपने ससुर से तंग आ गयी । एक समय तो ऐसा आ गया कि राजीव भी अपनी पत्नी के चलते अपने पिता का हालचाल भी नहीं पूछता था । बस उसका प्यारा पोता यश ही अपने दादा जी के पास जाता था उनकी देखभाल करता था ।

एक माह पश्चात उनकी तबियत और ज्यादा खराब हो गयी । जिसके कारण मधु ने राजीव से कहा - पिता की तबियत दिनों-दिन खराब होती जा रही हैं, अगर उनकी बीमारी के चलते यश को भी संक्रमण फैल गया तो हम क्या करेंगे । उससे अच्छा तो यह है कि हमें उन्हें बगीचे वाले घर में रहने दें । एवं उनके लिए स्टील के बर्तनों की जगह बहुत-सारी मिट्टी के बर्तनों प्यालों का प्रबन्ध कर दे, क्योंकि इन बर्तनों को साफ भी नहीं करना पड़ता है । और वहाँ तो रामू भी रहता है, जो उनकी देखभाल भी कर देगा । इस बात पर राजीव ने भी हामी भर दी । यह सब यश देखता रहा ।

कुछ दिनों के बाद यश अपने दादा जी के पास मिलने आया । मिट्टी के प्याले (बर्तन) में खाना खाते देखकर पूछा-दादा जी आप इस मिट्टी के बर्तन में खाना क्यों खाते हो? आप स्टील के बर्तन में क्यों नहीं खाते? तब बड़े प्यार से जवाब देते हुए दादा जी बोले कि मिट्टी के बर्तन बड़े सस्ते होते है, इन्हें साफ करने की आवश्यकता नहीं होती एक बार प्रयोग के पश्चात रख देता हूँ । तुम्हारे पापा मेरे लिये बहुत-सारे प्याले लाये हैं । यश बोला दादा जी । क्या इन बर्तनों को पुनः प्रयोग नहीं ला सकते? दादा जी ने कहा - बेटा ला सकते हैं । फिर क्या था, यश ने उन प्यालों को इकट्ठा करना शुरू कर दिया तथा साफ करके एक जगह एकत्र करते गया ।

थोड़े दिनों बाद उसके पास दादा जी के बहुत सारे प्याले इकट्ठा हो गये । यह सब देखकर उसके पापा आश्चर्य में पड़ गए और उन्होंने पूछा-बेटा ये क्या कर रहे हो? इन मिट्टी के प्याले को क्यों इकट्ठा कर रहे हो? तुम्हारे दादा जी के लिये मैंने बहुत सारे मिट्टी के बर्तन कुल्हड़ एवं प्याले लाये हैं, इन्हें इकट्ठा करने की आवश्यकता नहीं है । उनके लिये पर्याप्त है । तो नन्हा यश बोला - पिता जी ये प्याले दादा जी के लिए नहीं हैं आपके लिए हैं, जब आप बूढ़े हो जायेंगे तो क्या पता ये मिट्टी के प्याले ना मिले, इसलिए अभी से इकट्ठा कर लेता हूँ । आपको इसी में खाना दूँगा । ये आपके बुढ़ापे के प्याले हैं ।

एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर (अंग्रेजी)

प्रतिभा श्रीवास्तव

तब, और अब

मै और मरा सासु माँ किचन म काम कर रह थ । तभी मेरी पतिदेव ने कहा आज तो अम्मा का जन्म दिन है। अम्मा ने अपना पल्ला ठीक करते हुये कहा कि हाँ आज मेरा जन्मदिन है। मैं अपने ससुर जी के पास गई। मैंने हँसते हुये कहा, बाबूजी आज अम्मा का जन्म दिन है, मिठाई खिलाने की बारी आपकी है। तब बाबूजी किचन मे अम्मा के पास आये और पूछने लगे कि हाँ तुम्हारा जन्मदिन है। अम्मा ने शरमाते हुये कहा हाँ, जिस दिन भोजली बोते हैं उसी दिन तो मेरा जन्म दिन है तब मेरे ससुर ने जो हमेशा अपनी जेब में चॉकलेट रखते हैं हमें एक-एक चॉकलेट निकाल कर देने लगे। हम सब खिलखिलाकर हँसने लगे और बाबूजी सबकी नजर बचाते हुये एक और चॉकलेट अम्मा को देकर मुस्कुराने लगे।

इस घटना के तारतम्य में, मैं और दो घटनाओं का जिक्र करूँगी।

इस घटना के तुरंत दो दिन बाद मेरी पड़ोसी महिला का जन्मदिन था। वह शाम को मेरे घर आई मैंने हँसते हुये कहा 'क्या बात है आज तुम उदास दिख रही हो'? उसने कहाँ क्या बताऊँ दीदी आज मेरा जन्मदिन है। किसी ने भी मुझे बधाई तक नही दी। बुरा तो लगता है ना? आज मेरा किसी काम मे मन नहीं लग रहा है। ऐसा लग रहा किसी को भी मेरी जरूरत नहीं मै अपने अपने आप को बहुत उपेक्षित महसूस कर रही हूँ।

इसी घटना से संबंधित एक और तात्कालिक घटना मुझे याद आने लगी जब मेरे घर पर 15-16 वर्षीय रेखा आई थी। मैने उसका रूआँसा चेहरा देखा। मैने आश्चर्य से उससे पूछा तुम्हें क्या हुआ है? रेखा तुम इतनी रूआँसी क्यो दिख रही हो? उसने कहाँ आंटी आज मेरा जन्मदिन है, किसी को भी जन्मदिन याद नहीं है। मेरा जीवन व्यर्थ है कोई मुझसे प्यार नहीं करता। मैं रोऊँ नही तो क्या करूँ? तब मैंने कहा बस इतनी सी बात पर तुम इतना रो रही हो? बेटा तुम्हारे घर वाले तुम्हारी छोटी सी छोटी जरूरत को तुम्हारी एक आवाज पर पूरा करते हैं और तुम उनके लिये ऐसा सोचती हो। तुम्हारे घर पर सब नौकरी पेशा हैं, कार्य की व्यस्तता में भूल गये होंगे। मैं इन तीन पीढ़ियों के जन्म दिन की बधाइयों के बारे में सोचने लगी।

मेरे सास-ससुर का वैवाहिक जीवन 60 वर्ष पुराना है, बाबूजी को अम्मा का जन्म दिन याद नहीं। फिर भी सासु माँ को इस बात की कोई शिकायत नहीं, ना ही इस उपेक्षा पर वह उदास होता है, ना ही उनका विश्वास बाबूजी के प्रति डगमगाता है। वे उतार चढ़ाव पर संतुलित खुशनुमा और शांतिपूर्ण रूप से गृहस्थ जीवन जी रहे हैं । यथार्थ धरातल, ठोस बुनियादी ढाँचों पर टिका हुआ आधुनिक तकनीकी साधनों से वंचित होते हुये भी तनाव रहित जीवन उनका।

मैं आज प्रश्नों के ढेर पर खड़ी सोच रही हूं। कि कहाँ तो आज की महिलायें चाँद पर पहुंच रही हैं नये नये कीर्तिमान गढ़ रही है, आधुनिक साधनों से भरपूर । लेकिन यह क्या? छोटी सी उपेक्षा से वह विचलित हो जाती हैं । घर में कलह का वातावरण बन जाता है। कई बार तो वह आत्मघाती कदम भी उठा लेती हैं । वास्तव में उनका मानसिक संतुलन गड़बड़ा जाता है। पवित्र और गहन रिश्तों को छोटी-छोटी बातों से पैमाना बनाकर मापना पारिवारिक जीवन के लिये अभिशाप बनता जा रहा है। शायद यह भी एक कारण है कि पूर्व की अपेक्षा आज परिवार में तनाव और वैमनस्य ज्यादा है। आज हम दिखावे के इतने आदी होते जा रहे हैं कि वास्तविक जीवन के धरातल से हमारा रिश्ता आभासिक सा होता जा रहा ।

क्या वाकई वर्तमान में महिलाओं ने तरक्की की है? मुझे तो ऐसा लगता है कि मानसिक सुदृढ़ता और धैर्य के मामलो में हम पूर्वज नारियो से पिछड़ते जा रहे हैं। पूर्व की नारियों ने अपने धैर्य, साहस, और विषम-से-विषम परिस्थितियो में भी एक कुशल तैराक की तरह परिवार को एक सूत्र मे पिरोकर संयुक्त परिवार के फायदों से हमें नवाज कर हमारी जीवन धारा को नई दिशा दी है। उनमें मानसिक सुदृढ़ता इतनी ज्यादा थी कि बड़े से बड़े संघर्ष में उनका आत्म बल नही डगमगाता था। लेकिन आज बालिका हो या युवती हो या नवविवाहिता हो, जहाँ पर उनके मनमाफिक पूरा परिवार उनके पीछे-पीछे डोलते रहता हैं तब भी उनकी मानसिकता में नीरसता और शुष्कता ही नजर आती है।

नये-नये कीर्तिमानों के स्तंभ पर खड़ी आधुनिक महिलाओं में पारंपरिक, पारिवारिक भारतीय महिलायें कहाँ गुम होते जा रही हैं। परिवार, समाज, और देश की केन्द्र बिन्दु महिलायें ही हैं । जब हममें ही मानसिक सुदृढ़ता की कमी होगी तब देश, समाज, और परिवार का क्या होगा?

प्रयोगशाला तकनीशियन
रसायन विभाग

Sujata

Story of Mobile Phone

Tring ! Tring! Tring!

I ring when someone calls you at any time and at any place. I am a part & parcel of your life. Today no one can imagine, living without me. I am favorite with children, the young the old alike. I exist in great variety. Can any one guess who am I ?

Any Guesses

No .....!

Ok I introduce my self. I am mobile phone. I am also known as hand phone or cell phone. Now I tell your how, I came into this world?

My coming into this world forms an interesting story. I was brought into this world by Graham Bell on 14th feb, 1876 in the form of land line phone. My ancestor, land line phone, was very useful & proved to be a milestone in the world of Communication.

The mobile phone the successor and the sophisticated from of land line phone came into existence in 1906 in U.S.A. Nathan. B Stubblefield Murrey created me. My coming proved to be a big revolution in the field of Communication During the second world war. I was an important means of communication. In the 21st century, I have become a household name. I am multifunctional. I can be uses to send messages at a very; low cost. I can be used as a computer, as a camera, as music player, as a recorder and also for gaming purpose.

I am equipped with various application such as seismic face book for android, National rail Enquires, U.K. jobs what's app, Google sky map, winamp, out look, hike, Google play store and many more such apps that make me the most sought after by both the young & the old. I have made the big world small the distant near. I have brought education, and learning within the reach of many.

I am growing fast. Gartner predicts that by 2017, my potential to download apps will increase 268 billion times. Its, just phenomenal. I am proud to be born as a mobile phone. Who has transformed the world into a global village.

(B.Sc. Part - II / M3)

Priynka Narnaware

Importance of English Language

In todays global world, the importance of English can not be denied and ignored. English is the most common language spoken everywhere. With the help of developing technology English has been playing a major role in many sectors including medicine, engineering and education which, in my opinion, is the most important arena where English is needed.

English is becoming more and more popular in the world. It attractspeople due to its intresing structure. This language is learnt, and studied by a large number of people with every passing day because of its twin importance in this modern world : a means a communicate and a creator of job greater opportunity for a job. The first importance of English language is that it is a useful means to communicate in this inter connected and interdependent world. English is called International language and is also the second language of many countries in the world. Therefore we can realize the importance of language in communication. When we know English, we can communicate with the citizens of most of countries of This globe, without any confusion in expressing our feelings and thinking.

Eight advantages of studying English language.

- Without question, English is one of the most widely spoken language. English language is used in many parts of the world and is often the language that is common to people who have a first language other than English.
- When English language comes to business and matters of trade, it tends to be the common currency. In writing e-mails, memos, contracts, agreements and reports English language is used.
- The greatest advantage of studying English language is that your career prospects and employment opportunities can vastly increase.
- Technology is vital and significant in the day and age in which we live. English language is used for many Software program For those that are technologically minded and ambitious, the study of English language can provide then with useful benefits and knowledge.
- English language is predominantly spoken throughout the world, so international travelers may find that speaking English can make their travel a little easier. Most hotels and restaurants employees speak English.
- English language is used in academics all over the world Most of the research is conducted written and presented in English. Knowing English can helpful for scholars who wish to communicate their ideas.

M.A. Final, IV Semester (English)

Hemlata Sahu

Power of Good thinking

It is often said that good thoughts are the key to success. In his "Ignited Minds" Dr. A.P.J. Abdul Kalam has given examples of the people whose good thought lead to good results. When the resources of a country are used by the intelligent and noble minded person, the development of a nation is certain.

I would like to give two examples from "Ramcharitramanas" by way of illustration. The first is the character of 'Sati' and the second that of 'Hanuman'.

Once Sati and Shiva saw that Lord Rama his brother Laxman were sear ching for Sita. Lord Rama was weeping like a ordinary man for his wife. Lord Shiva recognised his lord but Sati had her doubts. She thought that how it was possible that man who was weeping for his wife can be Brahma. Sati discussed her doubt with Lord Shiva. Shiva explained to her that Rama is the incarnation of Brahma. But Sati was not to be convinced Finally she decides to test the power of Rama.

The process of thinking starts from this very incidents. She thinks again and again and finally she transforms her self physically into Sita. Doing this shat it is easy to adopt the body of any person but it is not easy to adopt the mind. Lord Rama easily recognizes her. At last convinced that lord Rama is Brahma she apologizes for her Conduct. This story is written by Tulsidas :

पुन-पुन हृदय विचार कार, धार सीता कर रूप।
आगे होई चलि पंथ तेहि, जेहि आवत नरभूप।।

The other story is from " Sunder Kand', the fifth chapter of 'Ramcharitmans' when Hanuman goes to Lanka to search Sita. He uses his mind many times. Firstly, he uses his mind when he enters Lanka

पुर रखवारे देखि बहु, कपि मन कीन्ह विचार।
अतिलघुरूप धरौ निसि, नगर करौं परसार ।।

Then he uses his mind when he see the condition of Maa Sita. She was very sad in Lanka. Hanuman starts thinking that how can he help sita.

तरू पलल्व मँह रहा लुकाई । करहि विचार करौं का माई ।।

Finally the throws the ring of Rama on the lap of Sita.

कपि करि हृदय विचार, दीन्ह मुद्रिका डारि तब ।
जनु अशोक अंगार, दीन्ह हरषि उठि कर महेऊ ।।

Then again he uses his mind to liberate himself when he is caught in Brahmastra by Meghanath.

ब्रह्मास्त्र तेहि साधा, कपि मन कीन्ह विचार ।

These two stories, thus beautifully illustrate the power of good thinking

M.A., 4th Sem. (English)

Anshdha Sharma

A Nobel Women : Mother Teresa

Mother Teresa, popularly known as the 'saint of the Gutters, today stands as the brightest star in the horizon of the great personalities of the world. She epitomizes service, kindness, dedication and love for poor and the abandoned. She is a 'Saint' of our time, Angle in human flesh, and a beacon in the world of darkness.

She was a catholic and initially wanted to become a nun. In 1928 joined a convent and later she was sent to India, first to Darjeeling and then to Kolkata to teach in a school in the city .

One day while returning from a visit, she saw the slum of Kolkata. The sight broke her heart. She was applied by the misery. It disturbed her mind and made her sleepless for days. She wanted to do something to the sufferings of the poor of the city. She prayed deeply for Gods, guidance and direction and finally on 10th september 1937 during a train journey of Darjeeling she heard the vioce of God telling her to leave the convent and to go out and serve his abandoned children. She left her sheltered life of the convent on 18th August 1948 and started her new mission. She began her work with a school for slum children of Kolkata. She adopted as her dress a simple white sari with blue border and with a cross pined at the shoulder. Many young girls joined her work. She organised them into a dedicated group of sisters ready to serve the poor in any form. They came to be known as Missionarise of Charity and soon she expanded her work and started working for the sick and dying on the streets of Kolkata, for the slum dwellers, abandoned babies, leporsy and unwanted old people. On her request the Municipal corporation gave a drama shoal in the neighborhood of the famous Kali Temple which later became, " Nirmal Hriday The home for the dying and the destitute Gradually she opened a number of institution in India and in foreign countries. Her self-less service won her many international recognition.

She was given several Awards by different countries and organisation of the world She was Awarded the Noble prize in 1970 and Bharat Ratna, Nations highest Civilian Award, in 1980. But the Glory and recognition never sullied her simple livening and humility. She continued to work until her death on September 5, 1997 at the age of 87. The entire world mourned the death of their mother.

Her death was an irreplaceable loss felt by the entire world. The Catholic Church breaking all traditions declared her a 'Saint'. So far so good. It is the least that can be done by way of recognition for her efforts to make the worlds worth living for the down trodden. Now the question that arises is - Is this what 'Mother' aspired for? Was she serving the weak and the poor for acclaim? The answer is a big 'No' True homage and true tribute can be paid to her only and only by continuing her legacy of serving the humanity, of serving the weak, of serving the poor, inshort by serving the weakest of the weak.

M.A.II Semester (English)

डॉ. अनुपमा कश्यप

तुम आशा, विश्वास हमारे ...

कॉलेज में बीएससी भाग-2, कैमेस्ट्री की क्लास में अचानक बच्चों का मूड देख मैं चौंक गयी -- अरे! आज क्या बात है, पढ़ना नहीं है क्या? एक छात्र ने उठकर कहा -- मैडम आज कैमेस्ट्री से अलग कुछ और बातें करेंगे । बच्चों की इच्छा जानकर मैंने पूछा -- आप लोग ही बताइये, क्या बात करना चाहेंगे? बच्चों ने कहा -- मैडम लाइफ से रिलेटेड कुछ बातें। आज की युवा पीढ़ी के लिये मेरे दिमाग से ऐसी छवि थी कि वो उपदेश सुनना नहीं चाहती, पर ये बच्चे कुछ अलग लगे। मैं तो गद्‌गद् हो गयी, उन्हें आश्वासन दिया कि जितना मुझसे हो सकेगा आप लोगों की जिज्ञासा शांत करूंगी। बच्चों में से एक के बाद एक प्रश्न हुये - ''हम दुखी क्यों होते हैं? हम जिनके लिये अच्छा करते हैं वो हमारे साथ बुरा क्यों करता है? जब हमारे साथ कोई बुरा व्यवहार करे तो हमें भी क्या उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिये? 'उन आंखों का हँसना भी क्या जिन आँखों में पानी न हो।' का अर्थ समझा दीजिये? इस तरह के अनेकों प्रश्न, जिनका उत्तर मैं यथा संभव देती रही। साथ ही उनकी सोच पर हैरान भी थी और खुश भी। इतनी कम उम्र में ये बच्चे कितना कुछ सोचते हैं । मैंने एक प्रश्न के उत्तर में बच्चों की परीक्षा लेते हुये कहा - ''कि जब हमारे साथ कोई गलत व्यवहार करे हमें दुःख पहुंचाये तो हमें भी उसे दुःख पहुँचाना चाहिये? तो एक छात्र ने तुरंत कहा - ''नहीं मैडम हमें ऐसा नहीं करना चाहिये'' मैं भी ऐसा ही उत्तर चाहती थी किन्तु यह भी समझाया कि खुद में इतनी हिम्मत भी रखनी होगी कि आपकी अच्छाई को आपकी कमजोरी समझ शोषण न करें। सभी इस बात से सहमत हो गये।

मैं सोचने पर मजबूर थी कि इनकी उम्र में हम इतना कुछ नहीं सोच पाते थे, तब जिंदगी सरल थी, इतनी कठिन नहीं। आज का युवा केवल पढ़ाई को ही लक्ष्य नहीं बना पा रहा है, उसके सामने पारिवारिक, सामाजिक चुनौतियाँ पहले की अपेक्षा अधिक हैं, जिनके जाल में वो उलझ कर रह जाता है। उसका सामना वो कई बार नहीं कर पाता, हो सकता है उसे मार्गदर्शन की जरूरत हो, जो उसे नहीं मिल पाता। चूंकि यह पीढ़ी अपने भाव व्यक्त करने में कमजोर है, जागरूक भी कम है फिर भी कहीं न कहीं हम इस पीढ़ी को नकारात्मक भाव से देखने लग गये हैं और युवा वर्ग को उनकी योग्यता से कम आकलित कर रहे हैं यह जबकि सतही आकलन है, युवाओं की इस दशा के लिये काफी हद तक हम जिम्मेदार हैं, क्योंकि युवा मन में झाँकने पर मैंने पाया कि हम बड़ों की अपेक्षा इनकी सोच अधिक उन्नत है । वो बंधुत्व की भावना हमसे ज्यादा रखते हैं। संयुक्त परिवार की चाहत लिये, दूसरे की मदद करने को तत्पर ये युवा अपनी महत्वाकांक्षाओं को सीमित कर, बहुराष्ट्रीय कंपनी की चकाचौंध से ऊबकर पुनः अपनी जड़ों, अपने परिवार के बीच कम साधनों में भी रहने को तैयार हो रहे हैं।

मोबाइल वाट्सएप पर सोशल मीडिया के भटकाववादी दृष्टिकोण से भी वाकिफ हो रहे हैं। यदि उलझे भी हैं तो हमारे दिये हुये एकाकीपन के कारण मजबूरी में। अंदर-ही-अंदर परिस्थितिवश घुट रहे हैं। यह घुटन इनमें से कुछ को कुंठाग्रस्त भी बना रही है, अपने माता-पिता की महत्वाकांक्षाओं को पूरा न कर पाने की स्थिति में सिमट कर रह जा रहे हैं, शेयर नहीं कर पा रहे हैं कि वो कुछ और चाहते हैं और भ्रमित हो रहे हैं। उनसे दूरी कम कर हम उन्हें सृजनात्मक दिशा दे पायेंगे। पर हमारे पास समय नहीं है क्योंकि हम अपनी महत्वाकांक्षाओं को विराम ही नहीं दे पा रहे हैं, अपने आपको ही संवारने में व्यस्त हैं, भौतिकता की होड़ में मगन हैं। आगामी पीढ़ी पर अपने अरमान लादने की नाकाम कोशिश में लगे हैं।

इन संघर्षमय परिस्थितियों में भी बहुत से युवा अपनी राह पर चलकर मंज़िल को पा भी रहे हैं। सही निर्णय की क्षमता के साथ अच्छाई के रास्ते पर अग्रसर हो रहे हैं। हमारे महाविद्यालय का छात्र संघ इस बात का अच्छा

उदाहरण है। पहले जब छात्रसंघ चुनाव होता था तो वातावरण इतना तनावपूर्ण रहता था कि सभी असहज महसूस करते थे । धीरे-धीरे छात्रसंघ की छबि भी धूमिल होती गयी और ये चुनाव बंद हो गये, किंतु पुनः वर्तमान में हुए छात्रसंघ चुनाव से चयनित पदाधिकारियों ने उस सोच को बदल कर सकारात्मक वातावरण बना दिया। योग्य व सुसंस्कृत छात्र चुनकर सामने आये जिन्होंने गुरुजनों को पूरा सम्मान देते हुए उनके मार्गदर्शन में सृजनात्मक कार्य किये, बिना बाधा पहुंचाये शांतिपूर्ण महौल बनाये रखा, उन्होंने युवा वर्ग का गौरव बढ़ा दिया। इसी कॉलेज में छात्र-छात्राओं ने नवप्रवेशी विद्यार्थियों के स्वागत कार्यक्रम की स्वस्थ परंपरा बिना रैगिंग लिये प्रारंभ की। कार्यक्रम में पर्यावरण के हित में फूलों की गुलदस्तों के स्थान पर गुरुजनों को पौधे भेंट कर आशीर्वाद लिया, आज भी वह पौधा मेरे आँगन में गुलाब का फूल खिला रहा है। ये बच्चे सामाजिक कार्यों में भी हमसे बहुत आगे हैं। कॉलेज के सामने दुर्घटना में घायल एक व्यक्ति के लिये कॉलेज की ही एक छात्रा ने फोन द्वारा 108 नं. वाहन को बुलाकर उसे इलाज के लिये भिजवाया। मेरे एक परिचित का एक्सीडेंट हो गया था वे बेहोश हो गये जब होश आया तो अस्पताल में थे उन्हें अस्पताल पहुँचाने वाला हमारे कॉलेज का ही एम.ए. का छात्र था। इस तरह के और भी अच्छे कार्य करने में युवाओं में से ही कुछ, करने में नहीं हिचकते। चंद युवाओं की वजह से हम पूरी इस पीढ़ी को दोषी करार नहीं दे सकते कि युवा गलत हैं या कुछ सोचते ही नहीं । युवा तो, परिवार की, समाज की, राष्ट्र की आशा का केन्द्र होता है । उसकी ऊर्जा जो चाहे वो कर सकती है। सृजनात्मक कार्य में लगेगी तो देश को प्रगति के शिखर पर पहुँचा देगी। किन्तु यही शक्ति यदि विध्वंसात्मक कार्यों में लग जायेगी तो देश गर्त में चला जायेगा। इसलिये हमारा नैतिक कर्तव्य है कि हम मैग्नीफाइंग लैंस बनकर इस शक्ति को केंद्रित करें और उत्पन्न ऊर्जा पुंज को सही दिशा में लगा देश का कल्याण करें।

युवा वर्ग यदि निराशा और कुंठा में जी रहा है तो यह हमारा दुर्भाग्य है । इनमें से कुछ युवा कुंठित हो गये हैं, शायद विद्रोह नहीं कर पाने की स्थिति में । घरेलू जीवन में झुंझलाहट से भरे देखे जा रहे हैं, अपने में गुम हैं, अभिभावकों की उपेक्षा कर रहे हैं, परम्परागत आदर्श मूल्यों को तोड़ना चाह रहे हैं, कोई रास्ता न सूझने पर नशे में लिप्त हो दुर्लभ मानव जीवन को नष्ट करने पर तुले हैं । आखिर क्यों? इन स्थितियों में हम ऐसे युवा वर्ग को हेय दृष्टि से देखने लगते हैं किन्तु दोष हमारी व्यवस्थाओं में ही है, जैसे शिक्षित होने पर भी बेरोजगारी, योग्यता के अनुकूल काम नहीं मिलना, बदलते सामाजिक मूल्य व नैतिक पतन के अनुकूल काम नहीं मिलना, बदलते सामाजिक मूल्य व नैतिक पतन के साथ भौतिक विकास, भ्रष्टाचार के कारण आदर्श युवकों को अनफिट घोषित करना । ये सब युवामन को आक्रोशित कर रहा है । वह एक तरफ पुराने व दूसरी तरफ नये जीवन मूल्यों के पाटों में पिस रहा है । वह विवाह, जाति वर्ग भेद आदि मूल्यों पर स्वतंत्र सोच रखना चाहता है उसे व्यक्त करना चाहता है, रूढ़ियों को बदलने की चाह रखता है पर समाज उसे करने नहीं देता । हमारा कर्तव्य बनता है कि युवा वर्ग की प्रतिभा को सराहें उन्हें अच्छे परिवर्तन की पूरी छूट दें ताकि वह रचनात्मक बने ।

किन्तु हम इस पीढ़ी को दिशा देने में असफल हो रहे हैं, इस पर मंथन करना ही होगा । इसका कहीं बिखरता संयुक्त परिवार, बिखरते पति-पत्नी के रिश्ते, माँ का घर से बाहर ज्यादा समय के लिए रहना (चाहे वो नौकरी हेतु स्वेच्छा से हो या मजबूरी में) शिक्षा पद्धति आदि तो नहीं । पारिवारिक बिखराव, एकल परिवार उपभोक्तावादी जीवन मूल्यों के उठाव के कारण नैतिक मूल्यों के पतन ने अनैतिकता को बढ़ावा दिया है, दिखावटी-बनावटी संस्कृति के कारण उपभोगवादी जीवन मूल्य मान्य हो चले हैं, किसी भी अनैतिक आचरण से कुछ भी हासिल करना सांस्कृतिक प्रदूषण को जन्म देता है । सार्वभौमिक नैतिकता के अन्तर्गत विश्व संस्कृति के नाम पर आज तानाशाही चल रही है विकसित देशों की संस्कृति हावी हो गयी है जिसने परम्परावादी देशों की नैतिकता के समक्ष चुनौती खड़ी कर दी है । वर्तमान शिक्षा प्रणाली युवा को श्रम से अलग कर रही है वह सरकारी नौकरी से अलग कुछ सोच ही नहीं पा रहा, सरकारी नौकरी न मिलने पर जीवन व्यर्थ समझने लगता है मनोरोगी बन जाता है । इस दिशा में सुधार लाना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए ताकि युवा वर्ग को भटकने से बचा सकें और देश की नींव मजबूत कर सकें ।

ऐसा नहीं कि अनुकूल परिस्थिति में ही आप अच्छा कार्य कर सकते हैं, अन्यथा नहीं । वास्तविकता तो यह है कि विपरीत परिस्थितियों में ही महान कार्य होते हैं, संघर्ष से ही जीवन अंकुर प्रस्फुटित होता है । जार्ज बर्नार्ड शाँ के अनुसार ''बाधाएँ व्यक्ति के लिए उत्कृष्टता का पैमाना बन सकती है। महान वैज्ञानिक थामस एडीसन विद्यालय में

महज तीन महीने ही नियमित पढ़ पाये। वो ऊँचा सुनते थे, उन्हें स्कूल से निकाल दिया गया था। उनकी माँ ने उन्हें खुद पढ़ाया उसके बाद आगे चलकर उनके द्वारा किये गये आविष्कारों से हम अनभिज्ञ नहीं हैं। एक बार उनकी फैक्ट्री जलकर खाक हो गयी तो उन्होंने कहा ''विनाश की भी एक सार्थकता होती है, फैक्ट्री के साथ गलतियाँ भी जल गयीं, अब नई शुरूवात करेंगे ।'' अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहिम लिंकन कितनी ही बार असफल हुए उसके बाद सफलता के शिखर पर पहुँचे और जीवन भर अच्छा करते रहे। युगपुरुष स्वामी विवेकानन्द जैसे कितने ही युगशिल्पी भारत में हुए जिन्होंने युवावस्था को सार्थक बना दिया । यदि इस उम्र में आत्मविश्वास भरा हो तो आप भीतर की शक्ति को जगा कर आश्चर्यजनक सफलताएँ प्राप्त कर सकते हैं । नेपोलियन, विस्मार्क आदि अनेक महान लोगों ने अपना तिरस्कार करने वालों को भी वाह-वाह करने को मजबूर कर दिया । वे सामान्य से महान लोगों की श्रेणी में आ गये तो अपनी शक्ति को पहचानिये उसे यूँ ही व्यर्थ कार्यों में नष्ट न होने दें । अतिशयता कहीं भी उचित नहीं होती, चाहे वह धार्मिकता की ही क्यों न हो । दूरस्थ मंदिरों में दर्शन हेतु पैदल या लोट लगाते हुए जाती टोली इस उम्र में ऊर्जा को समाजोपयोगी कार्यों में लगाये तो अच्छा है, धर्म का प्रदर्शन आवश्यक नहीं है । स्वामी विवेकानन्द का कथन है कि - ''मुझे केवल मंदिरों में सिर झुकाते युवा नहीं बल्कि फड़कती भुजायें चाहिए'' यह अत्यन्त सार्थक है, इसे आपको समझना है । वरना इतिहास गवाह है धर्म या अहिंसा की प्रतिबद्धता में एक समय ऐसा भी आया कि युवाशक्ति का ह्रास हुआ और विदेशी शक्तियाँ हावी हो गयीं । अतः अपनी इस उम्र की ऊर्जा को सृजनात्मक कार्यों में लगा देना ही इस उम्र की सार्थकता है । अर्जुन, एकलव्य, वीर शिवाजी, की तरह लक्ष्य के लिये एकाग्र बनिये, अनुशासित रहिये, कमजोर नहीं । मानव जीवन अत्यन्त दुर्लभ है इसे व्यर्थ में न गवाँइये । आज-कल के ही समाचार में आपने पढ़ा-सुना होगा कि अमेरिका के पचास बड़े दानदाताओं में तीन भारतीय रेशमा सौजानी, शैला, आदर्श अलफ्रेंसै जिनकी उम्र 40 वर्ष से कम है, ये युवा व्यवसाायी, सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं । ऐसे ही रोल मॉडल बनिए । हम सबका आशीर्वाद व शुभकामनायें इस पीढ़ी के साथ रहेंगी । बुरी आदतों से दूर रहिए, उम्र के भटकाव से बचिए अपने आदर्श मार्गदर्शक चुन लीजिये वैसे तो आप में स्वयं में अच्छे-बुरे की पहचान की क्षमता है । तो अच्छे इंसान बने, अच्छा करते रहें, एक-न-एक दिन अच्छे परिणाम की कोई कली खिलेगी । जिससे आपकी सफलता की खुशबू इस जगत को महका देगी । इसलिये उसी पथ का निर्माण करो जिसके लिए तुम बने हो - क्योंकि - ''तुम आशा विश्वास हमारे''

रसायन शास्त्र विभाग

परिचर्चा:

शिक्षण प्रक्रिया में भाषा की समस्या

संयोजक : डॉ. ज्योति धारकर

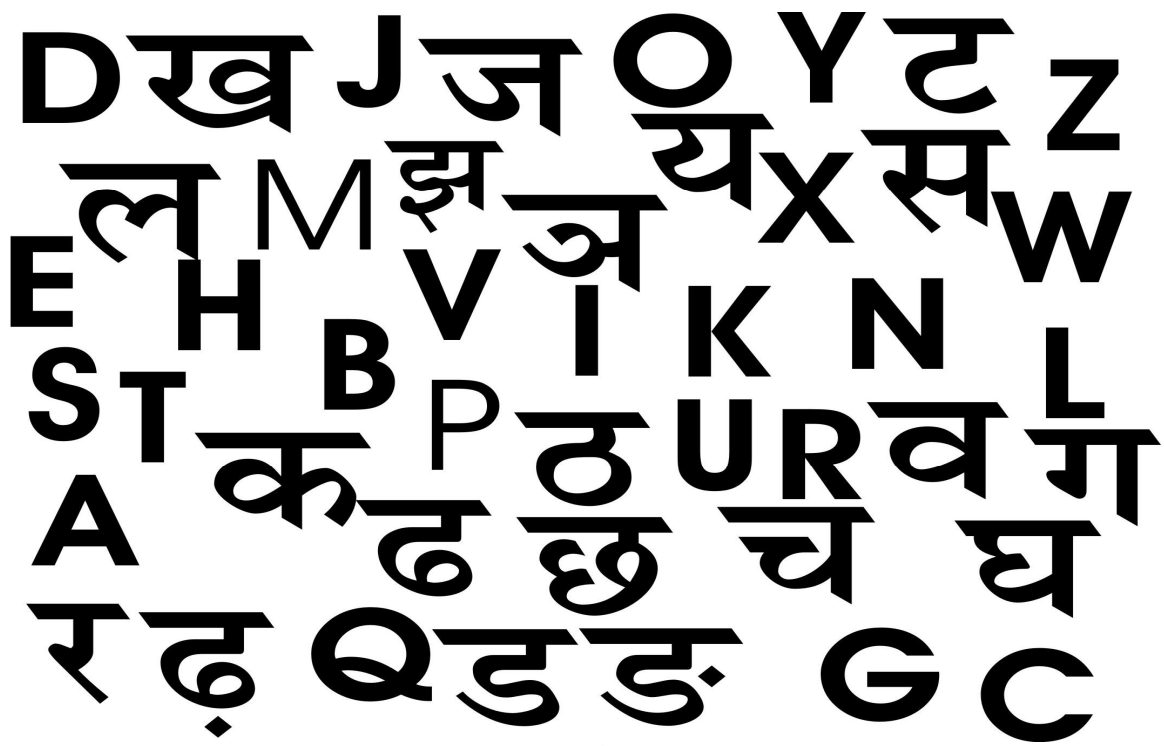

आज़ादी के पश्चात संवैधनिक प्रावधानों के अनुसार हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया गया। किंतु आज 67 वर्ष बीत जाने के बाद यह अनुभव होता है कि राष्ट्रभाषा हिंदी सम्पूर्ण देश में अध्ययन-अध्यापन के माध्यम के रूप में, अपनी पहचान बनाने मे अपेक्षाओं के अनुरूप सफल न हो सकी। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में स्थिति और भी गंभीर है । समय की गति के साथ अध्यापन के माध्यम और हिंदी के बीच दूरियाँ लगातार बढ़ रही हैं। यह जानने के लिऐ महाविद्यालय के प्राध्यापकों से निम्नांकित बिंदुओं पर चर्चा की गई :

1. *विज्ञान विषयों के शिक्षण में हिंदी शब्दावली को न अपनाये जा सकने के क्या कारण हैं?*
2. *स्नातकोत्तर कक्षा उत्तीर्ण कर लेने के बाद भी हमारे छात्र किसी विषय पर मौलिक ढंग से सोच नहीं पाते और न ही ठीक तरह से अभिव्यक्त कर पाते हैं। इसके क्या कारण है?*
3. *अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया में भाषा कौशल*
   अथवा भाषा ज्ञान की क्या भूमिका है?

4. क्या कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के 67 वर्ष बीत जाने के बाद भी हिंदी आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की भाषा नहीं बन सकी है?

5. हिंदी में प्राकृतिक विज्ञान अर्थात मूलभूत विज्ञान और सामाजिक विज्ञान में मौलिक पुस्तकों का अभाव है। इस धारणा से यदि आप सहमत हैं तो आपकी नज़र में इसके क्या कारण है?

इन प्रश्नों के उत्तर देते हुए महाविद्यालय के प्राध्यापकों ने शिक्षण प्रक्रिया में भाषा की समस्या पर गंभीरता पूर्वक विचार किया। सामान्यतः प्रतिभागियों में हिंदी की मानक शब्दावली की क्लिष्टता के साथ ही मौलिक चिंतन और आलोचनात्मक विवेक को रेखांकित किया। साथ ही मौलिक चिंतन और आलोचनात्मक विवेक की कमी के सामाजिक कारण, अनुवाद के प्रति उदासीनता, सीखने की परिपाटीबद्ध प्रक्रिया, भाषा के प्रति औपनिवेशिक दुराग्रह का मानसिकता के स्तर पर प्रभाव, अंध हिंदी विरोध, विद्यार्थियों से सीखने की बजाय, रटने की प्रवृत्ति आदि की ओर भी यथेष्ट संकेत किया ।

शिक्षण-प्रक्रिया में भाषा की समस्या विषयक इस परिचर्चा महाविद्यालय के प्राचार्य तथा विभिन्न संकायों के प्राध्याकों के विचार प्रस्तुत हैं ।

डॉ सुशील चन्द्र तिवारी (प्राचार्य)

अंग्रेजी शब्दावली हिंदी में स्वीकार की जाने लगी है -विज्ञान शिक्षण में हिंदी शब्दावली का प्रयोग पहले की तुलना में अधिक हो रहा है। विज्ञान के अधिकांश शब्दों या प्रक्रियाओं की अँग्रेजी शब्दावली इतनी ज्यादा प्रचलित हो चुकी है कि हिन्दी में भी उन्हे स्वीकार किया जाने लगा है। तकनीकी व्याख्या में अधिकतर ऐसा हो रहा है। हिन्दी में अनुभव भी ऐसा है कि उसकी भाषा कठिन है, जिससे विज्ञान विषयों का विवरण और व्याख्या असहज सी हो गई है।

विद्यार्थी इंटरनेट की भाषा में बोल लिख रहे है- स्नातकोत्तर विषयों की पाठ्य सामग्री अँग्रेजी से अनुवादित है या तो शुरू में हिन्दी के शब्दों का प्रयोग किया गया है। या फिर अँग्रेजी को हिन्दी में लिख दिया गया है और वह अनुवाद सहज ग्राह्य नही है। इसी कारण मौलिकता भ्रमित हो गई है और विद्यार्थी इंटरनेट की भाषा में बोल लिख रहे हैं। हिन्दी एवं अँग्रेजी दोनों भाषाओं में दक्षता हो तभी विज्ञान या सामाजिक विज्ञान पर लेखन में मौलिकता आ सकती है।

अनुवाद की शैली अग्राहय है - शिक्षण-प्रक्रिया में भाषा कौशल एवं भाषा ज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका है। अध्ययन करना और उसे अभिव्यक्त करना इसमें श्रेष्ठता के लिए भाषा ज्ञान की आवश्यकता होती है। अँग्रेजी में पढ़ी गयी विषय वस्तु को हिन्दी में प्रस्तुत करते वक्त यदि अनुवाद वाली शैली अपनाई जावे तो वह असहज एवं अग्राह्य होगी। यहां पर कौशल व ज्ञान से काम किया जाये।

अधिकांश शोधकार्य अँग्रेजी में हो रहा है - हिन्दी में अनुवाद कुछ ही किताबों का हुआ है। तात्कालिक रूप से उसका हिंदी अनुवाद नहीं हो पा रहा है। जिससे लोकप्रिय विज्ञान की विषय वस्तु उतनी हिन्दी में उपलब्ध नहीं हो पाती जितनी चाहिए या समय पर नहीं आ पाती । इससे विज्ञान के क्षेत्र में अभी तक अँग्रेजी पर आश्रित है।

प्रकाशकों की व्यासायिकता भी एक कारण है - मूलभूत विज्ञान और सामाजिक विज्ञान में अब काफी मौलिक लेखन हिन्दी में हो रहा है पर वह पर्याप्त नहीं माना जा सकता। अनुवाद पर टिका लेखन कहीं न कहीं प्रकाशकों की व्यावसायिकता के कारण भी है। प्रतिस्पर्धा ने एवं व्यापार ने इसे इस कदर प्रभावित किया है कि मौलिक लेखन कहीं दब सा गया है या फिर हिम्मत नहीं दिखा पा रहा है। हिम्मत का तात्पर्य उसे प्रामाणिकता और गुणवत्ता के छदम प्रमाण पत्र की आवश्यकता होती है।

डॉ. अंजली अवधिया

भौतिक शास्त्र विभाग

काश भाषा को प्रतिष्ठा का प्रश्न न मानकर अभिव्यक्ति का माध्यम माना गया होता ?

बुद्धिजीवी, प्राध्यापक वर्ग और नीति निर्धारक जिम्मेदार है अगर भाषा को प्रतिष्ठा का प्रश्न न बनाकर सिर्फ अभिव्यक्ति के एक माध्यम के रूप में उपयोग में लाते तो शायद विज्ञान को समझने के लिये सरल हिन्दी का उपयोग अब तक किया जाने लगता। वास्तव में वैज्ञानिक शब्दावली अँग्रेजी से भी ज्यादा हिन्दी में कठिन है । कौन-सा 5 या 10 वर्ष का बच्चा ऐसी संस्कृति निष्ठ हिन्दी समझ सकता है जैसी हिन्दी विज्ञान की किताबों में उपयोग में लाई जाती है । भाषा वो चुनें जिन्हें उसे उपयोग में लाना है, भाषा थोपी नहीं जानी चाहिए ।

हमारी सामाजिक संस्थाएँ मीडियाक्रिटी की पोषक है ।

- वर्तमान भारतीय सामाजीकरण की प्रक्रिया को प्रोत्साहित नहीं करती । मनोवैज्ञानिक अध्ययन यह बतलाते हैं कि हमारे मूल्य, हमारे विचार और हमारी भाषा पाँच वर्ष की उम्र तक पूर्ण विकसित हो जाते हैं । मौलिक सोच पर पहला कुठाराघात तो घर पर ही होता है । चाहे घर हो, स्कूल हो या कॉलेज हमें सभ्य, शालीन, विनम्र, आज्ञाकारी बच्चा चाहिए जो बिना प्रश्न पूछे अभिभावक व शिक्षक की आज्ञा का पालन करे । ऐसे में प्रतिभाशाली विद्यार्थी की मौलिक सोच के लिये जगह ही कहाँ है । वह तो प्रश्न पूछेगा । आईंस्टीन ने स्कूल क्यों छोड़ दिया, एम.एफ. हुसैन को जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स में दखिला क्यों नहीं मिला

- हमारी सामाजिक संस्थाएँ मिडियाक्रिटी की पोषक व संरक्षक हैं यहाँ प्रतिभा निष्काषित है हर जगह, हर ठौर । यहाँ अपने मूल्यों व मौलिक सोच के साथ जहर पीने वाले सुकरातों की जगह सुविधाजनक समझौते करने वाले सफल होते हैं ।

मैं मौलिक सोच न होने के लिए मातृभाषा में शिक्षा न दिए जाने से ज्यादा समाजीकरण की गलत परिपाटियों को मानती हूँ। अगर मौलिक सोच होगी, तो वह अभिव्यक्ति के माध्यम ढूँढ लेगी । भाषा के अलावा भी अभिव्यक्ति के सैकड़ों माध्यम हैं। मानव एकमात्र ऐसा प्राणी है जो कोई भी भाषा या कौशल सीख सकता है अगर वह उसकी आवश्यकता महसूस करता है । जब विद्यार्थी यह देखता है कि बिना मौलिक विचारों के निष्पादन के भी वह अच्छे नम्बरों से पास हो रहा है तो वह मौलिकता के लिए माथापच्ची क्यों करें ?

भाषा वस्तुतः शिक्षण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपादान नहीं है ।

- सीखने सिखाने की प्रक्रिया को समझाने के लिए एक लर्निंग
पिरामिड की कल्पना की गई है ।
10% पढ़ाना
10% पढ़ना
50% सुनना व देखना
70% स्वयं करना
90% दूसरों को सिखाना या उपयोग करना।
इस पिरामिड के अनुसार मौखिक संप्रेषण सिर्फ 10 या 20 प्रतिशत ही सहायक होते हैं। अतः भाषा का महत्व होते हुए भी अध्ययन-अध्यापन के लिए वह सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपादान नहीं है । खासतौर पर कौशल या विज्ञान तकनीक सम्बन्धी विषयों के लिए ।

न राजनीतिक इच्छा शक्ति है, न जन-चेतना ।

भाषा थोपी नहीं जा सकती । यह एक सत्य है, कि आज भी हम विज्ञान की अच्छी किताबों के लिए अँग्रेजी पर निर्भर हैं। पर क्या आज तक इसके विरोध में एक भी जनआंदोलन हुआ है? यूरोपीय और बहुत से एशियाई देशों में अनुवाद संस्थान होते हैं जो हर विषय की पुस्तकों को अपनी भाषा में उपलब्ध कराते हैं । हमारे यहाँ न तो राजनीतिक इच्छाशक्ति नज़र आती है न जन चेतना ।अगर आप बताएँ कि आपको आवश्यकता है, तो जिस तरह महँगे प्रोडक्ट, सस्ते पाउचों में आने लगे हैं, विज्ञापन क्षेत्रीय भाषाओं में आने लगे हैं, वैसे ही पुस्तकें हिन्दी में आने लगेंगी । और जब किसी को इतने बरसों तक आवश्यकता ही महसूस नहीं हुई तो किसे दोष दें और कब तक ?

मैक्समूलर ने दशकों पहले विज्ञान व दर्शन सम्बन्धी संस्कृत ग्रंथों का जर्मन में अनुवाद किया था, पर भारत में आज तक उन्हें हिन्दी में अनूदित नहीं किया गया। क्यों ? यह विचारणीय है ।

डॉ. अनुपमा कश्यप

रसायन विभाग

वैश्वीकरण के कारण अँग्रेजी - ज्ञान आवश्यक विज्ञान विषयों से संबंधित हिन्दी शब्दावली अतिक्लिष्ट है । साथ ही वैश्वीकरण के कारण भी विज्ञान की अँग्रेजी शब्दावली का ज्ञान होना आवश्यक है, अतः विज्ञान विषयों को समझने और बोलने में हिन्दी की अपेक्षा अँग्रेजी शब्दावली सरल लगती है । यही कारण है कि विज्ञान विषयों के शिक्षण में हिन्दी शब्दावली को कम अपनाया जाता है ।

विद्यार्थी परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिये ही पढ़ते हैं

विद्याथियों में मौलिक चिन्तन के अभाव के लिये वर्तमान शिक्षा पद्धति एवं पाठ्यक्रम में दोष सबसे बड़ा कारण है, जिसमें व्यवहारिकता की कमी है परीक्षा उत्तीर्ण करने हेतु भी यह पद्धति रटन्त विद्या को बढ़ावा देती है । जिससे छात्र विषय के प्रति रुचि जागृत ही नहीं कर पाते । छात्रों में जागरूकता एवं वैज्ञानिक सोच का भी अभाव है । वह विषय को सिर्फ परीक्षा उत्तीर्ण करने के उद्देश्य से ही पढ़ता है । वास्तविकता भी यही है कि उसका अधिकांश स्थानों पर परीक्षा-परिणाम के आधार पर ही मूल्यांकन होता है । यही वजह है कि वे विषय के मूल को समझने की कोशिश नहीं कर पाते हैं, न ही मौलिक ढंग से सोच पाते हैं और न ही ठीक से अभिव्यक्त करते हैं ।

भाषा व्यक्तित्व का आइना है - अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया में भाषा-कौशल या भाषा-ज्ञान की भूमिका अहम होती है। यह हमारे व्यक्तित्व का आईना होती है । दूसरों तक अपनी बात पहुँचाने में भाषा कौशल सशक्त माध्यम होता है । भाषा ज्ञान द्वारा अध्यापन के अन्तर्गत विषय को लेकर सुदृढ़ और अच्छी तरह से समझाया जा सकता है ।

हिन्दी राजनीति का शिकार हुई है – स्वतंत्रता के पूर्व बड़े पैमाने पर हिन्दी का प्रयोग जनभाषा के रूप में किया जाता था किन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अलगाववादी व स्वार्थी तत्वों ने हिन्दी का विरोध प्रारम्भ किया । भाषा के उपयोग के आधार पर प्रांतों के गठन के कारण यह समस्या और बढ़ गयी । हिन्दी भाषा को विचारों की अभिव्यक्ति नहीं अपितु राजनीतिक शतरंज की मुहर के रूप में प्रयोग किया जाने लगा जिससे अत्यधिक कम प्रतिशत लोगों द्वारा प्रयुक्त अँग्रेजी भी अपना वर्चस्व जमाने लगी । फिर संविधान में प्रारम्भिक 15 वर्षों के लिये अँग्रेजी को सह राजभाषा का दर्जा मिला जिसे लगातार प्रोत्साहन दिया गया तब हिन्दी उपेक्षित होती चली गयी । साहित्यिक हिन्दी से अधिक बोलचाल लायक सरल हिन्दी का आधार विकसित करना होगा उपरोक्त कमी के कारण भी हिन्दी आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की भाषा न बन सकी ।

हिन्दी में मौलिक पुस्तकों का अभाव नहीं है - मैं इस धारणा से सहमत नहीं हूँ कि हिन्दी में मौलिक पुस्तकों का अभाव है । अभाव है तो हमारे अध्ययन का। पुस्तकों की या संबंधित पठन सामग्री का अभाव नहीं है, इस तरह के विषयों से संबंधित प्राचीन ग्रंथों व पुस्तकों के प्रति कम लोगों में रुचि है ।

श्रीनिवास देशमुख

भूगर्भशास्त्र विभाग

पाठ्य सामग्री की कमी और हिंदी की क्लिष्ट शब्दावली का प्रयोग मूलभूत कारण है - अक्सर यह देखा गया है कि विज्ञान विषयों के पठन पाठन का माध्यम हिंदी एवं अँग्रेजी का मिश्रित स्वरूप है, जिसके कुछ मूलभूत कारणों में हिंदी भाषा में विज्ञान विषयों की अच्छी पाठ्य पुस्तकों, संदर्भ ग्रंथों एवं स्तरीय शोध पत्रिकाओं की कमी, विज्ञान विषयक तकनीकी अँग्रेजी शब्दों का क्लिष्ट हिन्दी रूपांतरण, शिक्षकों द्वारा विज्ञान के शिक्षण में अँग्रेजी शब्दावली के प्रयोग को प्रोत्साहन देना हैं।

भाषा और अभिव्यक्ति कौशल विकसित करने में छात्रों के लिए प्रशिक्षण आवश्यक है - विद्यार्थी अपने पाठ्यक्रम की पुस्तकों के अलावा अन्य विषयों जैसे साहित्य एवं समसामयिक विषयों के बारे मे विभिन्न माध्यमों (ग्रंथालय, टीवी., इंटरनेट आदि) द्वारा जानकारी हासिल करने में कम रूचि रखते हैं। इस संबंध में उनको प्रोत्साहित करने वाले वातावरण, गतिविधियों, शिक्षकों एवं साथियों की कमी है।

सबसे महत्वपूर्ण बात भाषा एवं अभिव्यक्ति में निपुणता प्राप्त करने का प्रशिक्षण न मिलना है। विद्यार्थियों में लिखने की आदत में भी कमी दिखाई देती है।

एक अन्य कारण, पठन-पाठन के दौरान शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को मौलिक ढंग से सोचने के प्रयास को बढ़ावा देने में कमी है।

भाषा ज्ञान की तरह सम्प्रेषण कौशल भी महत्वपूर्ण

है - अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया में भाषा कौशल अथवा भाषा ज्ञान की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है। जितना महत्वपूर्ण विषय से संबंधित ज्ञान है उतना ही महत्वपूर्ण उस ज्ञान को संप्रेषित करने का कौशल है।

शासकीय प्रयास केवल खानापूर्ति रह गये हैं - समूचे विश्व में ज्ञान विज्ञान संबंधी जानकारी के आदान-प्रदान हेतु अँग्रेजी भाषा को मान्यता प्राप्त है तथा हिन्दी को स्थापित करने के लिये किये गये गंभीर प्रयास कम ही हुए हैं। शासकीय संस्थाओं द्वारा इस संबंध में किये गये प्रयास मात्र कुछ क्षेत्रों में ही औपाचारिकता अथवा खाना पूर्ति की परिधि को लांघ पाए।

शिक्षकों की अरुचि भी एक कारण है - हाँ, मैं इस बात से सहमत हूँ। इसका एक कारण हममें (शिक्षक वर्ग में) हिंदी में मौलिक पुस्तकें लिखने में अरुचि अथवा इच्छा शक्ति में कमी है।

दूसरी बात यह है कि विज्ञान के पठन-पाठन के दौरान जो ज्ञान विद्यार्थियों को परोसा जाता है, वह अधिकांश रूप से अँग्रेजी पाठ्य पुस्तकों, संदर्भ ग्रथों अथवा इंटरनेट से प्राप्त जानकारी पर आधारित है। इससे विद्यार्थियों में (इसमें हमारी पीढ़ी भी शामिल है) यह धारणा बन गयी है कि अगर विज्ञान विषयक मौलिक पुस्तकें पढ़ना है तो वे अँग्रेजी भाषा में ही मिलेंगी ।

डॉ. प्रज्ञा कुलकर्णी

वनस्पतिशास्त्र विभाग

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी शब्दावली मान्य नहीं है – विज्ञान विषयों के शिक्षण में हिन्दी शब्दावली न अपनाने के पीछे मेरी दृष्टि में अनेक कारण है जैसे - वर्तमान शिक्षण व्यवस्था, प्रारम्भिक शिक्षण स्तरों पर सामान्य ज्ञान के रूप में भी अँग्रेजी शब्दावली का उपयोग, हिन्दी शब्दावली से युक्त पुस्तकों का अभाव, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी शब्दावली को मान्यता नहीं मिलता, तथा हिन्दी अनुवादित तकनीकि शब्दों का क्लिष्ट समझा जाना ।

छात्र विषय-सामग्री को रट लेते हैं - इस तरह की कमजोरी का मूल कारण है विषय से संबंधित या उससे हट कर सामान्य वाचन (जनरल रीडिंग) की कमी ।

विद्यार्थी अपने पाठ्यक्रम को किसी शब्दावली की तरह रट लेते हैं या कुछ विद्यार्थी उसे उसी भाषा में ग्रहण कर लेते हैं जिस तकनीकी भाषा में उसे प्रदान किया जाता है ।

मौलिक ढंग से सोचने या विषय को अभिव्यक्त करने के लिए विषय की व्यवहारिक एवं पाठ्यक्रम में उसकी प्रासंगिकता का ज्ञान आवश्यक है ।

भाषा ज्ञान अति आवश्यक है ।

- किसी भी विषय के अध्ययन एवं अध्यापन की प्रक्रिया में भाषा कौशल अथवा भाषाज्ञान का होना अति आवश्यक है । भाषा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा विषय की व्यवहारिकता को समझा या समझाया जा सकता है । भाषा विचारों की अभिव्यक्ति है । चाहे वह विचार मौलिक हो या किसी और अन्य व्यक्ति द्वारा कहे गये हो । भाषा की विभिन्न शब्दावलियों का उपयोग कर मौलिक विचारों का सम्प्रेषण कुशलता पूर्वक एवं रोचक ढंग से किया जा सकता है ।

मूलतः अँग्रेजी ही शिक्षण का माध्यम है ।

- हिन्दी को आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की भाषा न बन सकने के लिये दो कारकों का महत्वपूर्ण योगदान है । एक, वर्तमान शिक्षण पद्धति में विज्ञान विषय को अँग्रेजी माध्यम में पढ़ाया जाना और दूसरा है विषय से संबंधित पुस्तकों का अँग्रेजी में उपलब्ध होना । मूलतः अँग्रेजी ही शिक्षण का माध्यम बनी हुई है ।

हिन्दी में अद्यतन जानकारी उपलब्ध नहीं हो पाती

– विज्ञान विषय से संबंधित अधिकतम शोध एवं अनुसंधान अँग्रेजी माध्यम में संकलित एवं संपादित किये गये हैं । भारत में राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले शोध कार्यों को सर्वमान्य विषय मानकर अँग्रेजी में प्रकाशित किया जाता है । हिन्दी माध्यम में उपलब्ध कुछ पुस्तकें या तो अनुवाद पर आधारित होती हैं या फिर केवल शब्द कोष उपलब्ध कराती है । इस तरह की पुस्तकों द्वारा अद्यतन जानकारियाँ उपलब्ध नहीं हो पाती अतः वे लोकप्रिय भी नहीं हो पाते ।

डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय

इतिहास विभाग

हिन्दी की राष्ट्रीय स्वीकार्यता अब भी संभव नहीं हो पायी है

हिन्दी शब्दावली को न अपनाये जाने का मुख्य कारण है अँग्रेजी की तुलना में हिन्दी रूपान्तरित तकनीकी

शब्दों का अधिक कठिन होना तथा पूर्व से प्रचलित पाश्चात्य शब्दावली का जनमानस में ज्यादा लोकप्रिय होना । साथ ही एक कारण यह भी है कि शिक्षा के माध्यमिक स्तर से उच्च शिक्षा स्तर तक मानक हिन्दी शब्दावली पर आधारित विज्ञान विषयों में मान्य हिन्दी पाठ्य पुस्तकों का अभाव । सर्वप्रमुख तथ्य यह है कि बहुभाषी भारत में हिन्दी की राष्ट्रीय स्वीकार्यता अब तक नहीं हो पाई है ।

नवीन अनुसंधानों के प्रति उदासीनता चिंतन को अवरुद्ध करती है ।

- हमारी शिक्षा पद्धति, पाठ्यक्रम एवं परीक्षा प्रणाली मौलिक चिन्तन को उत्प्रेरित नहीं करती ।

आज ज्ञानार्जन के लिए बाजारू डिग्री प्राप्त करना शिक्षा का एकमात्र लक्ष्य है । फलतः विद्यार्थी स्वयं को अध्ययन व मनन के सीमित साधन तक संकुचित कर लेता है । इसके साथ ही विद्यार्थियों में अभिव्यक्ति विकास के लिए नियमित कक्षा कार्यक्रम के आयोजन का न होना और इसके परिणामत स्वरूप विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की कमी विषय से संबधित नवीन अनुसंधानों से प्राध्यापक एंव विद्याथियों को अवगत न होना जैसे कारण मौलिक चिन्तन के मार्ग को अवरुद्ध करते हैं ।

भाषा व्यक्तित्व-विकास में सहायक है -

- अध्यापन शैली में भाषा कौशल की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी के द्वारा शिक्षक-विद्यार्थियों में विषय-वस्तु का प्रभावी ढंग से संप्रेषण करने में सफल होता है। इसके साथ ही यह आत्मविश्वास एवं व्यक्तित्व विकास में सहायक होता है और पठन-पाठन की प्रक्रिया में सजीवता प्रदान करता है ।

हिन्दी बुद्धिजीवियों द्वारा सार्थक पहल नहीं की गई - आज़ादी के 67 वर्षों के बाद भी हिन्दी शिक्षा माध्यम के रूप में सर्व मान्य नहीं हो पायी इसके लिये बहुत सारे तथ्य जिम्मेदार है जैसे - शिक्षा के व्यावसायीकरण के कारण अँग्रेजी माध्यम के निजी स्कूलों की निरन्तर बढ़ती संख्या, हिन्दी का सरकारी स्कूलों में पढ़नेवाले विद्यार्थियों की भाषा बनकर रह जाना । सरकार द्वारा शिक्षा में गुणवत्ता विकास हेतु सकल घरेलू आय का न्यूनतम आबंटन, राजनीतिक इच्छा शक्ति के अभाव के साथ हिन्दी के बुद्धि जीवियों द्वारा इस दिशा में सार्थक पहल का न किया जाना तथा सार्वजनिक क्षेत्रों एवं बहुराष्ट्रीय कंपनियों में अग्रणी की अधिक स्वीकार्यता ।

हिन्दी पुस्तकों की सीमित मान्यता भी एक समस्या है ।

- अँग्रेजी भाषा की पुस्तकों की तुलना में हिन्दी भाषा की पुस्तकों का अभाव रहा है । हाँलाकि पिछले तीन दशकों से अँग्रेजी की पुस्तकों के अनुवाद के प्रकाशन के सराहनीय प्रयास किये गये हैं।

प्रबुद्ध वर्ग एवं लेखकों के एक बड़े वर्ग की अवधारणा रही है कि अँग्रेजी में पुस्तकों के प्रकाशन से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक बड़ा वर्ग लाभान्वित हो सकता है, जबकि हिन्दी का दायरा सीमित क्षेत्र तक है । कॉपीराइट की समस्या के कारण भी अच्छी पुस्तकों के अनुवाद में कमी होती है ।

डॉ. वेदवती मण्डावी

राजनीति विज्ञान विभाग

शिक्षकों के ज्ञान कोष में हिन्दी शब्दावली का अभाव है ।

- हिन्दी शब्दावली का अभाव इसलिए है कि अधिकांश मूल खोज एवं अनुसंधान भारत के बाहर विदेशियों द्वारा किया है अतः उनकी शब्दावली भी उनकी अपनी भाषा में होती है । चूकि अँग्रेजी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है जिसके कारण अधिकांश पुस्तकें अँग्रेजी में लिखी गई हैं। जैसे भारतीय खोज योग एवं आयुर्वेद शब्द का प्रयोग अँग्रेजी में भी हिन्दी के समान होता है।

विज्ञान में हिन्दी शब्दावली अँग्रेजी की तुलना में कठिन है उसमें प्रचलित शब्द नहीं होते हैं । अधिकांश शिक्षक अँग्रेजी में शिक्षण को अपनी विद्वता का परिचायक मानते हैं ।

सैद्धांतिक ज्ञान पर अधिक बल दिया जाता है ।

शिक्षण पद्धति में व्यावहारिक ज्ञान की अपेक्षा सैद्धान्तिक ज्ञान पर अधिक बल दिया जाता है जिसे छात्र नहीं समझ पाते ।

छात्रों की प्राथमिक एवं हायर सेकेण्ड्री की शिक्षा स्तर हीन होने के कारण वे महाविद्यालयीन उच्च शिक्षा के स्तर को समझ नहीं पाता ।

शासकीय शालाओं में अध्ययन करने वाले अधिकांश छात्र ही शासकीय महाविद्यालयों में अध्ययन करते हैं। वे अधिकांश समय पूर्व में मध्यान्ह भोजन और

बाद में जीविकोपार्जन में लगे होते हैं । इसके अलावा अधिकांश छात्रों की मानसिकता मेहनत कम और फल की ज्यादा आकांक्षाओं में लिप्त है। ऐसे छात्रों का मूल उद्देश्य केवल परीक्षा पास करना होता है । रटकर परीक्षायें पास करने की प्रवृत्ति बढ़ गई है । कुछ शिक्षक विषय की व्याख्या छात्रों के स्तर के अनुरूप नहीं करते । केवल पाठ्यक्रम पूरा करते हैं ।

छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल शिक्षा होनी चाहिए।

अध्ययन, अध्यापन की प्रक्रिया में भाषा ज्ञान की प्रमुख भूमिका है । भाषा चाहे कोई भी हो वह अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है । अध्यापक अपने ज्ञान एवं प्रस्तुति-कौशल से इसे सरल बनाता है जिससे छात्र भी आसानी से समझ सकता है । अध्यापन करते समय साहित्यिक भाषा का प्रयोग करें यह जरूरी नहीं है । किन्तु अपने विषय ज्ञान का छात्रों के समझने लायक प्रस्तुतीकरण आवश्यक है । छात्रों के मानसिक स्तर को ध्यान में रखते हुए विषय वस्तु को प्रस्तुत करें । इस प्रकार भाषा ज्ञान और कौशल के माध्यम से विषय को सरल-सुगम तथा छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल बना कर शिक्षण किया जा सकता है।

आज़ादी के इतने वर्षों बाद भी हिन्दी ज्ञान विज्ञान की भाषा नहीं बन पायी इसके अनेक कारण हैं

– मूलभूत अनुसंधान भारत के बाहर हो रहा है । स्वतंत्रता प्राप्ति के तत्काल बाद से ही भारत में भाषायी विवाद प्रारम्भ हो गया था जो अब तक निरन्तर जारी है ।

भारत में हिन्दी से पहले प्राकृत भाषा का प्रादुर्भाव हुआ है जिसके कारण यह मूल भाषा के रूप में प्रचलित नहीं है ।

अधिकांश मूलभूत अनुसंधान भारत के बाहर हो रहा है जहाँ उनकी अपनी भाषा होती है । अँग्रेजी भाषा अन्तर्राष्ट्रीय भाषा होने के कारण विज्ञान की अधिकांश पुस्तकें अँग्रेजी में ही लिखी जाती हैं भारत में भाषाओं को संविधान में स्थान दिया गया है जिसके कारण सभी भाषा-भाषी अपने विकास के लिये प्रयासरत हैं । इसमें हिन्दी आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की भाषा नहीं बन सकी ।

सामाजिक विज्ञानों की पुस्तकें हिन्दी में उपलब्ध हैं ।

- प्राकृतिक विज्ञान अर्थात मूलभूत विज्ञानों में हिन्दी की मौलिक पुस्तकें नहीं हैं इससे मैं सहमत हूँ क्योंकि मूलभूत खोज या आविष्कार भारत से बाहर हुआ है । अतः स्वभाविक है अन्तराष्ट्रीय मानक भाषा में पुस्तकों का लेखन किया गया है । इसके अलावा भारत में समय-समय पर विदेशियों का आगमन हुआ और अपने हित के लिए उन्होंने कार्य किये । सामाजिक विज्ञान में अधिकांश अच्छी पुस्तकें हिन्दी में हैं क्योंकि मूल सामाजिक परिस्थितियों को देखकर लिखी गई हैं ।

डॉ. सुनीता मैथ्यू

रसायन विभाग

हिन्दी में पुस्तकों का अभाव है – शिक्षण में कुछ हद तक हिन्दी शब्दावली का प्रयोग किया जाता है परन्तु हिन्दी के कुछ पदों के प्रयोग में अध्यापक एवं विद्यार्थी सहज महसूस नहीं करते क्योंकि वे सामान्य व्यवहार में एवं अँग्रेजी शब्दावली ही प्रयोग करते हैं । जाहिर है, हिन्दी शब्द अधिक प्रचलित नहीं हैं।

कुछ ऐसे शब्द जैसे 'Fugacity' जिसका हिन्दी अनुवाद उपल्बध नही है। हिन्दी में विज्ञान विषयों की शब्दावली का विकास एवं समुचित प्रसार जितना होना चाहिए उतना नहीं हो पाया है । हिन्दी में संदर्भ पुस्तकों का अभाव भी एक कारण है।

शिक्षण-चर्चा प्रायः परीक्षा-उन्मुख है – स्नातकोत्तर कक्षा उत्तीर्ण कर लेने के बाद भी छात्र मौलिक ढंग से सोच नहीं पाते तथा ठीक तरह से अभिव्यक्त न कर पाने का मुख्य कारण छात्रों में विश्लेषणात्मक गुण की कमी तथा किसी भी विषय का गहन अध्ययन न करने की प्रवृत्ति है । छात्रों की शिक्षण-चर्या प्रायः परीक्षा-उन्मुख है, ज्ञान-उन्मुख नहीं । भाषा का सही ज्ञान न होना, समस्या के निपटारे की क्षमता का अभाव, विषय का मूलभूत आधारों उनके अनुप्रयोग करने की क्षमता का अभाव इत्यादि के कारण विद्यार्थियों की विचार क्षमता तथा अभिव्यक्ति कौशल प्रभावित होता है ।

भाषा ज्ञान अनिवार्य है - भाषा-कौशल अथवा भाषा-ज्ञान, अध्ययन-अध्यापन का मुख्य आधार है जिसके बिना यह प्रक्रिया संभव नहीं।अध्ययन करने वाली और अध्यापन करने वाले दोनों को भाषा ज्ञान होना अनिवार्य है। ज्ञान का प्रभावशील आदन-प्रदान का यह प्रमुख घटक है । विषय को सही तरह से समझने, उसके विश्लेषण करने एवं निष्कर्ष को अभिव्यक्त करने के लिये भाषा-ज्ञान अति

आवश्यक है ।

हिन्दी का समुचित प्रसार नहीं हुआ - अन्य भाषाएँ जैसे चीनी, जर्मनी आदि का व्यापक विकास हुआ है एवं उनका प्रयोग अनुप्रयोग व्यापक रूप से हर क्षेत्र में किया जाता रहा है लेकिन हिन्दी का विकास एवं प्रसार जितना होना चाहिए था उतना नहीं हुआ । आधुनिक विषयों के हिन्दी में प्रामणिक ग्रंथ न होने तथा वैश्विक स्तर पर हिन्दी की स्वीकार्यता न होना भी एक कारण है ।

डा. एम.ए. सिद्दीकी

विभागाध्यक्ष, गणित

अँग्रेजी शब्द पहले से प्रचलित है ।

विज्ञान विषयों के शिक्षण हेतु उपलब्ध हिन्दी शब्दावली में उपलब्ध तकनीकी शब्द प्रायः अपनी क्लिष्टता के कारण उपेक्षित हो जाते हैं। उदाहरणार्थ जैसे जकिन के तकनीकी शब्द nowhere dense के लिये पर्यायवाची हिन्दी नकुलापि सघन है। इसके अतिरिक्त विज्ञान के मूल तकनीकी शब्द अँग्रेजी के होने के कारण छात्र प्रायः अँग्रेजी शब्द से पहले परिचित होता है। और यह पाया गया है कि तकनीकी शब्द का यही अँग्रेजी संस्करण छात्रों पर अपना स्थायी प्रभाव बना लेता है तथा छात्रों की उसकी हिंदी अनुवाद बनाने में कोई विशेष रुचि नहीं रह जाती ।

व्याग या का ढंग मूलधारणा के इर्द-गिर्द होता है –

स्नातकोत्तर कक्षा उत्तीर्ण कर लेने के बाद भी हमारे छात्र किसी विषय पर मौलिक ढंग से सोच नहीं पाते, न ही ठीक से अभिव्यक्त कर पाते है। इसके क्या कारण है?

- जहां तक विज्ञान के स्नातकोत्तर कक्षा उत्तीर्ण छात्रों की बात है, चूंकि वैज्ञानिक प्रमाण/व्याख्या एक विशेष क्रम में तथ्यों का संकलन होता है साथ ही वैज्ञानिक अवधारणाओं में निश्चितता की ओर प्रवृत होने का अभिलक्षण होने के कारण विज्ञान के छात्रों का किसी विषय व्याख्या करने का ढंग, विषय की मूल अवधारणा के इर्द गिर्द होता है। इन प्रक्रियाओं के चलते विज्ञान के छात्रों में विचारों का प्रान्त अत्यधिक व्यापक नही नहीं हो पाता है। विज्ञान के छात्रों की अभिव्यक्ति (लेखन/व्याख्या) को यदि एक गणितीय मॉडल के रूप में व्यक्त किया जाये तो हम पाते हैं कि उनकी अभिव्यक्ति उस बेलन के सदृश्य है जिसका अक्ष, अवधारणा रेखा है। जाहिर है इस बेला का अनुप्रस्थ कार जितना कम होगा विज्ञान की दृष्टि से अभिव्यक्ति उतनी अच्छी मानी जायेगी।

शब्दावली निर्माण की गति धीमी है

विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में द्रुत गति से होते विकास के अनुपात में संगत हिन्दी शब्दावली के अस्तित्व में आने की गति काफी कम है इस कारण से हिंदी भाषा में पुस्तक लेखन अत्यन्त दुष्कर होता जा रहा है परिणाम स्वरूप विज्ञान के क्षेत्र में मौलिक पुस्तकों का अभाव होता जा रहा है।

Dr. Tarlochan kaur Sandhu

Deptt. of English

English serves as an important tool of better education - After India's independence officially English was given a status of an associate/assistant language and was supposed to terminate officially after 15 years. But it still remains as an important language and enjoys the status of not only as an associate language but as the most read, written and spoken language after Hindi. In our country with the advancement in science (empirical) and technology in the last few decades English has served as an important tool of better education, better prospects and we cannot deny its impact, Moreover English is no more the monopoly of the English people. Seeing its practical significance it has been introduced as one of the major mode of instruction at schools and colleges.

It is really a challenge for teachers/Professors in differently abled class, with students from different socio cultural

background where their native language as well as non-native languages L_1 & L_2 (could be Hindi, punjabi, Bengali, Marathi etc.) English is a medium of instruction. The pluralistic social milieu makes difficult to transliterate/translate terms/terminology into L_1 (mother tongue or Hindi) from English, specially when science (s) are taught.

Technical terminology is of no value unless it is made popular and is put into proper usage. Teachers of science use English terminology due to lack of awareness (I am not generalizing) of Hindi /Indian terminology. Also to maintain uniformity and to avoid confusion, standardization and popularization of scientific terminology is required or rather essential. Teachers should be given proper training by organizing certain programmers to fulfill their need of "terms" in Indian languages with the equivalent "terms" coined.

New Generation is more exposed to technology and media - If we look at a broader perspective, I don't think that today's youth is not capable of "thinking." Many things depend on the "environment" in shaping and cultivating young minds. Moreover present generation is more exposed to electronic gadgets, use social media to express themselves in a mixed language (Could be Hinglish, Bengalish, Pinglish, Tanglish, even Chhattisgarahi+English called Chinglish) though they deviate from their primary dialect or language, they select a "code" which is suitable to their age, sex, environment, region, geography, culture and society. On the one hand they aspire to prove themselves "better" but they cut a sorry figure when they have to express themselves while speaking and writing (both considered as productive skills.) This is due to lack of originality in thought process. Indepth study or deep insight of the subject is missing or sometimes not even found. Linguistic differences are also responsible for the non fluidity of their thoughts Books. and other resources remain untouched, sometime due to economic conditions the students cannot access these available material. Lack of awareness and social constraints hamper their approach and above all not knowing a language properly creates fear in their minds. They lack confidence and are diffident. One should be free from any kind of imposition, even of language, A native speaker can express himself /herself in his/her native language, but the idea needs to be promoted against the "mind set". Yet I feel if a student masters over more than two languages, his outlook, his personality develops and he can "see" or perceive the world from various angles.

Linguistic competence is essential - Language proficiency and linguistic competence in Learning - Teaching is essential. Concepts Grammaticality, Technicalities, vocabulary, structure promote letter learning and helps the teacher to motivate the students. Acquisition of 1st Language, and 2nd Language is possible with natural approach. A teacher in a classroom is a stimulator and must exhibit his skills so that students are benefitted.

Due to linguistic diversity English is Chosen - Pt. Jawaharlal Nehru while addressing the convocation at the University of Pune on 27th Jan, 1955 delivered " I would have English as an associate, additional language, which can be used not because of facilities but because I do not wish the people of non-Hindi areas to feel that certain doors of advancement are closed to them. So I would have it as an alternative language as long as people of India require it.' Since 68 years our National language Hindi and English as a second language is recommended to be taught in the schools and for functional purposes, Some states chose English

one among three languages.

Most probably when we talk about science and technology and other sciences including behavioural sciences studying /teaching through English is preferred. Due to linguistic diversity English is found easy and an important tool in higher education and administration. Moreover globalization of trade and commerce has opened up new jobs and we cannot deny that its is the predominant language of international commerce and Technology. It is viewed as a "window to the world" whereas Hindi' has its own limitations. Indians who know English symbolize it with better prospects and higher intellect. "Hindi" has crossed frontiers and has gained its significance in countries like Australia, UK and USA. The Indians in these countries chose Hindi as a second language to be taught in some schools.

Authors writing in Hindi don't get acknowledged - I do not have much information as to why there is shortage of books in Hindi. The basic reason could be that the authors do not get acknowledged if they write in Hindi or do not have "equivalent terminology" to use while writing. Publication may be also one of the reasons. promotion as well and demand of such books in schools, colleges etc.

Dr. Shahin Ghani

Psychology Deptt.

Universal Connectivity of English plays a vital role. - Hindi terminology is not being adopted in Science Teaching due to -

- Use of technical terms that are originally in English
- Absence of Standard books in Hindi dealing with the fundamentals of these subjects.
- Publishing Houses find it easier to market original works that are in English.-

Universal Connectivity of English language across regions & sectors be it private or govt. also plays a crucial role in English books still being more in demand.

Culture of Reading is dying gradually

- Most fail to rise above their socio-economic backgrounds and the environment around them be it family/peers etc. where they are deprived of educational challenges of reasoning.
- Conceptual clarity and Educational ground work is laid at preliminary stages for pre school onward, that very foundation being weak makes it near impossible for students to catch up later.
- Culture of reading Connceptual books n/Newspapers and other knowledge based articles is dying orderly. In this technological era every thing is available for fast consumption like Google providing easy answers without labuor makes the process of thinking, introspection, reasoning, creativity that is a time consuming, effort seeking endeavour fade away.
- Present Education system also fosters reproduction of learned information without any critical analysis, out of box thinking & creativity in answering of questions.
- Notes, below standard guides that make no sense, are the staple diet on which students feed as such the concept of logical deduction, threadbare analysis abilities are missing in students.
- Most academicians also do not put the effort of developing cognitive skills in their students by spoon feeding them and satiating their requirements.
- Most importantly "the desire, intention

& will of gaining knowledge and wanting to know more i.e, the quest for curiosity" is ending within students which is a sad stat of events.

- Communication skills one needs to understand have to be developed in a child. If during that young age his skills of language are developed he learns and retains them for life. Imparting these skills at College level & post that period is an immensely difficult task both for the teacher as well as the learner.

Command over language is a crucial asset

" Command on Language is a crucial asset in the teaching - learning process, A person with great language & communication skills & knowledge gets immediate interest and attention form students and most importantly retains it throughout the session.

- This "Art of playing with words" provides him a repertoire of words and sentences to flexibly interchange & modify the teaching process to suit students & their needs.

- This undisputable skill also can be explained in terms of Einstein's quote" If you can't explain it simply you don't understand it well enough yourself. As such Flexibility of modifying language can make the process of teaching & understanding easy for both the parties Concerned where knowledge, can be imparted in the simplest words possible

Publishers prefer to sell English books.

- India has linguistic diversity, be it the Southern or Eeastern regions where English is still the main Language binding them to the Country, Publishing house prefer to sell the Standard English books as it caters to the demand of maximum regions of the country.

- Also, while accepting few research works and good books being published in the country still one has to acknowledge that the standard of books and research work. abroad is more varied and novel. Publishing houses find it convenient to open Indian markets to such easily available standardized books.

- Education in India still, is based on the fundamentals & ground works in theroies proposed abroad, books published abroad, areas which are considered the basic standard book in varied subjects to get the fundamentals right.

Gradual erosion of the culture of reading.

- Yes, I do agree with the statement. Contemporary trend being witnessed in Hindi belt where these books are to be sold and cater to, is the gradual erosion of "the culture of textbook reading" specifically in govt. & small town colleges. Authors in the market and publishing houses are endorsing this harmful pattern by succumbing to the heavy demands of producing easy below standard translations of original works usuallyin English or far worse flooding the consumer market with cheap, below standard guides which do not provide any in-depth conceptual knowledge in the subject. At times one can even doubt whether an amateurs having no knowledge at all of the subject are writing theses works. No amount of creativity & reasoning in the market catering to Hindi medium students barring few examples. In the process I would also like to question the education system that awards marks to authors publishing books. This mad rush of crediting themselves and garnering points in the name of publishing books is also responsible for the lack of fundamental books in Hindi. Cutting & pasting of original works to ensure maximum books to ones credit is a major cause of down fall in standards of originality of works that is a time consuming process which could genuinely enrich the knowledge of students or challenges the knowledge of on author.

परिचर्चा

छत्तीसगढ़ के युवा वर्ग का पिछड़ापन : मिथक अथवा यथार्थ

- संयोजक : साजन परिहार
(एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर, अंग्रेजी)

छत्तीसगढ़ नया राज्य है लेकिन पिछले पंद्रह वर्षों में इसने उल्लेखनीय तरक्की की है । कृषि, उद्योग, व्यापार, शिक्षा, चिकित्सा, जनशक्ति - विकास एवं रोजगार-सृजन आदि विभिन्न क्षेत्रों में विकास के आंकड़े बताते हैं कि प्रदेश में बहुत कुछ सकारात्मक घटित हुआ है । लेकिन अब भी बहुत कुछ किया जाना शेष है, खासतौर से प्रदेश की युवा-शक्ति और उसकी नई सृजनात्मक क्षमताओं को देखते हुए यह अनुभव किया जा सकता है कि यहाँ उपलब्ध सुविधाएँ और संभावनाएँ उसकी सृजन-क्षमता और आकांक्षाओं की दृष्टि से यथेष्ट नहीं हैं । नई प्रौद्योगिकी, सूचना एवं संचार की बदली हुई परिस्थितियाँ और हर चीज के उपभोग्य वस्तु में बदल जाने की अनिवार्यता के इस युग में वह संभावनाओं और उम्मीदों के नए क्षितिज की ओर देख रही हैं, दूसरी ओर धीरे-धीरे उसमें परिस्थितिजन्य निराशा भी व्याप्त हो रही है । इस निराशा के मूल में जाने और भविष्य की उम्मीद-भरी रोशनी की तलाश की कोशिशों के तहत शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं से साक्षात्कार लिया गया है। इन परिस्थितियों में अपनी भूमिका और अपनी अपेक्षाओं को लेकर विद्यार्थियों ने गंभीरता पूर्वक अपने मंतव्य प्रकट किए ।

प्रश्नावली

1. छत्तीसगढ़ की युवा पीढ़ी शिक्षा और रोजगार के लिये प्रदेश के बाहर की ओर क्यों रूख करती है ?

2. क्या छत्तीसगढ़ शिक्षा के स्तर और रोज़गार के अवसरों की दृष्टि से पिछड़ा हुआ है?

यदि आप मानते हैं कि छत्तीसगढ़ पिछड़ा हुआ है तो पिछड़ेपन के कारणों पर प्रकाश डालिए । यदि पिछड़ा हुआ नहीं है तो उदाहरणों से स्पष्ट कीजिए कि शिक्षा और रोजगार की दृष्टि से छत्तीसगढ़ किस तरह एक उन्नत राज्य है।

3. छत्तीसगढ़ के युवाओं में क्या प्रतिस्पर्धा की प्रवृत्ति नहीं है ? क्या उनमें आत्मविश्वास की कमी है? यदि यह सच है तो इसके कारण क्या हैं?

4. अखिल भारतीय परिदृश्य में छत्तीसगढ़ के युवाओं को आप कहाँ पाते हैं ?

5. छत्तीसगढ़ के युवा किन क्षेत्रों में नये अवसरों की तलाश कर सकते हैं ?

6. प्रदेश का गौरव बढ़ाने वाली हस्तियों और उनकी प्रेरक उपलब्धियों को आप किस प्रकार रेखांकित करना चाहेंगे ?

देवलाल आर्य
एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

छत्तीसगढ़ शिक्षा और रोजगार के अवसरों की दृष्टि से पिछड़ा हुआ है । यहाँ की शिक्षा एवं रोजगार दोनों में वृहत सुधार की आवश्यकता है । छत्तसीगढ़ में जनसंख्या के सापेक्ष शिक्षा पिछड़ी है, हालाँकि 2001 में साक्षरता प्रतिशत 64 प्रतिशत से बढ़कर 70.28 प्रतिशत हुआ लेकिन आनुपातिक, दृष्टि से जनसंख्या में भी बढ़ोत्तरी हुई है । प्रदेश में विश्वविद्यालय एवं एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय स्थापित है । बजट में अन्य विश्वविद्यालय भी प्रस्तावित है । आज लगभग 30 प्रतिशत विद्यार्थी प्राथमिक शिक्षा बमुश्किल प्राप्त करते हैं । क्योंकि उनके पालक गरीबी एवं असमर्थता का हवाला देकर स्कूल भेजने से मना कर देते हैं । आज छत्तीसगढ़ की शिक्षा पर व्यय को उपभोग की दृष्टि से देखा जा रहा है, जो तात्कालिक है । आज शिक्षा व्यय पर वृहत विनियोग की आवश्यकता है ।

1. रोजगार के परिप्रेक्ष्य में भी छत्तीसगढ़ का पर्याप्त विकास नहीं हुआ । संगठित क्षेत्रों में तो रोजगार के अवसर सीमित दिखाई देते हैं, वहीं असंगठित क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध हो जाता है किन्तु संगठित क्षेत्र के अनुरूप

नहीं ।

2. 26 वां राज्य छत्तीसगढ़ बना लेकिन शिक्षा और रोजगार में अपेक्षाकृत वृद्धि एवं विकास नहीं हुआ । छत्तीसगढ़ की युवा पीढ़ी उच्च शिक्षा के लिए उत्तरी भारत एवं दक्षिण भारत की ओर रूख करती है। शिक्षा के प्रतिशत में कम खर्च - मूलभूत कारण है । यहाँ रोजगार-अंशकालीन नहीं है तो भी अंशकालीन के लिये शिक्षा एवं रोजगार के लिये बाहर की ओर रूख करते है। इसके निम्नलिखित कारण हो सकते हैं -

अ. उच्च शिक्षा एवं उच्च रोजगार में निरन्तरता की कमी

छत्तीसगढ़ की युवा पीढ़ी को रोजगार एवं शिक्षा उपलब्ध होती है वह मध्यम कोटि की होती है । उच्च स्तर की शिक्षा एवं रोजगार के लिये बाहर जाना पड़ता है, यहाँ रोजगार मिलता है तो कुछ समय के लिए ।

ब. अन्य स्थानों पर अधिक आमदनी

छत्तीसगढ़ के सापेक्ष महाराष्ट्र एवं गुजरात जैसे राज्यों में उसी शिक्षा स्तर से कहीं अधिक आमदनी मिलती है। इसलिये लोग पलायन करते हैं ।

स. असंगठित श्रमिकों की बहुयायत

संगठित क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों की छत्तीसगढ़ में कमी है । जो उच्च शिक्षा पाते हैं व संगठित क्षेत्रों से जुड़े व्यक्तियों के पुत्र होते हैं, उन्हें कमोबेश रोजगार मिल जाता है लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में लोग कौशल की कमी की वजह से साधारण अकुशल श्रम के कार्य करने को विवश हैं ।

3. यह सर्वविदित है कि यहां के युवाओं में आत्मविश्वास जागृत करने एवं प्रतियोगिता करने की शक्ति क्षीण सी है? इसके कई कारण हो सकते हैं । इनमें प्रशिक्षण की कमी, अशिक्षा तथा प्रोत्साहन का अभाव-आदि अनेक कारण हो सकते हैं । प्रोत्साहन के अभाव में कई युवा अपनी पढ़ाई तथा रोजगार के अवसरों से वंचित रह जाते हैं ।

हमारे राज्य में युवाओं को प्रशिक्षण के उपयुक्त अवसर सरकार द्वारा नहीं दिया जा रहा है, जिससे प्रतिस्पर्धा नहीं कर पाते तथा आत्मविश्वास में कमी आ जाती है ।

कुछ विकसित जिलों को छोड़कर शिक्षा बाकी जिलों में कमजोर है ।अशिक्षा से जागरूकता एवं आत्मविश्वास तथा प्रतिस्पर्धा करने की शक्ति का ह्रास, होता है ।

4. भारतीय परिप्रेक्ष्य की बात करें तो छत्तीसगढ़ के युवाओं का महत्वपूर्ण योगदान है । छत्तीसगढ़ में युवा खेलों में, शिक्षा में, तथा चिकित्सा में अपना परचम लहरा रहे हैं । छत्तीसगढ़ की संस्कृति से सराबोर युवाओं ने उसकी अपनी छटा को अनेक राज्यों तक पहुँचाया है । दक्षिण छत्तीसगढ़ के युवाओं ने कई फिल्मों में काम किया है, चाहे वो निर्देशन हो, या अभिनय। इंदिरा कला एवं संगीत विश्व विद्यालय में यहाँ के युवा शिक्षा ग्रहण कर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा चुके हैं । इस संस्था ने अन्य प्रदेशों के युवाओं को आकर्षित किया है ।

सूरजकुंड मेले में भी छत्तीसगढ़ ने अपनी संस्कृति की झलक दिखायी तथा अपनी सभ्यता की रचनात्मकता का प्रदर्शन किया । वहीं यहाँ के राजेश चौहान जैसे क्रिकेट खिलाड़ी, विश्व स्तरीय प्रदर्शन कर चुके हैं । सबा अंजुम भारतीय हॉकी टीम की कप्तान भी रह चुकी हैं। वेट लिफ्टिंग में रूस्तम सांरग देश का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं ।

5. छत्तीसगढ़ के युवा हस्तकला, शिल्पकला काष्ठकला के क्षेत्र में अपना अवसर तलाश कर सकते हैं। शिक्षा के अवसरों में भी वृद्धि हुई हैं । अधिकारी, शिक्षक एवं कर्मचारी एक वृहद विकल्प हैं। बस्तर का काष्ठ शिल्प विश्व प्रसिद्ध है । कौशल विकास आज छत्तीसगढ़ में युवाओं को आगे लाने में काफी सहायक सिद्ध हुआ है ।

आज 'मेड इन छत्तीसगढ़' - में निवेश की तलाश को पूर्ण किया जा रहा हैं । छत्तीसगढ़ को 'औद्योगिक हब' बनाये जाने की योजना है । लघु उद्योग स्वरोजगार का माध्यम हो सकता है । जिससे बेरोजगारी तो दूर होगी साथ ही रोजगार के नये अवसरों का सृजन होगा । जिससे वनस्पति सम्पदा, मछली उत्पादन, कृषि, अनेक क्षेत्र में अपार संभावनाएँ हैं ।

6. छत्तीसगढ़ में कवि रेवाराम, दलपत राय ने अपनी कविता से जन-जागरण का संदेश दिया तो वहीं अंचल की महिमा का बखान किया । स्वतंत्रता संग्राम की बात करें तो पं. सुन्दर लाल शर्मा ने छत्तीसगढ़ की संकल्पना की शुरूआत की । उसके बाद पं. रविशंकर शुक्ल व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लिया तथा अंग्रेजों के कुशासन के विरूद्ध संघर्ष किया । वे मध्य प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री रहे । पं. सुन्दर लाल शर्मा को नहर सत्याग्रह तथा कंडेल सत्याग्रह के कारण याद किया जाता है । वे स्वतंत्रता सेनानी के साथ-साथ कवि-लेखक रहे ।

'चन्दूलाल चन्द्राकर' भी स्वतंत्रता सेनानी रहे

उन्होंने भी आजादी दिलाने में भूमिका निभायी । ठाकुर प्यारे लाल सिंह ने जो बी.एन.सी. के लिए हड़ताल किया तथा मजदूरों को उनका हक दिलाने का साहस किया । पद्मश्री नेल्सन जिनकी बनायी प्रतिमा सुदूर जापान में भी स्थापित हुई है, पंडवानी गायिका तीजन बाई केवल देश में नहीं बल्कि थाईलैण्ड, इंडोनेशिया जैसे कई देशों में छत्तीसगढ़ी छटा बिखेरी ।

आस्था वैष्णव

बी.एस.सी. भाग-1

1. शिक्षा के स्तर और रोजगार की दृष्टि से हमारा देश पिछड़ा हुआ है । भारत में संवैधानिक रूप से प्राथमिक शिक्षा का अधिकार लागू किया गया है जो प्रत्येक व्यक्ति को चौदह वर्ष की उम्र तक शिक्षा का हक प्रदान करता है । मानव विकास के लिए शिक्षा को एक अति आवश्यक जरूरत माना गया है जो मानव की क्षमता या योग्यता को बढ़ाता है । छत्तीसगढ़ में शिक्षा की कमी एक बहुत चिंताजनक विषय बन गया है जिसके परिणाम स्वरूप इसे पिछड़ा प्रदेश माना जाता है । यहाँ के विद्यार्थी किसी न किसी रूप से शिक्षा से वंचित रहते हैं । कुछ गरीबी के कारण तो कुछ मेहनत न करने के कारण अपनी प्राथमिक शिक्षा पूर्ण नहीं कर पाते । वहीं देश के अनेक प्रदेशों में शिक्षा की दर अत्याधिक है क्योंकि वे विकसित हैं । परन्तु गरीबी और निर्भरता के कारण हमारा प्रदेश पिछड़ा प्रदेश कहलाता है । इसके परिणाम स्वरूप यहाँ रोजगार के अवसर अत्यधिक नहीं हैं। गरीबी, निरक्षरता और बेरोजगारी छत्तीसगढ़ को एक विकसित प्रदेश होने में गतिरोधक का कार्य कर रही है । जब तक प्रदेश से गरीबी भ्रष्टाचार आदि पूर्ण रूप से समाप्त नहीं होते तब तक हमारा प्रदेश पिछड़ा रहेगा ।

2. प्रदेश में बेरोजगारी, निरक्षरता और गरीबी होने के कारण यह विकसित नहीं है । आजकल की युवा पीढ़ी पूर्ण रूप से स्वतंत्र एवं आत्मनिर्भर होना चाहती है । छत्तीसगढ़ के पिछड़ेपन को देखते हुए युवा प्रदेश के बाहर जाकर शिक्षा और रोजगार प्राप्त करते हैं । प्रदेश के विकसित न होने के कारण यहां शिक्षा और रोजगार में वो लाभ और वो अवसर प्राप्त नहीं होते जो अन्य प्रदेशों में होते हैं । शिक्षा में असुविधा, अव्यवस्था के कारण ही लोग अन्य प्रदेशों में जाना पसन्द करते हैं । आजकल की युवा पीढ़ी आत्मनिर्भर होना चाहती है। और ऐसे प्रदेश जहाँ निरक्षरता की दर अत्यधिक हो वहाँ उन्हें ऐसी शिक्षा और रोजगार कैसे प्राप्त हो सकते हैं जिससे वे आत्मनिर्भर बनें । इसलिए युवा पीढ़ी प्रदेश के बाहर जाना उचित समझती है ।

3. छत्तीसगढ़ के युवाओं में आत्मविश्वास तो है परन्तु उस स्तर का नहीं जो अन्य प्रदेशों के युवाओं में होता है । यहाँ के युवाओं में आत्मविश्वास न होने के कारण ही प्रतिस्पर्धा की प्रवृत्ति नहीं है । इन सब का मुख्य कारण यह है कि यहाँ के निवासी शिक्षा कला आदि को ज्यादा महत्व नहीं देते । जब बड़े ही साथ या बढ़ावा न दें तो युवाओं में आत्मविश्वास की कमी होना लाजिमी है । आज समाज लड़का-लड़की में कोई भेदभाव नहीं रखता परन्तु हमारे प्रदेश में कई जगहें ऐसी भी हैं जहाँ आज भी लड़कियों को शिक्षा से वंचित किया जाता है । पढ़ने-लिखने की बजाय उन्हें खेती आदि को संभालने की जिम्मेदारी सौंप दी जाती है । इसलिए उनमें आत्मविश्वास की कमी है ।

4. जहाँ छ.ग. एक पिछड़ा राज्य कहलाता है वहीं यहाँ अनेक हस्तियाँ है जिन्होंने प्रदेश का मान बढ़ाया। सबसे पहले 'सबा अंजुम' का नाम लिया जा सकता है जो यहीं दुर्ग की गलियों में हॉकी खेला करती थीं । दृढ़ अभ्यास एवं आत्मविश्वास से उन्होंने बहुत ऊँचा मुकाम हासिल किया । उन्हें 30 अगस्त 2013 को अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया था । ऐसी छोटी-सी गली में हॉकी खेलने वाली लड़की आज देश की एक विख्यात हस्ती बन गई है । वैसे ही एक और हस्ती है 'अनुराग बसु'। वे भी छत्तीसगढ़ की मिट्टी में पले बढ़े हैं और आज फिल्म उद्योग में एक अग्रणी निर्देशक हैं । इन्होंने भी प्रदेश का नाम रौशन किया है वैसी ही हमारी नन्हीं खिलाड़ी 'आकर्षी कश्यप' जो दुर्ग जिले की बेटी है, इन्होंने भी अपने प्रदेश का गौरव बढ़ाया नन्हीं सी उम्र में ही बैडमिंटन में ऊँचा नाम कमा रही है। इन्होंने जूनियर बैडमिंटन में अखिल भारतीय रैंकिंग में पहला स्थान प्राप्त किया है । हमारे प्रदेश में ऐसे ही न जाने कितने और युवा प्रतिभाएँ होंगी । बस उन्हें पहचानने की जरूरत है । उनमें आत्मविश्वास जगाने की जरूरत है । फिर हमारा प्रदेश भी गौरव के पथ पर अग्रसर होगा ।

5. युवाओं को हमेशा जागृत रहना चाहिए । उन्हें हर अवसर का सदुपयोग करना आना चाहिए । जरूरी नहीं है कि हर बार सफलता मिले । परन्तु निरन्तर प्रयास से

सफलता पाई जा सकती है । प्रदेश के युवा कला के क्षेत्र में, विभिन्न सेनाओं में प्रवेश कर अग्रसर हो सकते हैं । हमें पता है छत्तीसगढ़ पारम्पारिक कला में अग्रणी है । इसे भी एक क्षेत्र बनाकर आगे बढ़ा जा सकता है । आजकल कितने ही ऐसे अवसर आते हैं जो इंजीनियरिंग, बैंकिंग रेलवे आदि से जुड़े होते हैं । युवाओं को इन क्षेत्रों में प्रयास कर अग्रसर होना चाहिए ।

राजनीति के क्षेत्र में भी आगे बढ़ा जा सकता है । नई पीढ़ी होगी, नई सोच होगी और नए बदलाव होंगे जिससे तुरन्त तो नहीं परन्तु धीरे-धीरे विकास होना निश्चित है ।

6. छत्तीसगढ़ राज्य के कई निवासियों ने विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रदेश का मान बढ़ाया है । इन हस्तियों ने न केवल देश अपितु विदेशों में भी अपने सराहनीय कार्यों से जनप्रियता प्राप्त की है । उदाहरण स्वरूप हमारे प्रदेश की सुप्रसिद्ध पण्डवानी गायिका तीजन बाई ने न केवल देश में परन्तु विदेश में भी अपनी लोकप्रियता हासिल की । वैसे ही विख्यात स्वाधीनता सेनानी श्री सुंदरलाल शर्मा थे जिन्होंने अपने दृढ़ संकल्प एवं आत्मविश्वास से सामाजिक क्षेत्रों में बड़ा योगदान दिया । इन्हें छत्तीसगढ़ का गाँधी भी कहा जाता है ।

निर्मल ठाकुर

एम.एस.सी. द्वितीय सेमेस्टर, रसायन शास्त्र

1. छत्तीसगढ़ शिक्षा व रोजगार की दृष्टि से पूरी तरह से पिछड़ा हुआ है । आजकल की शिक्षा डिग्री लेने मात्र की रह गई है क्योंकि आजकल अधिकतर लोग सरकारी नौकरी को अपने जीवन का आधार मानते हैं । यही कारण है कि छत्तीसगढ़ की अधिकांश जनसंख्या आज सरकारी नौकरी के पीछे भागती है । यदि सरकारी नौकरी नहीं मिली तो अपने आप को गरीब समझने लगते हैं । वे ये नहीं जानते कि कृषि में भी एक रोजगार है । जो अन्न उगाकर हमें भोजन प्रदान करती है अर्थात् जिसकी वजह से आज हम हैं वो भला गरीब कैसे हो सकता है । हमारी सोच पर निर्भर करता है और हमारी सोच हमारे ज्ञान पर निर्भर करती है अतः हमें शिक्षा ज्ञान के लिए लेना चाहिए, डिग्री के लिये नहीं।

2. छत्तीसगढ़ की युवा पीढ़ी शिक्षा और रोजगार के लिये प्रदेश के बाहर की ओर रूख इसलिए करती है क्योंकि उसकी सोच हमेशा यह रहती है कि किसी भी तरह मुझे जीवन यापन के लिए रोजगार मिल जाए । वे स्वरोजगार करना पसन्द नहीं करते । चूँकि बाहर प्रदेश में अधिकांश लोग स्वरोज़गार करते हैं और सरकारी नौकरी पर बहुत कम आश्रित होते हैं, इसलिए छत्तीसगढ़ के युवा बाहर की ओर ज्यादा रूख करते हैं ।

अगर छत्तीसगढ़ के युवा उद्यमिता और स्वरोजगार के महत्व को पहचान गए तो हमारे प्रदेश से बहुत हद तक बेरोजगारी दूर हो सकती है ।

3. छत्तीसगढ़ के युवाओं में प्रतिस्पर्धा की प्रवृत्ति नहीं है क्योंकि अधिकतर सोचते हैं कि किसी भी तरह से एक छोटी नौकरी मिल जाए जिससे वह अपना परिवार चला सके । उनकी सोच एक सीमित क्षेत्र तक रह जाती है और वे हमेशा नौकरी की तलाश में रहते हैं अर्थात् दूसरों पर आश्रित रहते हैं जिससे उसमें आत्मविश्वास बिल्कुल ही नष्ट हो जाता है ।

4. अखिल भारतीय परिदृश्य में छत्तीसगढ़ के युवा बहुत ही निचले क्रम पर हैं । अधिकांश युवा ये सोचते हैं कि हमें सामाजिक सेवा से क्या मिलेगा । उससे अच्छा तो मैं किसी सरकारी या बड़े जॉब में लग जाऊँ। उदाहरण के लिये छत्तीसगढ़ के अधिकांश युवाओं को उनके अधिकार व योजनाओं के लाभ के बारे में पता नहीं रहता है । अगर पता भी है तो वो किसी को बताना भी नहीं चाहता । क्योंकि वह सोचता है कि उसे बताकर मुझे क्या लाभ और हमारी यही सोच समाज व देश को दुर्गति की ओर ले जाती है । यही कारण कि जो व्यक्ति आज नौकरी पर है वो अपने बच्चे को उच्च शिक्षा के लिए बड़े महाविद्यालय में या विदेशों में पढ़ाई करवाते हैं और जो गरीब है उसे प्रारम्भिक शिक्षा भी नसीब नहीं होती । जब किसी व्यक्ति को शिक्षा ही नहीं मिले तो वो किस तरह से अपने समाज व राष्ट्र को आगे ले जा सकता है।

5. छत्तीसगढ़ के गाँधी कहे जाने वाले पं. सुंदरलाल शर्मा छत्तीसगढ़ के राष्ट्रीय जागरण के अग्रदूत थे । वे समाज सुधारक के रूप में जीवन पर्यन्त पीड़ित वर्ग के उत्थान में लगे रहे । इस प्रकार उन्होंने छत्तीसगढ़ को सुधारने के प्रयास किए ।

बिंझवार जनजाति के वीरनारायण सिंह का जन्म सोनाखान (बलौदा बाजार) में हुआ था। वे परोपकारी प्रवृत्ति के थे । उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ प्रथम स्वतन्त्रता

संग्राम में भाग लिया और शहीद हो गए । वे भारत के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान छत्तीसगढ़ के प्रथम शहीद है ।

इस प्रकार कई हस्तियां छत्तीसगढ़ में हुईं जिन्होंने छत्तीसगढ़ के नाम को गौरवान्वित किया । मुझे पूरा यकीन है कि छ.ग. में ऐसी हस्तियों की कमी नहीं है । बस कमी है तो एक कदम हौसले से बढ़ाने की ।

6. प्रदेश का गौरव बढ़ाने वाली हस्तियाँ और उनकी प्रेरक उपलब्धि में । तीजन बाई, शंकर गुहा नियोगी, चेन्दरू मण्डावी आदि शामिल हैं । तीजन बाई ने पंडवानी गाथा के जरिए यहाँ की संस्कृति एवं कला को पूरे विश्व में विख्यात किया जिसके लिये 1988 में भारत सरकार द्वारा उन्हें पद्मश्री और 2003 में कला के क्षेत्र में पद्मभूषण से अंलकृत किया गया । चेन्दरू मण्डावी को 'टाइगर बॉय' के नाम से जाना जाता है । वह विश्व में एक अकेला व्यक्ति था जो टाइगर के साथ रहता था । एक स्वीडिश फिल्म निर्माता आर्ने सकडार्फ द्वारा चेन्दरू मण्डावी पर एक वृत्त चित्र का निर्माण किया गया था जिसमें मण्डावी की जंगल के राजा शेर के साथ दोस्ती को सुरुचिपूर्ण ढंग से फिल्माया गया था । इसकी इस ख्याति पर केन्द्रित पुस्तक 'चेन्दरू बॉय एण्ड द टाइगर' श्रीमती एस्ट्रीड बर्गमेन सकडार्फ द्वारा न्यूयार्क से प्रकाशित हुई ।

छत्तीसगढ़ के गाँधी कहे जाने वाले पं. सुन्दर लाल शर्मा छत्तीसगढ़ के राष्ट्रीय जागरण के अग्रदूत थे । वे समाज सुधारक के रूप में जीवन पर्यन्त पीड़ित वर्ग के उत्थान में लगे रहे । इस प्रकार उन्होंने छत्तीसगढ़ को सुधारने के प्रयास किए ।

भागवत मांडावी

एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर, राजनीति शास्त्र

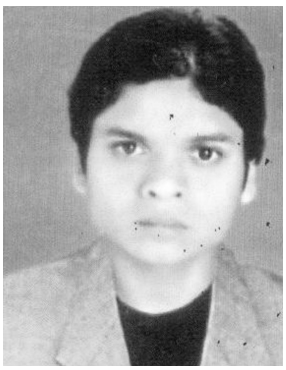

1. मैं मानता हूँ कि छत्तीसगढ़ रोजगार के अवसर की दृष्टि से पिछड़ा हुआ है लेकिन मैं यह नहीं मानता कि कोई यहाँ बेरोजगार है । रोजगार क्या बाँटने की कोई चीज है जो किसी व्यक्ति को मिलते ही रोजगार-शुदा हो जाए । रोजगार मतलब 'कार्य' । क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जिसके पास कोई काम ही न हो ?

अगर नहीं तो मैं ये कैसे मान सकता हूँ कि कोई व्यक्ति छत्तीसगढ़ में बेरोजगार है । मेरे अनुसार जो व्यक्ति यह सोचता है कि मैं रोजगार-शुदा हूँ तो सचमुच रोजगारशुदा है जो नहीं सोचता वह बेरोजगार है । रोजगार सोच के नजरिए पर पूरी तरह से निर्भर करता है ।

छत्तीसगढ़ के पिछड़े होने का कारण लोगों की सोच है और यही कारण है कि एक किसान जो अन्नदाता (मालिक) है वह एक दुकानदार, जो लोगों तक अन्न पहुँचाने का काम करता है, से कई स्तर से नीचे है ।

2. छत्तीसगढ़ की युवा पीढ़ी शिक्षा और रोजगार के लिए प्रदेश के बाहर की ओर रूख करती है क्योंकि वह रोजगार के सही मायने नहीं जानती । क्या छत्तीसगढ़ में कोई दूसरे प्रदेश की अपेक्षा कम रोजगार है? या दूसरे प्रदेश में कोई रोजगार का देवता रहता है जो उसे रोजगार दे नहीं रहा ऐसा नहीं है, रोजगार हर मनुष्य के पास होता है, बस जरूरत है तो उसे ढूँढने की । लोग सरकारी नौकरी या कम्पनी में जाना ज्यादा पसन्द करते हैं स्वरोजगार को नहीं समझ पाते ।

3. छत्तीसगढ़ के युवाओं में प्रतिस्पर्धा की प्रवृत्ति न के बराबर है। इसका प्रमुख कारण है अशिक्षा । छत्तीसगढ़ के युवा आजकल पढ़ाई को डिग्री लेने की दृष्टि से देखते हैं, ज्ञान लेने की दृष्टि से नहीं । अगर ज्ञान लेने की दृष्टि से देखते तो मुझे नहीं लगता कि उसके पास रोजगार की कमी है । ज्ञान ही व्यक्ति को मुश्किल परिस्थितियों में हँसकर जीना सिखाता है । ज्ञान की कमी ही आत्मविश्वास की कमी का कारण है जो छत्तीसगढ़ के युवाओं में झलकती है ।

4. अखिल भारतीय परिदृश्य में छत्तीसगढ़ का युवा आज बहुत पिछड़ा हुआ है । इसका प्रमुख कारण रोजगार के लिए भटकना है । उसका प्रारम्भिक जीवन तो रोजगार की तलाश में लग जाता है । इस प्रकार छत्तीसगढ़ के युवा रोजगार के लिये दर-बदर भटकते रहते हैं । इस समस्या का सिर्फ एक ही समाधान है स्वरोजगार को पहचानना । जब तक हम स्वरोजगार को नहीं पहचानेंगे तो रोजगार के लिए भटकना ही पड़ेगा । आज तक जितनी भी कंपनियाँ छत्तीसगढ़ में आई हैं वे अधिकतर विदेशी कंपनियां हैं और उन कम्पनियों पर हमारे छत्तीसगढ़ के युवा रोजगार के लिये आश्रित हैं ।अखिल भारतीय परिदृश्य में छत्तीसगढ़ के

युवाओं के पिछड़ापन का कारण मैं स्वरोजगार को न पहचानने को ही मानूंगा ।

5. छत्तीसगढ़ के युवा निजी कंपनियों में या सरकारी नौकरी में जाना ज्यादा पसन्द करते हैं । उदाहरण के आजकल युवा दूध फैक्ट्री में काम करना पसन्द करेंगे लेकिन वे ये नहीं सोचेंगे कि मैं भी अपने लिए आधुनिक तरीके से पशुपालन कर दूघ का व्यापार क्यों नहीं कर सकता । जिस दिन उनका नजरिया बदल जाएगा उस दिन कोई व्यक्ति भी बेरोजगार नहीं होगा ।

6. प्रदेश का गौरव बढ़ाने वाली हस्तियों में जिनकी प्रेरणादायक उपलब्धियों से हमारा छत्तीसगढ़ राज्य गौरवान्वित हुआ ।

पंडित सुन्दर लाल शर्मा वीर नारायण सिंह, ठाकुर प्यारे लाल सिंह आदि शामिल हैं । पं. शर्मा एक महान समाज सुधारक थे और जीवन पर्यन्त पीड़ित वर्ग के उत्थान के लिए लगे रहे । रूढ़िवादिता, कुरीतियों और अंधविश्वास को दूर करने का उन्होंने अथक प्रयास किया । वे छत्तीसगढ़ी के युग प्रवर्तक कवि थे । उन्होंने छत्तीसगढ़ में हरिजन उत्थान का कार्य गाँधीजी के हरिजन उत्थान से कई वर्ष पहले किया था इसीलिए गाँधी जी ने अस्पृश्यता निवारण के सम्बन्ध में श्री शर्मा जी को अग्रणी कहा।

वीर नारायण सिंह परोपकारी प्रवृत्ति के व्यक्ति थे उन्होंने लोगों की समस्याओं के सामाधान के लिये गाँव-गाँव जाकर अथक प्रयत्न किए । वे भारत के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान छत्तीसगढ़ के प्रथम शहीद हैं ।

ठाकुर प्यारेलाल सिंह छत्तीसगढ़ में सहकारिता के जनक थे । उन्होंने छत्तीसगढ़ में स्वदेशी आन्दोलन आरम्भ किया। छत्तीसगढ़ में भूदान आन्दोलन एवं सर्वोदय आन्दोलन का आरम्भ किया ।

'हबीब तनवीर' ने छत्तीसगढ़ के लोक कलाकारों के साथ 'नया थियेटर' नामक संस्था को संवारा तथा पूरे देश में इन कलाकारों के साथ यात्रा की । छत्तीसगढ़ के लिये यह गौरव की बात है कि हबीब तनवीर ने आम लोगों के थियेटर को स्थापित किया । वे 'अवाम के थियेटर' नामक महान विचार के जन्मदाता है । इस प्रकार ऐसी कई हस्तियाँ छत्तीसगढ़ राज्य में जन्मी जिनकी उपलब्धियों से हमें गर्व महसूस होता है ।

इमला घावड़े

बी.एस.सी. भाग एक

1. छत्तीसगढ़ शिक्षा के स्तर और रोजगार के अवसरों की दृष्टि से पिछड़ा हुआ है क्योंकि हमारी सोच गरीबी, भेदभाव, आत्मविश्वास में कमी समाज और घरों से मदद न मिलना, आदि इसके कारण हैं । हमें वो सारी सुविधाएँ नहीं मिल पाती हैं, जिनके बारे में हम सोचते हैं ।

पहले की अपेक्षा वर्तमान में शिक्षा और रोजगार का अवसर बढ़ा है हालाँकि आबादी भी बढ़ गई है । जो अशिक्षित हैं उनके लिए टीवी रेडियो के माध्यम से प्रचार-प्रसार और समय पर शिक्षित वर्ग के द्वारा शिक्षा और रोजगार के बारे में लोगों को सूचनाएँ दी जाती हैं लेकिन शिक्षित बेरोजगारों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि हुई है । दूसरी ओर बढ़ती आबादी के अनुपात में हमारे राज्य में शिक्षण संस्थाओं एवं कारखानों उद्योगों की कमी के कारण रोजगार मिलना मुश्किल हो जाता है ।

2. प्रदेश की युवा पीढ़ी शिक्षा और रोजगार के लिए प्रदेश के बाहर रूख करती है क्योंकि अन्य प्रदेशों की अपेक्षा यहाँ शिक्षा व रोजगार के अवसर में कमी है । बाहरी प्रदेशों में युवाओं को शिक्षा की सारी सुविधायें जल्दी और आसानी से मिल जाती हैं और रोजगार के क्षेत्र में 8 से 9 सालों तक युवाओं के लिए बिना रोकटोक किये रोजगार का अवसर प्राप्त हो जाता है । छत्तीसगढ़ के नियम कायदे भी सख्त नहीं हैं ।

3. छत्तीसगढ़ के युवा अपने कार्यों के प्रति पूर्ण रूप से संतुष्ट नहीं रहते हैं । कई बार युवा अपने कार्यों की बजाए दूसरों के कार्यों पर अधिक ध्यान देते हैं ।

4. अखिल भारतीय परिदृश्य में प्रदेश के युवाओं को हम भारत देश की ऊँचाइयों में पाते हैं जैसे हमारे देश की अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित अर्न्तराष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी 'सबा अंजुम' अपने बचपन की कठिनाइयों से जूझते हुए जिन्होंने हॉकी खेलना नहीं छोड़ा । उन्होंने पहले जिला स्तर पर हॉकी खेली फिर राज्य स्तर पर तथा राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय खेलों में उन्होंने अनेक पदक हासिल किये । उनको अर्जुन पुरस्कार से नवाजा गया है तथा इसी वर्ष पदमश्री की उपाधि प्राप्त हुई है ।

5. छत्तीसगढ़ के युवा कम्प्यूटर, इन्टरनेट, चिकित्सा, तकनीकी, शिक्षा एवं विज्ञान के क्षेत्र, अंतरिक्ष तकनीकी के क्षेत्र में अवसर की तलाश में है । आज की युवा पीढ़ी निरन्तर आगे बढ़ रही हैं ।

खुमेश्वरी कुशरे
एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर (इतिहास)

1. निस्संदेह छत्तीसगढ़ शिक्षा के स्तर और रोजगार की दृष्टि से पिछड़ा हुआ है, जिसके अनेक कारण हैं । सर्वप्रथम छत्तीसगढ़ राज्य की शिक्षा व्यवस्था दोषपूर्ण है । सरकार की गलत नीतियों के कारण कक्षा आठवीं तक के सभी विद्यार्थियों को अनिवार्य रूप से उत्तीर्ण कर दिया जाता है । फलतः स्थितियाँ इतनी गंभीर हो जाती हैं कि कक्षा छठवीं तक के छात्रों को पहाड़ा नहीं आता ।इसके अलावा नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में पर्याप्त सुरक्षा का अभाव और शिक्षकों की कमी भी शिक्षा के स्तर को प्रभावित करती है । वहीं दूसरी ओर पर्याप्त प्राकृतिक संसाधनों एवं उद्योगों की उपस्थिति के बावजूद छत्तीसगढ़ में रोजगार की कमी है। अतः सरकार को सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक दृष्टि से उन्नत करने का प्रयास करना चाहिए । छत्तीसगढ़ के महाविद्यालयों में केवल चुनिंदा विषय उपलब्ध होते हैं जिसमें छात्रों के उनके पसंद के विषय नहीं मिलते और वो दूसरे प्रदेशों की ओर शिक्षा के लिए रूख करते हैं। छत्तीसगढ़ में बड़े बड़े शिक्षा संस्थानों की कमी है। प्राध्यापकों की कमी है। अन्य राज्यों में एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें छात्र वहीं पढ़ता है सीखता है और वहीं उसे नौकरी भी मिल जाती है या महाविद्यालय में कैम्पस चयन होता है छात्रों का जिसमें चयन होते है। इससे कम्पनी के लोग छात्रों को महाविद्यालय से ही चुन लेते हैं । जिससे नौकरी के लिए नहीं भटकना पड़ता है। अन्य राज्यों में कला संकाय, विज्ञान संकाय, गणित संकाय, वाणिज्य संकाय को विस्तृत ढ़ंग से पढ़ाया जाता है। यहां रोजगारपरक शिक्षा का अभाव है।

प्रदेश का गौरव बढ़ाने वाली हस्तियों में वीर नारायण सिंह जिन्हें छत्तीसगढ़ का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम सेनानी कहा जाता है। सोनाखान के गोदामों को लूटकर छत्तीसगढ़ की जनता को भूख से बचाया और अंग्रेजों के विरोध में लड़कर शहीद हो गए। पंडित सुन्दर लाल शर्मा, पंडित रविशंकर शुक्ल । इन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में विशेष योगदान दिया, ये भी एक स्वतंत्रता सेनानी हैं। तीजन बाई जो छत्तीसगढ़ ही नहीं वरन समूचे भारत में गौरव प्राप्त करने के साथ विदेशों में भी अपनी धाक जमा चुकी है।

छत्तीसगढ़ के युवाओं में आत्म विश्वास की कमी होने के कारण प्रतिस्पर्धा की प्रवृति नहीं है। साथ ही साथ जागरूकता के अभाव की वजह से यहाँ के युवा अन्य राज्यों के युवाओं की तुलना में कमजोर साबित होते हैं। उदाहरण के लिए विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में छत्तीसगढ़ के युवाओं की अपेक्षा अन्य राज्यों के युवा अधिक चयनित होते हैं छत्तीसगढ़ के युवा नृत्य, कला, चित्रकारी, समेत सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में निश्चित तौर पर नये अवसरों की तलाश कर सकते हैं हमारे राज्य में फार्मेसी एवं सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में स्म्भवानाएँ हैं। कुछ सशक्त युवा एक समूह बनाकर इन क्षेत्रों में लघु उद्योग भी स्थापित कर सकते हैं। हमारी राज्य सरकार को भी उपरोक्त क्षेत्रों में जुड़ने हेतु युवाओं को प्रोत्साहित करना चाहिए।

छत्तीसगढ़ के युवाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित होकर हमारे राज्य का नाम राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर रोशन किया है। हमारे दुर्ग शहर की ही 'सबा अंजुम' जो कि भारतीय महिला हॉकी टीम की कप्तानी कर चुकी है, उन्होंने हमारे देश को गौरवान्वित किया है। इनके अलावा अन्य हॉकी खिलाड़ी रेणुका राजपूत, बलविंदर कौर मेंहर, रेणुका यादव, मृणाल चौबे ने भी हॉकी में हमारे राज्य की ओर से महत्वपूर्ण योगदान दिया। कला के क्षेत्र में भिलाई के सपूत अनुराग बासु ख्यात निर्माता निर्देशक बनकर छत्तीसगढ़ की युवाओं की भागीदारी एवं योगदान के लिए हमारे प्रेरणा स्तंभ हैं ।

कविताएँ

गँवार

मन तो बहुत करता है?, क्या-क्या ज़िद करता

मन तो कितना करता है,
फिर पुराने डेरों पर, एक फेरा डाल आऊँ ।
वक़्त के तकाजे सब, हाथों से उछाल आऊँ ।

मन तो कितना करता है,
वो लिपे हुए आँगन, वो मुहल्ले देखूँ फिर ।
ताल, पेंड़, पगडंडी, खेत-खेत खेलूँ फिर ।

मन तो कितना करता है,
घर-गली में मिट्टी के बैल खड़खड़ाते हों ।
ज़िंदा बैल खेतों में फिर से जुतने जाते हों ।

मन तो कितना करता है,
स्कूल हो, सिनेमा हो, खेल हो कि मेला हो ।
एक भी न साथी फिर, छूटता अकेला हो ।

मन तो कितना करता है,
फाग और नगाड़ों से गूँजती फ़जाएँ हों ।
मौसमों की हमजोली, डोलती हवाएँ हों ।

मन तो कितना करता है,
काश उम्र की आँधी बस वहीं ठहर जाती ।
लड़कपन में ही सारी, ज़िन्दगी गुजर जाती ।

मन तो कितना करता है,
फिर ज़मी पे इन्सानों का जहाँ उतर आता ।
प्यार मन को है जिससे, वो समां उतर आता ।

मन तो कितना करता है,
गाँव का वो अल्हड़पन, वो खुमार लौट आये ।
शहरा हा गया है जा, हर गँवार लौट आय ।

मन तो कितना करता है .....

मन तो बहुत करता है, क्या-क्या ज़िद नहीं करता
ज़िंदगी-ओ-दुनिया के कायदों से बेपरवा ।
थोड़े में न मानेगा, बच्चों सी लगन है ना ।
मन को कैसे समझाऊँ, मन तो भई मन है ना ।

- धुव दास
एम.ए. प्रथम सेमेस्टर (अंग्रेजी)

पेशावर के आर्मी स्कूल में 132 बच्चों की मौत

ऐ खुदा तूने ये कैसा कहर बरपाया है,
कि हर तरफ तबाही मची है ।
उस तबाही ने हर तरफ लाशें बिछाई हैं
देख और सुनकर दिल सहम जाता हैं
और आँख भर आई है ।
हर तरफ उदासी और आतंक ही आतंक है ।

न जाने क्या बीती होगी उन मासूमों और नन्हीं जानों पर
जब दरिदों ने उन पर गोलियां बरसाई होंगी ।
क्या बीती होगी उन माँओं पर, जिन्होंने उन्हें दूध पिलाया
और बाँहों में लेकर लोरियाँ सुनाई हैं
कैसा लगा होगा जब उन मासूमों ने अपनी मौत को अपने ही सामने खड़ा पाया ।
जिसे वो दिवाली पर खिलौना समझकर खेला करते थे
आज उसी खिलौने से उन दरिंदों ने खून की होली खेली है
उन मासूमों की क्या गलती थी,
वो तो नन्ही अबोध जानें थीं
आने वाले कल का भविष्य और मां-बाप की अरमानें थीं

पर आज उन अरमानों का मीठाफल देखते-ही-देखते सूख गया ।

क्या उन्हें एक पल भी उन मासूमों को देखकर दया नहीं आई
`ये कैसा कठोर दिल उसने पाया है
जानवर भी कितना समझदार होता है,

जिसे दिल की भाषा समझ आती है
ये कैसी जानवर से भी बदतर जिन्दगी आंतकियों ने पाई है,
आज वो हर मासूम, बेगुनाह जिन्दगी, अपनी गलती पूछ रही है ।
आखिर किस गलती की सजा, उन्होंने जान गँवाकर चुकाई है ।

जिस बाप ने उँगली पकड़कर चलना सिखाया
जिसने कंधों पर बिठाकर, जीवन की राह दिखाई है ।
क्या बीत रही होगी उस बाप पर
जिसने अपने कंधों पर ताबूत उठाई है
कैसे रहेगी वो मां, अपनी लाडो के बिना,
जिसने उस नन्हीं जान को, दुनिया में लाया ।
एक नई जिन्दगी दी, जब आज वही फूल-सी मासूम जान अनजान बन गई है ।

– अंजली साहू
बी.एससी. भाग - दो

जज़्बा

कहने और करने में बहुत फर्क होता है,
आशाओं की नींव पर सपनों का महल खड़ा होता है ।
तमन्ना तो दिल में है मंजिल पाने की,
उसके लिए मगर बहुत कुछ खोना पड़ता है,
और हम जो चाहते हैं वो दुनिया में ही होता है,
मंजिल पाने का एक ज़ज़्बा हो मन में ।

अगर तो कोई भी आसमां छोटा होता है,
हौसले हारने से कुछ नहीं मिलता,
हौसला रखने से सब आसान होता है,
कहने को तो लोग बहुत कुछ कहते हैं,
पर कहने और करने में बहुत फर्क होता है,
सपने देखने का हक सबका है,
पर सपने पूरा करने का हक खुद लेना होता है ,
सपने हमेशा झूठ नहीं होते
उन्हें सच करने का बस एक अंदाज होता है ।।

जिस दिन पा ली मंजिल
अपनी मत समझो कि जहाँ मिल गया
अभी तो बस आसमां पाया है,
जहाँ में तो बहुत कुछ होता है,
तुम जो कहते हो, चाहते हो कि पूरा हो,
तो मत सोचो लोग क्या कहते हैं ।
लोग तो बस कहते है कहाँ कभी कुछ कर पाते हैं

उस दिन तुम्हारे करने और कहने में फर्क होगा,
सब कुछ सच होगा झूठ तो सब को झूठ लगेगा
उस दिन समझो ये जहाँ तुम्हारे पैरों तले होगा
फिर ये जमीं ये आसमां पूरा जहाँ तुम्हारा होगा ।।

– देवेन्द्र कुमार
- बी.काम. भाग तीन

माँ तेरे कर्ज का हक

सख़्त जाड़ों की तिरकती हुई रातों में मुझे माँ छुपा लेती थी
तू प्यार से बाहों में मुझे गर्मियों में मुझे आँचल की हवा देती थी
फूलने -फलने की तू मुझे दुआ देती थी
रात-भर जाग के सीने पे सुलाया तूने
खुद रही भूखी मगर मुझको खिलाया तूने

तेरे दिल जैसा किसी और का दिल क्या होगा
तू हो नाराज तो खुश हमसे खुदा क्या होगा ।
मां तेरे कर्ज का हक हम से अदा क्या होगा

तुमको खुदा ने क्या खूब सरक बक्शा है
तेरी अज़मतो को फरिश्तो ने सलामी दी है
अपने बेटों की सितम हँस के उठा लेती है
और तू है कि इन्हें फिर भी दुआ देती है

है तेरी जात पे खुदा की कुदरत को भी नाज
हो इजाज़त तो पढ़ूँ मैं तेरी आँचल में नमाज़

मरतबे में कोई माँ तुझसे, बड़ा क्या होगा
तू हो नाराज़ तो खुश हमसे खुदा क्या होगा
माँ तेरे कर्ज का हक हम से अदा क्या होगा

तूने औलाद पे क्या कुछ नहीं कुर्बान किया
अपनी नींद हमें दी, अपना सुख-चैन दिया
लोग करते थे अगर तुझसे शिकायत मेरी
जान पर खेल कर करती थी हिफाजत मेरी
मेरी साँसों में तू मौजूद हैं खुशबू बनकर
मेरी रातों में तू चमकती है जुगनू बनकर
तेरा दिल तोड़ के बेटों का भला क्या होगा
तू हो नाराज तो खुश हमसे खुदा क्या होगा
माँ तेरे कर्ज का हक हम से अदा क्या होगा

लोग बीवी के लिए माँ को भूला देते हैं
उसकी जज़्बात को सूली पे चढ़ा देते हैं
बूढ़े माँ-बाप के जो काम नहीं आवोगे
अपनी औलाद से तुम इसकी सीला पावोगे
हाँ अभी वक्त है माँ बाप की खिदमत कर लो
नेकिया लूट और खुशियों से दामन भर लो

जायेगा बस वही जन्त में जो माँ का होगा
तो हो नाराज तो खुश हमसे खुदा क्या होगा
माँ तेरे कर्ज का हक हम से अदा क्या होगा

- नसीबरुद्दीन
एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर (हिन्दी)

मेरी एक सहेली

सुनो कहानी ईक लड़की की

जो है जान से प्यारी हम सबकी

है, जो प्यारी राजदुलारी हम सबकी

जहां भी जाती खुशकर जाती लोगों को

जिसका दिल है साफ और प्यारा

जिसको दूसरों का दुख देखा भी ना जाता

बातों से सबका दिल बहलाती

अपनी एक मुस्कान से रोते हुए को भी वो हँसाती

धड़कन बन कर हम सबके दिनों को है धड़काती

वो है जान से प्यारी सखी-हमारी

– बिन्देश्वरी सोनवानी
बी.ए.भाग-तीन

जय होय छत्तीसगढ़

जय होय छत्तीसगढ़, तोर जय होय छत्तीसगढ़
27 जिला के नवाराज के शोर होवत अड़बड़
नांदगाँव कोरिया बीजापुर, कोरबा कांकेर,
नारायणपुर, जशपुर
धमतरी, दुर्ग, दन्तेवाड़ा, बिलासपुर,
सुकमा, कवर्धा, रायपुर ।

गरियाबंद, मुंगेली, बलरामपुर, बलौदाबाजार,
बालोद, बस्तर, सूरजपुर ।।
कोंडागांव, बेमेतरा, सरगुजा, महासमुन्द
जांजगीर अऊ रायगढ़ ।

जय होय छत्तीसगढ़, तोर जय होय छत्तीसगढ़।।
हसदो, बांगो, अरपा, पैरी, शिवनाथ, तांदुला ,
मांड, शबरी, महानदी ।
कोटरी, सोढूंर, मनियारी, जोंक, लीलागर,
ईब, इन्द्रावती ।।
आमनेर, खारुन, खरखरा,
इहाँ नदी-नरवा हे अड़बड़ ।
जय होय छत्तीसगढ़, तोर जय होय छत्तीसगढ़ ।।

रतनपुरी गंगा मैया, दन्तेवाड़ा, ऋंगी ऋषि पर्वत,
सिरपुर, राजीव लोचन ।
खल्लारी, चन्द्रपुर, घटारानी, गिरौदपुरी,
नगपुरा, भोरमदेव सुग्घर।।

मैनपाट, गरिया पर्वत, शिवरी नारायण
बमलई डोंगरगढ़ ।
जय होय छत्तीसगढ़, तोर जय होय छत्तीसगढ़।।
सबे दूर-दूर के मनखे मन, आके रहिथे,
मिलके रहिथे ।
सब अपन-अपन ढंग ले तोर, गुण गावत रहिथे,
गुन गात रहिथे ।।
हमरो तिही मयारू दाई, हवा पानी तोर सुग्घर ।
जय होय छत्तीसगढ़, तोर जय होय छत्तीसगढ़ ।।

- **खुशबू पटेल**
बी.एस.सी भाग दो

बेरोजगार .....

कहीं भटक न जाऊँ, मुझे सम्भाल लीजिए ।
ऊर्जा से लबालब हूँ, मुझे काम दीजिए ।।

मै चाहता हूँ प्यार, न शब्द तिरस्कार के
न जेहन में तनाव, न ठोकरों के घाव
न यातना, न दुःख, न हाथ में बंदूक
मैं माँगता हूँ कलम मुझे न जाम दीजिए ।
ऊर्जा से लबालब हूँ , मुझे काम दीजिए ।।

पिता ने करके मजदूरी, मुझको पढ़ाया है
सर्वस्व अपना बेचकर, डिग्री दिलाया है
डिग्री मिली तो मगर वह महज़
काग़ज़ की हो गई
नौकरियाँ बाजार से
एक साथ खो गई

टेबल पे जला रात दिन
ये किसको बताऊँ
कोई स्रोत नहीं
अनुभव कहाँ से लाऊँ
जगमगा रहे कदम
थाम लीजिए ।

ऊर्जा से लबालब हूँ , मुझे काम दीजिए
कहीं भटक ना जाऊँ, मुझे संभाल लीजिए ।।

मै चाहता हूँ संस्कार
ताकि कर पाऊँ परोपकार
ऐसा माहौल
मुझे सरकार दीजिए ।
ऊर्जा से हूँ लबालब
मुझे काम दीजिए कहीं भटक न जाऊँ
मुझे सम्भाल लीजिए ।।

उदित नारायण सोनी
एम.एस.सी. द्वितीय सेमेस्ट - 2 (गणित)

राजनीति और भ्रष्टाचार

राजनीति और भ्रष्टाचार
दोनों को पैसों से प्यार

बिक रहा इंसाफ यहाँ पर
झूठा अब है मालामाल ।

भर रही तिजौरी उसकी
जो है इसका दोस्त यार

राजनीति से पहचान बना लो
भ्रष्टाचार से धन कमा लो ।

झुका हुआ कानून यहाँ पर
बेबसी का हाथ उठाकर

सच्चाई है बदनाम यहाँ पर
अंधेरों में दिये जलाकर

राजनीति अपनों की दुश्मन
कटता सिर हर रोज यहाँ पर ।

भ्रष्टाचार है रिश्वतखोर
जैसे लुटेरे और हो चोर ।

न्याय व्यवस्था ढीली पड़ गयी
राजनीति जब चालें चल गयी ।

भ्रष्टाचार से न्याय बिक रही
अन्याय की तब जीत हो रही ।

बर्बादी अब शुरु हो गई
ये दोनों जब हावी हो गई ।

कु. सरिता साहू
एम.एस.सी. द्वितीय सेमेस्टर (गणित)

गुहार

माँ मुझे मत मार
ना देना तू मुझे अपना प्यार
न करना मेरे तन को दुलार
माँ मुझे मत मार ...
क्या मुझे नहीं है इस दुनिया में आने का हक
जनम से पहले है माँ आपको मुझपे शक
मैं भी देखना चाहती हूँ ये संसार ...
माँ मुझे मत मार
आपको प्यार है सिर्फ बेटों से
या उसकी कमाये नोटो से
मैं भी सेवा करूँगी बन के वफादार
माँ मुझे मत मार
माँ मैं तो हूँ आपका ही अंश
मैं भी चला सकती हूँ आपका ये वंश
तो जाने से पहले जिन्दगी क्यों करती
बेकार
माँ मुझ मत मार ...
मैंने सुना है कि माता न होती कुमाता
तो मेरे लिये भी बन जाओ सुमाता
और मुझे दो इस दुनिया में आने का
अधिकार
माँ मुझे मत मार ...
बेटी क्यों होती है जन्म से ही बोझ
ये सब है आपकी गंदी सोच
बेटी बिन कैसे चले ये संसार
माँ मुझे मत मार....

सूर्यकांत साहू
बी.एस.सी.-1, (इलेक्ट्रानिक्स)

हमारा बचपन

हम हैं छोटे बच्चे सारे,
दिल के बिल्कुल सच्चे हैं
हम हैं न्यारे हम है प्यारे
कल के हम सितारे हैं
आसमान को चूम लेंगे
तारों को हम ढूँढ लेंगे ।
चंदा मामा सूरज चाचू
ये भी हमको प्यारे हैं ।
हम है छोटे बच्चे सारे
दिल के बिल्कुल सच्चे है
बालवृन्द की टोली सजती
जब स्कूल की छुट्टी होती ।
खूब पढ़ेंगे खूब बढ़ेंगे
सपने अपने पूरे करेंगे
दिखने से हम छोटे लगते
पर दिल हमारा समन्दर है
माना कि हम बच्चे हैं
पर कल के हम सिकन्दर हैं
हम हैं छोटे बच्चे सारे
दिल के बिल्कुल सच्चे हैं ।

- थानू राम पटेल ,
एम.एस.सी. -द्वितीय सेमेस्टर
(माइक्रोबायोलॉजी)

मौसम के रंग

कोहरा छाया है ओस गिरी,
जोड़ से जनवरी भरी,
दिन छोटे हैं रात बड़ी
फूल लिए हैं फरवरी खड़ी ।

तेज हुई सूरज की टार्च
महुवा से महका है मार्च
गांव-गली तपते खपरेल,
आग लगता है अप्रैल
लाया धूप पसीना रे,
आया मई महीना रे ।

तेज बड़े लू के नाखून
जान बचाओ आया जून
वर्षा लेकर आयी है
कितना सुखद जुलाई है।

नाचे मयूरा होकर मस्त
आया झूले लिये अगस्त ।
इन्द्र धनुष है अंबर में,
मौसम सुदिन सितम्बर में
पेड़ों ने पत्ते झाड़े
अक्टूबर के पिछवाड़े ?

देख लगा कॉपने बंदर
आया ठिठुरता लिये नवम्बर
धूप लगे अब तो सुन्दर
साल खत्म, आ गया दिसम्बर ।

भोज कुमार मानकर
एम.एस.सी. - चतुर्थ सेमेस्टर(प्राणीशास्त्र)

चाँद को छूने के लिए

चांद को छूने के लिए ऊँचाई काफी नहीं होती है
मंजिल पाने के लिए तकनीक काफी नहीं होती है

काफी है जिन्दगी कुछ न करने के लिए
कुछ कर गुजरने के लिये जिन्दगी काफी नहीं होती

ये सीखा है हमने आपसे
बात करने से ही पूरी नहीं होगी

हौसले बुलंद हो मंजिल दूर नहीं होगी
कोशिश करने से हार नहीं होगी

हौसला उमंग जिन्दगी ने आपसे सीखा
सीखा है प्यार से रहना

ये सीखा है हमने आपसे बात करने से
ही पूरी नहीं होगी ।

- ट्विंकल बंसोड़
बी..एस.सी. -1 (माइक्रोबॉयोलॉजी)

दो कविताएँ : कु. निशा

1. बेटी की गाथा

बेटी के जन्म पे हर कोई रोता है
बेटा हो जाए तो जग चैन से सोता है ।
बेटी बड़ी हो तो पाबंदियाँ लग जाती है
घर से चली जाए तो घर सूना कर जाती है

खुशबू बन महकती है बेटी,
तब भी आँखों में खटकती है बेटी
माँ-बाप पर कर्ज है बेटी
फिर भी निभाती हर फर्ज है बेटी
बेटी होना है अपराध इस जग में
सुनते-सुनते सिसकती है बेटी

अच्छे संस्कार से ससुराल जाती है
फिर भी मान नहीं पाती है बेटी
हर रिश्ते में इज्जत पाऊँ
जीवन भर संघर्ष कर
अपनी मंजिल पाती है बेटी,
फिर भी जाने क्यों
सबकी आँखों में
खटक जाती है बेटी ।।

2. कविता

अपने पर ही निर्भर रहना कब चींटी किसे कहती है ।।
दाना पानी लाओ कब चिड़िया किससे कहती है
अनाज मुझे दे जाओ ।।

कहाँ चाकरी अजगर करता किसका भरता पानी
बादल किससे कब कहता हैला दो भरकर पानी ।।

कीट-पतंगें जन्तु अनगिनतकिस पर निर्भर करते
अपना काम सभी हैं करतेखुद पर निर्भर रहते ।।

बी.एस.सी. भाग - 2

भैया ! बहन मैं तुम्हारी

आज अपने भाग्य के साथ
जीवन आँगन में अठखेलियाँ करती हूँ
सोचती शायद, मैं इसी की अधिकारी
भैया ! बहन मैं तुम्हारी ..

राहों में चलती जब कभी,
छेड़े कोई, ख्याल तुम्हारा आता है
साये की तरह रहे हरदम,
तुम्हारी कभी, धूप छा सा जाती है।
मैं वो बाला जो तुम्हारे स्नेह से वंचित
कभी-कभी उस प्यार के लिये तरसती हूँ
सच जीतकर भी सब, तुम बिन हारी,
भैया ! बहन मैं तुम्हारी ...

करती कभी नादानी या शरारतें
तो तुम मुझे समझाते या डॉटते
कुछ चीजों के लिये जब मचलती
एक स्नेह से यूँ झिड़का करते
उन झगड़ों और समझाइसों से अनजानी
अब हर परिस्थिति सेअकेले जूझती हूँ
मजबूत मन और कभी हिम्मत न हारी
भैया ! बहन मैं तुम्हारी ...

अगर जिद या अकड़ दिखाते कभी
कुछ पूरी करती तो कुछ पे झल्लाती
है मेरे पास भी अनमोल धरोहर,
ख्याल तुम्हारा ला हरदम इतराती,
बिखरी जो, सजी वो लगती जब जिन्दगी
भैया ! बहन मैं तुम्हारी ... ।

नेग में प्यार माँगती तुम्हारा,
रक्षा सूत्र तुम्हें बाँधती
अपनी उन खट्टी-मीठी बातों से
बार-बार तुम्हें यूँ ही उलझाती,
खैर, कोई बात नहीं, हर चेहरे के पीछे
अब चेहरा तुम्हारा ढूँढ लेती हूँ,
और करती जीवन की
अर्द्ध शिल्पकारी,
भैया ! बहन मैं तुम्हारी ... ।

नेग में प्यार माँगती तुम्हारा,
रक्षा सूत्र तुम्हें बाँधती
अपनी उन खट्टी-मीठी बातों से
बार-बार तुम्हें यूँ ही उलझाती,
खैर, कोई बात नहीं, हर चेहरे के पीछे
अब चेहरा तुम्हारा ढूँढ लेती हूँ,
और करती जीवन की
अर्द्ध शिल्पकारी,
भैया ! बहन मैं तुम्हारी ...

प्रत्यक्षतः तुम साथ नहीं हो पर,
फिर भी हो संग महसूस करती हूँ,
कहीं न कहीं तुम्हारे सान्निध्य से घिरी,
भैया ! बहन मैं तुम्हारी ...

- **अक्षय कुमार,**
बी.कॉम. भाग - तीन

बेटियाँ

संसार की बहूमूल्य माणिक्य रत्न है बेटियाँ
हर परिवार के सफलता का राज है बेटियाँ
हर समृद्धिशील संसार का आधार है बेटियाँ
पिता कि सबसे प्यारी बेटी है बेटियाँ
सुन्दरता पवित्रता की पहचान है बेटियाँ

हर घर की आदर्श शील बहूं है बेटियाँ
कभी डॉक्टर, वकील तो कभी इंजीनियर है बेटियाँ

किसी पति के सज्जनता का प्रमाण है बेटियाँ
किसी बच्चे की चंचलता का आधार है बेटियाँ,

इस दुषित वातावरण में सुगन्धित पुष्पों की माला है बेटियां
जब बनकर आयी बहू तब सुख, सम्पति, वैभव की स्वरूप है बेटियाँ

मत करो भेदभाव ये दुनिया, बूढ़े माँ-बाप का सहारा है बेटियाँ
चारो तरफ हो निराशा, तो आशा कि नई किरण है बेटियाँ

मतकर दामन खराब इनका, ऐ मुजलिमों
शक्ति स्वरूपा बन समुल नाश करने वाली है बेटियाँ

संभल जाओ मुंजलिमों रोक लो अपराधो को
वरना ऐसे अपराधियों के लिये साक्षात् यमराज है बेटियाँ

मनीष कुमार साहू
बी.ए. भाग - दो

''माँ''

एक छोटी-सी लब्ज़ होती है माँ ।
जो ममता बनकर जिन्दगी में आती है ।
सुनती है बच्चे की किलकारी खुश हो जाती है माँ ।
कीचड़ से उसने बच्चे को गले लगाकर खुश
हो जाती है माँ

सोचती है बच्चे कब बोलेंगे उसे माँ ।।
जिस दिन बच्चे बोले माँ बहुत खुश हो जाती है ।
रातों को प्यारी-प्यारी लोरियां सुनाती है ।।
तबियत खराब हो तो रातों को जगकर देखभाल करती है।

जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि होती है
माँ दुनिया के रंगों से मिलाती है माँ
प्यारी-प्यारी बातें सिखाती है माँ
जीवन हर राह पर साध देती है माँ

जीवन को प्यारी-प्यारी खुशियों से भर देती हैं
बहुत-बहुत प्यारी हैं माँ
कड़वा बोले फिर भी मीठा बोलती है माँ
जीवन का सबसे अमूल्य धन होती है माँ

भगवान ने भी बहुत सोचकर बनाया है माँ
दुखी रहो तो कैसे जान लेती है माँ
दुःख नष्ट कर खुशियाँ लाती है माँ
इतनी प्यारी सोच होती है माँ
जिन्दगी कभी किसी से छीने मत माँ
क्योंकि कभी किसी से छीने मत माँ
क्योंकि अधूरा होता है बचपन बिन माँ
भगवानों से भी बढ़कर होती है माँ

जीवन का पाठ सिखलाती है माँ
बचपन से बड़े तक सहारा देती है माँ
पता नहीं इतनी प्यारी क्यूँ होती है माँ
दुनिया में सबसे बढ़कर है मेरी माँ
दुनिया की सबसे बड़ी देन मिली है मुझे मेरी माँ

कु. रेखा धुर्वे,
एम.ए. द्वितीय सेम. (राजनीति विज्ञान)

बिखरी पड़ी जिन्दगी

1.
ऐसी जिन्दगी भी क्या, जिसे दूसरों के लिए जिए
मत पूछो उन्होंने कैसी बेदर्दी की मिसाल दी है
क्या उनके दिलों ने उफ तक नहीं की
कि बच्चों को माँ के आँचल से छुड़ा दिया

2.
आतंकवादियों का कहर, बच्चों की जिन्दगी
16 दिम्बर, आर्मी स्कूल, जहाँ खिलखिलाती थी जिन्दगी
बच्चों का चीखना माँ का बिलखना
नहीं भूल पायेंगे गुस्ताखियाँ

3.
माँ कहती है बीस साल लगा सँवारने में,
अपने जिगर के टुकड़े को निखारने में
मासूम तो थी मेरी जिन्दगी, जिसे दो सेकण्ड में उजाड़ दिया
क्या उनकी जिन्दगी सस्ती थी, जो लहू को पानी बना दिया

4.
वे बच्चे जिन्हें जिन्दगी से रुबरू होना था
जिन्हें सपनों के पंख लगा के अभी आसमाँ छूना था ।
लाखों अरमाँ थे उन माँ के दिलों में
जिन्हें ताबूत में बंद कर सुला दिया ।

5.
जिन्हें भविष्य बनाना था अपना, उन्हें चंद लम्हों में छुड़ा दिया
माँ का जिगर जिसे पत्थर का बना दिया
ना जाने क्या मकसद था उनका
कि इंसानियत को मार एक शैतान बना दिया
ऐसी जिन्दगी भी ....

कु. मनीषा पिस्दा
एम.एम. चतुर्थ सेमेस्टर (राजनीति शास्त्र)

मैं एक चिंगारी हूँ,जो देती नया सबक

1.
कुछ समय पहले की बात है ।
घर की देहलीज न पार की थी मैं
कही लज्जा के नाम पर चार दीवारों में जकड़ी गई थी
तो रूढ़िवादी सोच के आगे कहीं दबी पड़ी थी मैं ।
2.
चूल्हा चौका धर्म है । मेरा
हाँ कभी सुना था मैंने
कभी साड़ियों में लिपटी रही
पर्दे की आँच में गरमाई सी
घूँघट में दम तोड़ती थी मैं ।
क्या घुँघट में रहकर भी
बेदाग रह सकी मैं
3.
कभी बीच बाजार नीलाम हुई
तो कभी जिस्म फरोसी में ढकेली गई
मैं फिर भी चुप रही
खो कर पहचान अपनी
अपनी ही परछाइयों से घबराई सी
कहीं वंश के लिए कुचली गई
तो चीखती खामोशियों में साँस लेती रही मैं
4.
कहीं तो रीत को जीत मैं
पति संग सती भी हुई मैं
फिर भी मेरे लफ्ज़ खामोशियों में
तब्दील होते रहे ।
क्या किसी ने सुना?
सिहरन भरी चीख मेरी
5.
मैं वेदना के भंवर में जैसे उलझकर
जिन्दगी से जिन्दगी के लिए
जद्दोजहद करती रही मैं
वक्त करवट लेता रहा
मैं अपनी वजूद को अग्नि में दमन करती रही
मेरा सुख बदलती रही
लेकिन दर्द वही पुराना सा
मैं जीती रही ।
6.
एक दिन किया विचार
सुना मैं अपनी आत्मा की गोहार
कि मैं बनाऊँगी नई पहचान
बस भरने लगी नई उड़ान
लाँघ मैंने दहलीज को
तोड़ा चार दिवारों की बेड़ियों को
हर उड़ान में नई ऊँचाई को छुआ
हर कदम में नए अनुभवों को जीया
हर मोड़ में मिले आबरू के लुटेरे
कतरे मेरे परों को
कुरेद पुरानी जख्मों को
7.
न जाने कितनी दामनी ने दम तोड़ा
क्या जाने कितनी निर्भया को दम तोड़ना होगा ।
क्यूँ दूँ उस जमाने की दुहाई
जो फिर हरा करती पुरानी जख्मों को
जलती रही चौराहे पे मोमबत्तियाँ
टूटती रही जिन्दगी की लड़ियाँ
साँसों की डोर में खूब
गुंजती रही इंसाफ के बोल
8.
क्या इंसाफ की धरोहर
हो सकेगी मजबूत
अखिर कब तक नारी होती रहेगी मजबूर
कब तक नारी होती रहेगी मजबूर
कब तक अनसुनी होगी
वेदना की गोहार
क्या लौट जाऊँ घर की ओर ?

क्या बन कर रहूँ सावन की बदली?
क्या एकबार बरस कर थम जाऊँ
बन जाऊँ नीर भरी सावन की बदरी
9.
मैं रहूँ या न रहूँ
अब चीखेगी खामोशी मेरी
मैं तो बूँद में सिमट बैठी थी
मैं तो गंगा की निर्मल धारा हूँ ।
हूँ तो धारा पर सागर सी, गहरी हूँ
10.
अब न थमूँगी जो मैं, गरज-गरज बरसूँगी
मेरे आँचल में साँस लेते
ये नीला आसमा, मेरा पैगाम लिख जाएगा
मैं आधार संसार की
मुझे कब ये जहाँ पहचानेगा
कब महकेगी मेरी गरिमा
अब मैं तो ज्योति नहीं
जो बुझा दी जाऊँगी क्योंकि
मैं वो चिंगारी हूँ
जो हर कदम में देती नया सबक हूँ ।

- विद्याचन्द्रमणि पहीत
(एम.ए. द्वितीय सेमस्टर)

बोलो वन्देमातरम

दिल्ली हिन्दुस्तान का दिल है, हिन्दी है धड़कन ।
बोलो वन्देमातरम, वन्देमातरम् ।।

पंजाबी असमी बंगाली, गुजराती मद्रासी ।
ब्रज अवधी राजस्थानी, सब अलग-अलग भाषी।
उड़िया मराठी तेलगू बिहारी, कन्नड़ मलयालम ।।
बोलो वन्देमातरम् , वन्देमातरम् ।।

बुन्देली और खड़ी बोली, छत्तीसगढ़ी बघेली ।
बोली और प्रादेशिक भाषा, तेरी रही बनी सहेली ।।
सप्त सुरों की तान छेड़ हम, गावै सप्त सरगम ।।
बोलो वन्देमातरम, वन्देमातरम ।।

पद्मावत, बीजक, कुरुक्षेत्र, सुरसागर और रामायण ।
बाणभट्ट की आत्मकथा, गोदान, गबन, कृष्णायन ।
लोकायतन, साकेत, कामायनी, प्रिय प्रवास अनुपम ।।
बोलो वन्देमातरम वन्देमातरम् ।।

जायसी, मीरा, सूर, तुलसी, प्रेमचंद, शुक्ल, चतुर्वेदी महावीर ।
पंत, प्रसाद, निराला, वर्मा, भारतेन्दु, मैथिलीशरण, कबीर ।
अज्ञेय, मुक्तिबोध, मिश्र, भारती, बंकिम, टैगोर, प्रीतम ।।
बोलो वन्देमातरम् वंदेमातरम् ।।

नाटक गद्य पद्य निबंध है, सम्प्रेषण की भिन्न कथा ।
संस्मरण रूपक रेखाचित्र, गीत एकांकी लघु कथा ।
मुक्तक खंड और महाकाव्य है, वीर करूण संगम ।।
बोलो वंदेमातरम, वन्देमातरम् ।।

वीरों की गाथा भक्ति भावना, श्रृंगारिक है रीतिकाल ।
भारतेन्दु द्विवेदी छाया से, भरा आधुनिक काल ।
प्रगति और प्रयोगवाद में, गाये भारतम् ।।
बोलो वन्देमातरम वन्देमातरम् ।।

संधि समास कृदन्त और तद्धित, अलंकार रस छंद ।
उपसर्ग प्रत्यय उक्ति मुहावरों से, परिष्कृत है संबंध ।
शक्ति, रीति गुणशब्द भेद है, भाषा व्याकरणम् ।।
बोलो वन्देमातरम वन्देमातरम् ।।

साहित्य धरा पर हिन्दी की छबि, अपनी अलग निराली है
विस्तृत काव्य कलेवर है, लगती सबको प्यारी है ।
हिन्दी की कोई सानी नहीं है, और न किसी मे ंदम ।।
बोलो वन्देमातरम, वन्देमातर्म ।

- अंकिता पटेल,
एम.एस.सी. चतुर्थ सेमेस्टर (गणित)

राहुल कुमावत

दो कविताएँ

1. प्रकृति की पुकार

प्रकृति करे पुकार, हे मानव तू नित कर सुधार
मेरी गोद में ही तुमने जीवन की बगिया महकाई
फिर काहे को प्रकृति पर अपनी आग सुलगाई

अपने ही शानौ-शौकत के लिए, करते हो, प्रकृति का नुकसान
तो मत करना इन्कार, जब हो जाये सब कब्रिस्तान
प्रकृति की पुकार सुन और मत बना इसे रेगिस्तान

प्रकृति ने तो माँ बनकर यह फर्ज निभाया
पर क्यों पुत्र का ढोंग रचाकर इसका ही गला दबाया
प्रकृति करे पुकार, हे मानव तू नित कर सुधार

अपना सब कुछ देकर भी, तुझे ही संपन्न बनाया
फिर भी हाथ में ले तलवार, इसका ही शीश उड़ाया
प्रकृति करे पुकार, हे मानव तू नित कर सुधार

आज यह प्रकृति करे पुकार, सुन ले मानव यह झनकार
जान बूझकर ही क्यों करते हो अपने पेट पे वार
प्रकृति करें पुकार हे मानव तू नित कर सुधार

2. स्कूल की वो खिड़की

स्कूल की वो खिड़की
बाहर का वह
संसार
मेरी निगाहें देखा करती
उस बचपन के आनन्द को
जो बिन परवाह मस्ताना रहता
चढ़ता चारदीवारी को ।।
मेरी निगाहें आसमान में
कलरव करते पंक्षी को जाती
यूँ उड़ते देख उन्हें मचल उठता
मेरा मन भी उड़ जाने को
मेरी निगाहें देखे
बारिश के उस पानी को
जो आसमान से गिरता रहता
टिप-टिप मोती दानों सा
मेरी निगाहें देखे
वृद्धा की उस आशा को
जो गुजारे के खातिर बेचे
मस्त खिलौनें बच्चों को ।

(बी.ए. भाग - एक)

अनजान सफर अनजान डगर

अनजान सफर अनजान डगर
मैं तो बस चलता रहता हूँ ।
नदी की लहरें बहती जैसे,
मिलन पूरा ही सागर में ।

हो रूप निखरता जो यौवन
मैं बूँद गिरूँ जो गागर में ।
मैं नाव बन बहता चला,
जब ना मिले कोई किनारा हो ।

केकीरव के मधुर गुंजन से,
मिला प्राण रूपी सहारा हो ।
वो सूर्य किरण की धारा में,
मैं बस बहता रहता हूँ ...

अनजान सफर अनजान डगर ....

ये पेड़ जितने ऊँचे हैं,
मेरी रहें भी उतनी ऊँची है
कोलाहल का हठ मुझे
प्रतिकार प्रतिपल करता है ।

है उपकार अनगिनत है, मुझमें
है समय है उसे चुकाने का
है समय नहीं अब खोने का
है समय नहीं अब सोने का

गिर-गिर के हर बार....
मैं संभलता रहता हूँ
अनजान सफर अनजान डगर ...
मैं तो बस चलता हूँ ।

लालेन्द्र कुमार देशमुख

छत्तीसगढ़ी कविताएँ

दो गीत : घेवरचंद पारकर

1. उठ संगवारी बिहनिया होवत हे

चिरई-चिरगुन (मन) चह चहचहावत हे, कुकरा घलो
भाड़ी म बासत हे, रतिहा बेरा बैरी होगे
त सुरूज ह मुचमुचावत हे, लोरी सुनाइस चँदैनी,
त पवन ह लहरावत हे,
उठ संगवारी बिहनिया होवत हे।। ...1....
खेल कूद के, अउ पढ़े ल जाये के बेरा होवत हे।
उठ संगवारी बिहनिया होवत हे।।
ददा घलो चिल्लावत हे,
डेना ला धर के उठावत हे,
सब नंगरिया मनके, खेत जायेके बेरा होवत हे..।
उठ संगवारी बिहनीया होवत हे ... 2.....
दाई घलो बड़बड़ावत हे,
(गली खोरबाहिर ह बाहरत हे)
चूल्हा के राख निकालत हे
घरद्वार लिपत बाहरत हे,
चहा पानी के पिया के बेरा होवत हे,
उठ संगवारी बिहनीया होवत हे । .....3 ....

2. छत्तीसगढ़ के किसान

नागर बइला ला धरके भइया ,जावत हे किसान
लोग लइका के नइयेगा, कोनो ल धियान
तोप बंदुक ल धरके भइया, जावत हे जवान
बेकसूर ह मर जाथे, नइये गा ज्ञान ।।
सीना तान के ऊँचा करथे
होथे ओकर मान
गाँव में सबो झन करथे
ओकर गा सम्मान
सुर दानव कस लड़त हावे
लइका अऊ सियान
खुशी के मारे नाचत हावे
बुढ़वा अऊ जवान
सुनले भइया गोठ ला मोर
गावत हाँववं गान
मोर देश के तैहा भइया
ऊँचा करबे नाम
खेत खार जोत के भइया
आवत हे किसान

बी. काम. भाग - दो

चिनहारी मोर गवागे

जिहां मोला भूईया के भगवान कही के
जम्मो झन आरती उतारे ।
मुहु मा कऊरा लेगे के पहली
धरती के चरण पखारे ।।
अब के मनखे स्वार्थी होगे
मंद मऊहा मा भूलागे ।
बिन मुहु कान धोय
अपन भोभस भरन लागे,
नइ हे संगवारी चिनहारी मोर गवागे ।।

मुंदरहा के बेरा मा दाई
गोरसी ला बारे ।
बिड़ी पियावत बइठे बबा
सबो ला जोहार पारे
अब का मुंदरहा कहीबे संगी
बेरा चढ़ के टगांगे ।
घर के डऊकी उठे नइ हे
सबो बुता बोहागे,
नई हे संगवारी चिनहारी मोर गवांगे ।।

धनहा अऊ डोली मा
बइला के घंटी सुनाय।
हररे हररे बोले नगरीहा
विधुन मन मा गाय
अब का पाबे धनहा डोली
सबो ला बेच खागे ।
पहीने बर पनही नही
कुकुर कर लुलवागे,
नई हे संगवारी चिनहारी मोर गवांगे ।।

आनी बानी के आमा अमली
रूख राई मा लटलटाय ।
बइठ के सुघ्घर बोनी बाबू
घरगुदीया बनाय
अब का कहीबे आमा अमली
रूख राई नजर नई आये ।
बइठे के बेरा नइ हे
पोथी पुरान मा भुलाय,
नई हे संगवारी चिनहारी मोर गंवागे ।।

महतारी के कोरा मा बइठे
लोरी सुनत सुत जाय ।
आनी बानी के किस्सा कहानी
डोकरी दाई सुनाय ।।

अब का महतारी के कोरा
जीत पेट मा तोपाय ।
लोरी एमन अब का सुनाही
जांगर चले नई जाय,
नई हे संगवारी चिनहारी मोर गंवागे ।।

- हरिराम पारकर
बीए.-भाग -तीन

कलयुग अमागे

सावन में सूखा पड़गे, अऊ फागुन माँ गिरथे करा
खेत में फसल उग जाथे, अऊ जंगल मा उड़थे धुर्रा
बेसरम वो मान बड़गे,
सिरतोन में गा, कलयुग अमागे ।।

सगा सोधर के स्वागत मा,
पहली बने शरबत अऊ चाय पानी
अब कहाँ के भेंट पाबे,
अब आगु ले आथे, मौहा रस के पानी
नेवता होथे मछरी-कुकरी के,
अरसा सुहारी हर नंदागे
सिरतोन में गा कलयुग अमागे ।।

खाँसी-खोकरी के दवाई
पहली राहे जीरा अऊ धनिया
बड़े-बड़े अस्पताल खुलगे
नई दिखे बइद अऊ गुनिया
किसम-किसम के बीमारी आगे
सिरतोन में गा कलयुग अमागे ।।

पहीली पहने मोटहा धोती
अऊ बारा हाथ के लुगरा
अब तो आगे रिंगी-चिंगी
आधा तोपाए हे, ता आधा उघरा
फैसन मा दुनिया लोभागे
सिरतोन में गा, कलयुग अमागे ।।

- गजेन्द्र कुमार गढ़कर
बीए. भाग - एक

सुरता के मोटरा

हमरो सुरता के मोटरा ला, जोर लेबे जी,
कभु सुघा ह जनाही, मोटरा छोर लेबे जी ।

जिन्दगी के रीत हावय आना अऊ जाना
एक्के रुख के आवन, जम्मो डारा अऊ पाना ।

ओसरी पानी जाना है, अगोर लेबे जी
हमरो सुरता के मोटरा ला जोर लेबेजी

कतको अकन दुख सुख ल, संगे म तापेन
हाँसत-हाँसत कौरा ल बाँटेन ।

हमरो पिरीत ल हिरदे म, अलहोर लेबे जी
हमरो सुरता के मोटरा ल ...

सुन्ना हो जाही हमरो, अंगना-दुआरी,
तोर असन करही कोन, बगिया के रखवारी

बखत-बखत आ के, मया घोर लेबे जी,
हमरो सुरता के मोटरा ला, जोर लेबे जी ।
हमरो सुरता के मोटरा ला जोर लेबे जी

- हसीना देशमुख
एम.एससी. तृतीय सेमेस्टर (प्राणी शास्त्र)

डॉ. प्रशान्त श्रीवास्तव

उपलब्धियों के सोपान पार करता हमारा महाविद्यालय

प्रतिवर्ष की भांति सत्र 2014-15 भी हमारे महाविद्यालय के लिये अनेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की उपलब्धियों की सौगात लेकर आया। शैक्षणिक, सांस्कृतिक, शोध एवं अन्य पाठ्येतर गतिविधियों आदि सभी क्षेत्रों में महाविद्यालय ने अपनी दक्षता सिद्ध की है। राष्ट्रीय स्तर पर भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा नेशनल एजुकेशन क्वालिफिकेशन फ्रेमवर्क तैयार करने हेतु चयनित देश के 20 प्रतिष्ठित शिक्षा संस्थानों में हमारे महाविद्यालय का चयन गौरव का विषय है। समूचे मध्य भारत से केवल हमारे महाविद्यालय का चयन किया गया। इसी प्रकार यूजीसी की महत्वाकांक्षी योजना सीपीई फेस-3 में भी समूचे छत्तीसगढ़ प्रदेश से केवल हमारे महाविद्यालय का चयन हुआ। इसके अंतर्गत यूजीसी द्वारा महाविद्यालय को आबंटित 1.20 करोड़ रूपये राशि से महाविद्यालय की शोध प्रयोगशाला, अकादमिक उन्नयन, शैक्षणिक गतिविधियों एवं अधोसंरचना विकास जैसे कार्य संपादित किये जायेगें। राष्ट्रीय स्तर की अन्य उपलब्धि के रूप में भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा विज्ञान के लोकव्यापीकरण एवं जनता में वैज्ञानिक चेतना के प्रसार के उद्देश्य से संचालित संस्था 'विज्ञान प्रसार' के निदेशक डॉ. आर. गोपीचन्द्रन का महाविद्यालय में आमंत्रित व्याख्यान हुआ।

महाविद्यालय के भौतिकी विभाग के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, भुवनेश्वर में आयोजित 'रोबो एंड एन्ड्रो हंक 2015' में देश के सभी आईआईटी के विद्यार्थियों की लगभग 20 से अधिक टीमों के बीच सराहनीय प्रदर्शन किया। रसायन शास्त्र विभाग की शोध छात्रा भावना जैन को यूजीसी की पोस्ट डाक्टरेट फेलोशिप प्राप्त हुई। रसायन विभाग की ही स्नातकोत्तर छात्रा कु. स्वाति साहू ने दिसंबर 2014 में फरीदाबाद (हरियाणा) में आयोजित बाको इंडिया कैडेट एंड सीनियर नेशनल किक बॉक्सिंग प्रतियोगिता में कांस्य पदक प्राप्त किया। रसायन विभाग के शोध छात्र गौतमशील थूल का चयन दिसंबर 2014 में इंडियन इंस्टियूट ऑफ केमिकल टेक्नालॉजी, हैदराबाद हेतु हुआ। सांस्कृतिक क्षेत्र में महाविद्यालय की बीएससी भाग तीन की छात्रा कु. तनुश्री सेन गुप्ता का चयन बरहामपुर उड़ीसा में संपन्न मध्य क्षेत्रीय युवा उत्सव में पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर का प्रतिनिधित्व करने हेतु हुआ। अंग्रेजी विभाग की शोध छात्रा कु. इंद्राणी बोरकर को यूजीसी की राजीव गांधी नेशनल फेलोशिप प्राप्त हुई।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर रसायन विभाग के शोध छात्र हितेन्द्र कुमार लाऊत्रे का चयन जर्मनी स्थित कोलीफार्म डेपिकडॉफ नामक संस्था में सीनियर साइंटिस्ट के पद पर हुआ। महाविद्यालय के प्राध्यापकों डॉ. पद्मावती (गणित), डॉ. एम ए सिद्धीकी (गणित), डॉ. राकेश तिवारी (गणित), डॉ. प्रशान्त श्रीवास्तव (भूगर्भशास्त्र), डॉ. अनुपमा अस्थाना (रसायन) डॉ. अजय सिंह (रसायन), डॉ. अलका तिवारी (रसायन), डॉ. सुनीता मैथ्यू (रसायन), डॉ. अनिल कुमार (प्राणीशास्त्र), डॉ. प्रज्ञा कुलकर्णी (वनस्पति शास्त्र), डॉ. जगजीत कौर सलूजा (भौतिक शास्त्र) आदि को अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं के संपादक मंडल/रेफरी के रूप में शामिल किया गया। सत्र 2014-15 में महाविद्यालय के प्राध्यापकों एवं शोधार्थियों द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर 198 तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 93 शोधपत्र प्रकाशित किये गये। महाविद्यालय के प्राध्यापकों/शोधार्थियों को 4 मेजर तथा 14 माइनर रिसर्च प्रोजेक्ट भी राष्ट्रीय स्तर की एजेंसियों यूजीसी, डीएसटी, सीकॉस्ट द्वारा स्वीकृत किये गये।

सत्र 2014-15 में महाविद्यालय में अनेक रचनात्मक गतिविधियों का आयोजन हुआ। इनमें नेशनल हायर एजुकेशनल क्वालिफिकेशन फ्रेमवर्क निर्माण के दौरान शिक्षाविदों, भूतपूर्व छात्रों, मीडिया जगत के प्रतिनिधियों, प्राध्यापकों, पालकों, उद्यमियों आदि की कार्यशाला उल्लेखनीय है। इस आयोजन के दौरान प्रतिभागियों ने शिक्षा प्रणाली से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सुझाव दिये।

राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (रूसा) के अंतर्गत महाविद्यालय में उच्च शिक्षा विभाग छत्तीसगढ़ शासन द्वारा प्रायोजित पांच कार्यशालाएं आयोजित की गई। दिनांक 28 अप्रैल 2015, 8 मई 2015, 15 मई 2015, 20 जून 2015 तथा 25 जून 2015 को आयोजित इन कार्यशालाओं में दुर्ग जिले के समस्त शासकीय, शासकीय अनुदान प्राप्त एवं निजी महाविद्यालयों के प्राचार्यों, आईक्यूएसी समन्वयकों एवं वरिष्ठ प्राध्यापकों ने हिस्सा लिया। शिक्षण एवं मूल्यांकन की गुणवत्ता वृद्धि, उच्च शिक्षा

में क्षमता विकास, महाविद्यालय स्तर के मूलभूत आंकड़ों का संग्रहण, संधारण एवं प्रतिवेदन तैयार करना, परीक्षा परिणामों की समीक्षा तथा च्वायस बेस्ट क्रेडिट सिस्टम', दुर्ग जिले में उच्च शिक्षा के विस्तार एवं गुणवत्ता सुधार हेतु आगामी तीन वर्षों का रोड मैप तैयार करने, उच्च शिक्षा की गुणवत्ता वृद्धि में संचार माध्यमों की भूमिका आदि विषयों पर आयोजित इन कार्यशालाओं में छत्तीसगढ़ राज्य उच्च शिक्षा परिषद के सदस्य डॉ. एन.पी. दीक्षित, शिक्षाविद प्रोफेसर डी.एन.शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार श्री रमेश नैयर, आदि ने भी अपनी गरिमामयी उपस्थिति एवं उद्‌बोधन से प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया। उपरोक्त विषयों पर आधारित पावर पाइंट प्रस्तुतिकरण देने वालों में महाविद्यालय आईक्यूएसी के सदस्य डॉ. प्रशान्त श्रीवास्तव, डॉ. प्रज्ञा कुलकर्णी एवं डॉ. जयप्रकाश साव, डॉ. श्रीनिवास देशमुख आदि शामिल थे। इन कार्यशालाओं में निकले निष्कर्षों का एक प्रतिवेदन के रूप में उच्चशिक्षा विभाग छत्तीसगढ़ शासन को प्रेषित किया जायेगा।

महाविद्यालय में आयोजित अन्य उल्लेखनीय गतिविधियों में आईक्यूएसी एवं भूगर्भशास्त्र विभाग के संयुक्त तत्वावधान में ताइवान के प्रोफेसर ग्रेग शैलनट का आमंत्रित व्याख्यान, नवप्रवेशित विद्यार्थियों हेतु इंडक्शन कार्यक्रम, नये अध्यापकों का उन्मुखीकरण कार्यक्रम, होल्कर साइंस कालेज इंदौर के प्रोफेसर शैलेश चौरे का आमंत्रित व्याख्यान, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन, वाणिज्य प्रयोगशाला की स्थापना, गणित विभाग में आई.आई.आई.टी. जबलपुर के निदेशक डॉ. अपराजिता ओझा का आमंत्रित व्याख्यान, गणित ओलंपियाड एवं कार्यशाला का आयोजिन, हिंदी विभाग द्वारा छत्तीसगढ़ लोक संस्कृति पर डॉ. गोरेलाल चंदेल एवं डॉ. जीवन यदु का आमंत्रित व्याख्यान प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त वनस्पति शास्त्र विभाग में डॉ. सुमन कुमार मिश्रा, डॉ. उत्कर्ष घाटे तथा प्रो. पीसी पंडा का भी आमंत्रित व्याख्यान आयोजित किया गया। प्रख्यात कथाकार विश्वेश्वर द्वारा हिंदी परिषद का उद्‌घाटन किया गया। हिन्दी विभाग में प्रेमचंद जयंती भी आयोजित की गई।

महाविद्यालय के छात्रसंघ कार्यालय का उद्‌घाटन एवं सामाजिक आरोग्य विषय पर डॉ. प्रवीण शर्मा का व्याख्यान आयोजित किया गया। कामर्स विभाग में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास एवं रोजगार मार्गदर्शन पर केंद्रित तेजस कैरियर गाइंडेस, कैरियर लांचर भिलाई, ई ट्रेडिंग अकादमी भिलाई के विशेषज्ञों के आमंत्रित व्याख्यान आयोजित हुए। राजनीति शास्त्र परिषद का उद्‌घाटन सुराना महाविद्यालय के प्रो. डी.एन. सूर्यवंशी ने किया। 20 अक्टूबर 2014 को आयोजित गोष्ठी में अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश द्वय श्रीयुत श्री नारायण तथा श्री आर.के. बर्मन ने न्यायिक सक्रियता एवं न्यायिक दायित्व पर व्याख्यान दिया। भूगोल विभाग द्वारा परिषद के उद्‌घाटन अवसर पर बस्तर विश्वविद्यालय की पूर्व कुलपति डॉ. जयलक्ष्मी ठाकुर का आमंत्रित व्याख्यान हुआ।

12 से 14 जनवरी 2015 तक महाविद्यालय में खेल समारोह आयोजित हुआ। बड़ी संख्या में खिलाड़ी छात्र-छात्राओं ने विभिन्न खेल स्पर्धाओं में हिस्सा लेकर पुरस्कार जीते। इस अवसर पर राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने वाले विद्यार्थियों को भी स्मृति चिन्ह महाविद्यालय के प्राचार्य द्वारा प्रदान किये गये।

महाविद्यालय के प्राणीशास्त्र विभाग एवं जूलाजिकल सोसायटी ऑफ छत्तीसगढ़ के संयुक्त तत्वाधान में मानव कल्याण हेतु जीवविज्ञान की संभावनाएं-छत्तीसगढ़ के संदर्भ में विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी (7 एवं 8 फरवरी 15) को आयोजित की गई। संगोष्ठी का उद्‌घाटन भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग के प्रमुख सलाहकार तथा महाराष्ट्र वि.वि. के पूर्व कुलपति प्रो. अरूण एस निनावे ने किया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर के कुलपति डॉ. एस.के. पाण्डेय थे। जुलाजिकल सोसायटी ऑफ इंडिया के अध्यक्ष प्रो. बी.एन. पाण्डेय भी इस अवसर पर उपस्थित थे। सेमीनार के दौरान कुल 12 आमंत्रित व्याख्यान, 86 शोधपत्रों का मौखिक प्रस्तुतिकरण तथा 42 पोस्टर प्रस्तुत किये गये। छत्तीसगढ़ प्राणीशास्त्र सोसायटी भी गठित की गई।

महाविद्यालय के सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग द्वारा पशु चिकित्सा महाविद्यालय अंजोरा के माइक्रोबायलाजी विभाग के प्रमुख डॉ. एस.डी. हीरपुरकर ने गवैकसीन एवं टीकाकरण पद्धतियां विषय पर व्याख्यान दिया। महाविद्यालय के इतिहास विभाग द्वारा 23 जनवरी 15 से 2 फरवरी 15 तक प्रतिकृति निर्माण कार्यशाला आयोजित की गई। छत्तीसगढ़ राज्य के संस्कृति विभाग के सहयोग से आयोजित इस दस दिवसीय कार्यशाला में 80 विद्यार्थियों तथा 10 प्राध्यापकों एवं 4 कर्मचारियों ने हिस्सा लिया। सरदार वल्लभ भाई पटेल की 139 वीं जयंती महाविद्यालय सेमीनार हाल में धूमधाम से मनाई गई। सरदार पटेल के जीवन पर आधारित लघु फिल्म की प्रस्तुति के अलावा अनेक वक्ताओं ने सरदार पटेल के जीवन पर प्रकाश डाला।

सोशल मीडिया के रचनात्मक अथवा नकारात्मक उपयोग के लिए इन संसाधनों का उपयोग करने वाले स्वयं

जिम्मेदार हैं। ये निष्कर्ष महाविद्यालय में आयोजित स्वर्गीय निर्मल चन्द्र पाठक स्मृति अंतमर्हाविद्यालयीन वाद-विवाद प्रतियोगिता में निकल कर सामने आया। इस प्रतियोगिता में पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर तथा छत्तीसगढ़ स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय की लगभग 35 टीमों ने हिस्सा लिया। उच्च शिक्षा में गुणवत्ता विकास के उद्देश्य गठित दुर्ग जिला क्वालिटी सर्किल की बैठक भी महाविद्यालय में आयोजित की गई। महाविद्यालय में साहित्य समिति के तत्वाधान में स्व. विश्वनाथ यादव तामस्कर की पुण्य तिथि पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। महाविद्यालय आईक्यूएसी तथा अंग्रेजी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में अंग्रेजी भाषा की संप्रेक्षण क्षमता बढ़ाने हेतु 10 दिवसीय कार्यशाला भी आयोजित की गई। डॉ. नीरजा रानी पाठक के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यशाला में 16 स्नातकोत्तर विभागों के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। अंग्रेजी विभाग द्वारा ही विद्यार्थियों हेतु 'व्यक्तित्व विकास'पर आधारित कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुर उड़ीसा के विजिटिंग प्रोफेसर चितरंजन कर तथा डॉ. सोमाली गुप्ता ने विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिया।

'राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान' के अंतर्गत 2 अक्टूबर 2014 को महाविद्यालय परिसर की साफ-सफाई का अभियान चलाया गया। समूचे महाविद्यालय परिवार ने इस अभियान में उत्साहपूर्वक सहभागिता की। मतदाता जागरूकता अभियान (स्वीप) के अंतर्गत महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने विभिन्न सार्वजनिक स्थलों पर नुक्कड़ नाटक का प्रदर्शन किया। जनवरी 2015 में राष्ट्रीय युवा सप्ताह के अंतर्गत महाविद्यालय में जिला स्तरीय भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। इप्टा भिलाई द्वारा आयोजित चतुर्थ अंतर्महाविद्यालयीन नाटय स्पर्धा में महाविद्यालय की प्रस्तुति को जूरी अवार्ड प्राप्त हुआ। 22 जनवरी 2015 को महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. सुशील चन्द्र तिवारी ने समूचे महाविद्यालय परिवार को पॉलीथीन का प्रयोग न करने संबंधी शपथ दिलाई। भूगर्भशास्त्र के विद्यार्थियों ने राजस्थान, म.प्र. उत्तरप्रदेश आदि स्थानों पर विभिन्न खदानों, प्रतिष्ठानों, संयंत्रों का भ्रमण कर शैलों के नमूने एकत्रित किये।

एकेडैमिक स्टॉफ कालेज रायपुर में आयोजित विभिन्न ओरियंटेशन रिफ्रेशर कोर्स में महाविद्यालय के प्राध्यापकों डॉ. श्रीनिवास देशमुख, डॉ. जयप्रकाश साव व डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव ने विषय विशेषज्ञ के रूप में व्याख्यान दिया। रूसा, नैक मूल्यांकन तथा यूजीसी की विभिन्न योजनाओं से अवगत कराने हेतु महाविद्यालय आईक्यूएसी के डॉ. नीरजा रानी पाठक, डॉ. प्रज्ञा कुलकर्णी तथा डॉ. प्रशान्त श्रीवास्तव ने छत्तीसगढ़ के विभिन्न महाविद्यालयों में आमंत्रित व्याख्यान दिये। इनके अतिरिक्त महाविद्यालय के अन्य प्राध्यापकों डॉ. रंजना श्रीवास्तव (वनस्पति शास्त्र), डॉ. के. आई टोप्पो (वनस्पति शास्त्र), डॉ. श्रद्धा चंद्राकर (हिन्दी), डॉ. जय प्रकाश साव (हिन्दी), डॉ. कृष्णा चटर्जी (हिन्दी), डॉ. वेदवती मंडावी (राजनीति शास्त्र), डॉ. अनिल कुमार (प्राणीशास्त्र), डॉ. के. पद्मावती (अर्थशास्त्र), डॉ. अंजली अवधिया (भौतिकी), डॉ. जगजीत कौर सलूजा (भौतिकी) डॉ. ओ.पी. गुप्ता (वाणिज्य), डॉ. अनुपमा अस्थाना (रसायन), डॉ. अजय सिंह (रसायन) ने भी विभिन्न संस्थाओं में आमंत्रित व्याख्यान दिये।

महाविद्यालय के 14 स्नातकोत्तर विभाग पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर द्वारा मान्यता प्राप्त शोध केन्द्र हैं। सत्र 2014-15 में इन 14 शोध केन्द्रों में 155 शोधार्थी शोधकार्य में संलग्न हैं। सत्र 2014-15 में महाविद्यालय के 39 शोधार्थियों को पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई। महाविद्यालय के प्राध्यापकों डॉ. के. आई टोप्पो, डॉ. दिव्या कुमुदनी मिंज, डॉ. गोवर्धन सिंह ठाकुर, डॉ. शुभा गुप्ता, डॉ. शाहीन गनी को पीएचडी की उपाधि प्राप्त हुई।

इस प्रकार प्रत्येक क्षेत्र में महाविद्यालय ने अपनी दक्षता सिद्ध की है। हमारा यह महाविद्यालय प्रगति के पथ पर इसी प्रकार अग्रसर रहे यही हम सबकी शुभकामना है ।

श्री संजय बोहरा जनभागीदारी समिति के नये अध्यक्ष मनोनीत

श्री संजय बोहरा को शासन द्वारा महाविद्यालय की जनभागीदारी समिति का नया अध्यक्ष मनोनीत किया गया है। उन्होंने अपना पदभार ग्रहण किया तथा जनभागीदारी समिति की बैठक लेकर महाविद्यालय के विकास की योजनाओं पर विचार-विमर्श किया।